वर्ष 28 | निज श्रावण | अगस्त-2023 | अंक 8 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982

पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एन.डी. 08/2021-2023

मूल्य 10/- रुपये

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

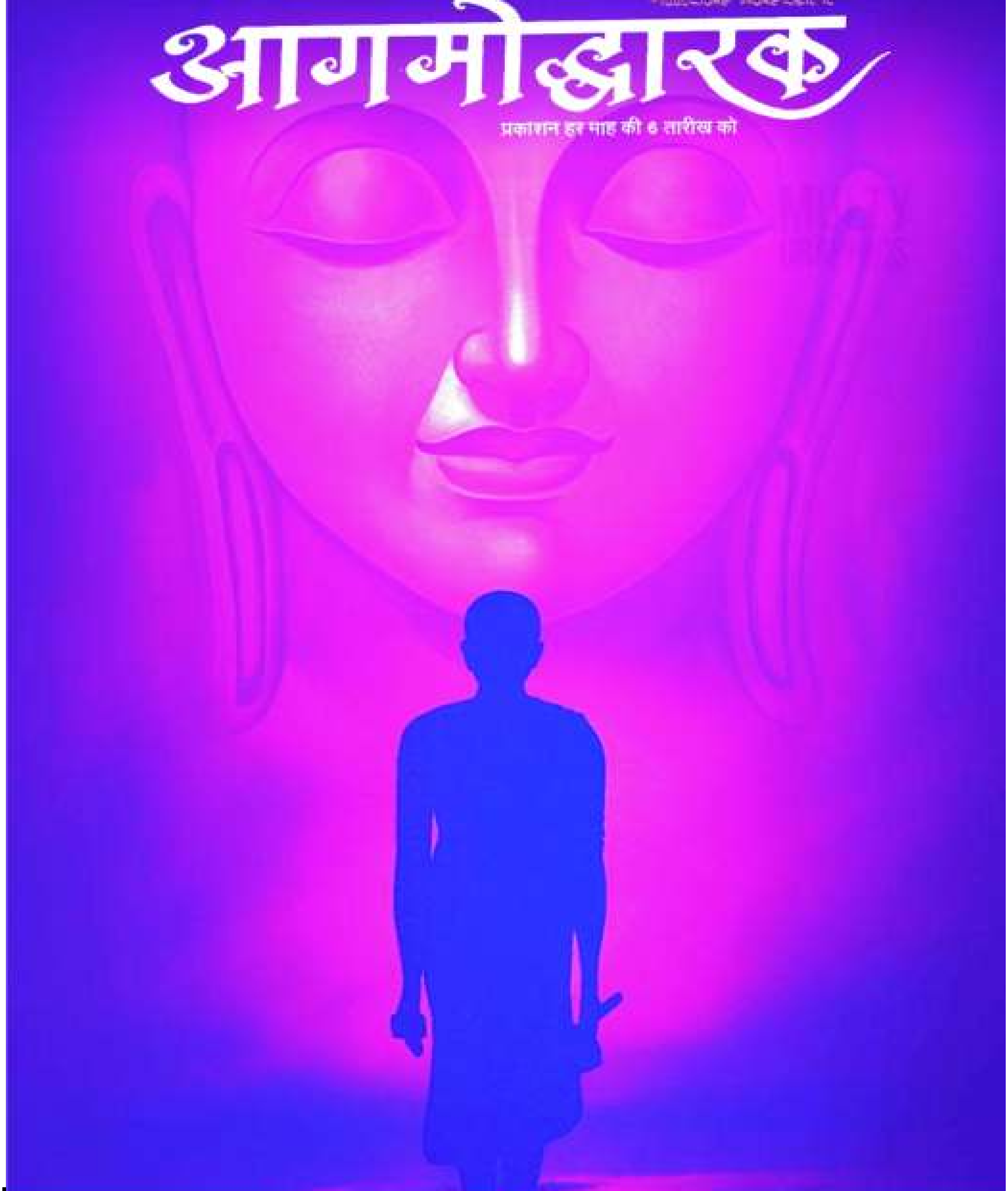

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक
डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय
डॉ.सुभाष जैन
46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897
1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय
प्रफुल्लकुमार जैन "पप्पू"
1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

आज धर्म अंधों की हथेली पर आ गया है। राजनीति की हथेली पर धर्म की दीए का होना निरर्थक है। इसे तो किसी निर्लिप्त संत की हथेली पर ही होना चाहिए, ताकि प्राणी मात्र का मंगल हो। धर्म आत्म कल्याणकारी और परोपकारी दोनों है। धर्म के इस मर्म को जब तक हम नहीं जानेंगे, उसका राष्ट्र हित में उपयोग नहीं कर सकेंगे।

दिव्य आर्शीवाददाता
प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.
मार्गदर्शक एवं प्रेरक
परम पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन
अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

जीवाऽजीवा य बन्धो य, पुण्णं पावाऽसवो तहा।
संवरो निज्जरा मोक्खो, संतेए तहिया नव॥

1- जीव, 2- अजीव, 3- बंध, 4- पुण्य, 5- पाप, 6- आश्रव, 7-संवर, 8- निर्जरा और 9- मोक्ष- ये नौ तत्व हैं। - **उत्तरा. सूत्र, 28.14**

पाथेय *व्यक्ति के अपने अन्दर ही मौजूद है सब बाधाएं। उसकी अपनी ही प्रकृति में निहित है समस्त कठिनाईयाँ, अज्ञान और अंधकार। यदि हम कर लें पूरी पृथ्वी का भ्रमण एवं अपनी आदतों एवं अभ्यासों को तोड़े बिना बिताएँ तपमय जीवन, अथवा किसी घोर एकान्त में स्वयं को कर दें वर्जित, तो भी यदि, भ्रम भ्रान्ति की कोई एक गांठ हमें रखती है पृथक तुम्हारी चेतना एवं प्रकाश से यदि कोई अहंग्रस्त आसक्ति हमें रखती है विलग, तुम्हारे असीम प्रेममय सान्निध्य से तो हे प्रभु ! हम नहीं कर सकते तुम्हें समग्रता से उपलब्ध। हमारी परिस्थितियां न्यूनाधिक हो सकती है अनुकूल प्रतिकूल किन्तु उनके प्रति हमारा मनोभाव ही है अधिक महत्वपूर्ण। जो हमें सिखाता है कि किस मात्रा में हम उनसे हो सकते है लाभान्वित हे प्रभु ! मेरी प्रार्थना है कि पूर्ण सचेत एवं सशक्त होकर सभी परिस्थितियों पर रख सकूं अधिकार एवं नियंत्रण। और मैं सीख सकूं कि विभिन्न दंगों से कार्य करो ताकि मैं होकर तुम्हारी उच्च चेतना की पद्धति से संयुक्त तुम्हारे प्रेम में, प्रेम के द्वारा और प्रेम के लिए ही कार्य कर सकूं। प्रभु मेरी प्रार्थना है कि अधिकाधिक स्वच्छ एवं प्रगाढ़ रुप से तुम्हारा प्रकाश, सौन्दर्य एवं सत्य पृथ्वी पर हो जाए प्रकट एवं अर्विभूत।*

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-28 निज श्रावण अगस्त 2023 अंक-8

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3

2- विषय सूची 4

3- जिन प्रतिमा : दान-शील-तप और भावना धर्म - (सम्पादकीय)- डॉ. सुभाष जैन महान जीवात्मा के पूर्वभव, धर्म का प्रचार आचार से 5-6

4- पाप की सजा भारी-प. पू. आचार्य श्रीअरुणविजयजी म.सा., ममता 7-8

5- भारतीय तिरंगे का इतिहास.... 9-10

6- सूरत-गोपीपुरा एक पावन भूमि 11

7- जीवन में स्कूल का मुख नहीं देखा पर आज चार भाषा का ज्ञान है...!, सिंहगढ़, सामायिक वक्त की कीमत 12

8- बेटे के वियोग में गीत बनाया, बन गया प्रेमियों का सबसे अमर गाना 13

9- सोचो-जागो-उठो-जिनशासन की सेवा और रक्षा में कूद पड़ो.... महेन्द्र सी, कबदी, 10 बोल दुर्लभ.... 14

10-संस्कार : जन्म-जन्मान्तरों तक साथ चलते है 15-16

11-अनुसरण महामानवों का करें.... 17-18

12-अष्टमहाप्रतिहार्य, 34 अतिशय के धारी भगवान श्री महावीर स्वामी- शांतिलाल सगरावत, श्री निस्यावलिका सूत्र 19

13-हमारी साहित्यक विरासत- आचार्य विजय मुनिचंद सूरी, फूल सफेद ही थे 20

14-विश्वरत्न : जल्दी उठ मेरे पास समय नहीं है ! विश्वरत्नसागर सूरीश्वर 21-22

15-उठो और जागो और तब तक रुको नहीं जब तक की तुम अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेते- सिया पोखरणा, क्रोधी 23-24

16-नमो लोए सव्व साहूणं-आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी म., भारतीय वीरांगना, फिर प्रशंसा किसकी 25-26

17-वर्गपहेली- 339 - जयंतीलाल जैन,रतलाम 27

18-ज्ञान गंगोत्री- 339-आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा. 28

19-शासन-समाचार 29-41

20-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है, दूध-दही-घी-छाछ 42

संपादकीय

जिन प्रतिमा : दान शील तप और भावना धर्म

आसनोपकारी चरम तीर्थकर श्री वीर परमात्मा के विरहकाल में 21 हजार वर्ष तक जिनप्रतिमा ही संसार समुद्र से तीरने के लिये परमोत्कृष्ट आलंबन भूत है। दान-शील-तप-भाव धर्म का अविरल प्रवाह जिन प्रतिमा से ही आरंभ होता है। वर्तमानकाल में साधु-साध्वी की संख्या परिमित (सीमित) है और भारत वर्ष में श्रावकों के रहने के क्षेत्र बहुत है इसलिए समस्त क्षेत्र में श्रमण भगवंतों का लाभ मिलना अशक्य है। इससे श्रमण भगवंतों के विरह समय में दान-शील-तप-भाव इन चार धर्मो का अविरल प्रवाह करनेवाला अगर कोई है तो इस कलिकाल में जिन प्रतिभा है। जिनमंदिर जानेवाले श्रावक-श्राविका जिनेश्वर भगवंत के आगे-सामने चार चोखा (चावल) के दाने भी अगर अर्पण करते है तो सुपात्र दान का अपूर्व लाभ पाते है। जिस प्रकार गृह में रहनेवाली छोटी-बड़ी स्त्रीयां के समीप में रहकर ब्रह्मचर्य का पालन सुन्दर तरीके से नहीं हो सकता है, कोई दुराचारी स्त्री लंपट आत्मा जितने समय में जिनमंदिर में रहता है तो इतने समय में तो पक्के रुप में उसे ब्रह्मचर्य का पालन करना ही पड़ता है। ऐसे ही तप धर्म के सेवन का का विचार करनेवाला व्यक्ति जो 25 बार कोई चीज खाता हो, वह भूखा रह नहीं सकता हो। परन्तु ,अगर ऐसा जीव को इतने समय मंदिर में रहना पड़े तो उस समय वह मुख में पानी की बूंद और अन्न का दाना भी नहीं खाता है और बार-बार बीड़ी- सिगरेट पीनेवाला इस आदत को छोड़कर मंदिर में रहकर तपधर्म का पालन अपूर्व रीति से करता ही है। जो आत्मा वीतराग की वाणी को पाई होती है वह मंदिर में जाकर प्रभु के सामने मेरा और जगत का कल्याण किस प्रकार हो ऐसी भावना में वह आत्मा भीग सकती है और भाव धर्म का सुन्दर तरीके से पालन कर सकती है। इस कारण से श्रमण भगवंत के विरहकाल में जिनमंदिर में दान-शील-तप-भावना ये चार धर्म का पालन हो सकता है।

इस प्रसंग पर एक दूसरी बात से विचार करें तो आज शास्त्र या जो ग्रंथ है यह वीतराग की वाणी नहीं है, कारण यह कि शरीरधारी वीतराग प्रभु विचरे तब तक ही शरीर सुख होता है और जो वाणी मुख से निकले तो वीतराग वाणी कहलाती है परन्तु वही वाणी वीतराग के विरहकाल में वीतराग की वाणी ही कहलाती है इसे वीतराग की वाणी रुप जो नहीं मानता है उसे जैन शास्त्र पढ़ने का जरा भी हक नहीं है। प्रभु के विरहकाल में जिनबिंब पर ही जिनेश्वर भगवंत की स्थापना है जो जिनबिंब को मानता है वही वीतराग प्रभु को मान सकता है और वही वीतराग की वाणी को मान सकता है अन्यथा नहीं।

एक व्यापारी जो कागज बेचने का काम करता है पर इस कागज की कोई कीमत नहीं है, जब कोरे कागज पर राज्य की, सरकार की सील-सिक्का-करन्सी नोट पर बैंक की छाप लग जाती है तो उस कागज की कीमत अमूल्य हो जाती है, करन्सी, बैंक के नोट को कागज के टुकड़े जैसी कीमत आंकनेवाला मूर्ख शिरोमणी ही कहलायेंगे, इसी प्रकार पर्वत, पहाड़ में बहुत पत्थर होते है पर इन पत्थरों की कीमत नहीं होती है। परन्तु इन पत्थरों से जिन प्रतिमा घड़ जाने पर और इन प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा - पंच कल्याणक और अनेक विधि विधान, अनुष्ठानों और संस्कारों से संस्कारित होने के बाद और अत्युतम भरपूर महोत्सवपूर्वक अंजन शलाका से अर्जित हो जाये तो इसके बाद शासन मान्य पवित्रतम विधि विधानों, संस्कारों से संस्कारित होकर यह भगवंत की प्रतिमा ही वास्तविक जिनप्रतिमा बन जाती है। इसके बाद ही यह प्रतिमा दर्शनीय-वंदनीय-पूज्यनीय-सत्कार करने लायक और सम्मान करने लायक योग्य बनती है।

इस कारण से ज्ञानी भगवंतों ने पुण्यानुबंधी पुण्य बांधने, उस पर टिकने और बढ़ाने में सात क्षेत्रों में से जिनबिंब भरवाने को प्रथम स्थान पर रखा है, यह अति आदरणीय है। श्रीमान सकलचंद्रजी उपाध्याय महाराज तो कहते हैं कि- जिनेश्वर भगवंतों की प्रतिमा की प्रतिष्ठा करनेवाला, करानेवाला और अनुमोदना करनेवाला प्रकृष्ट पुण्यानुबंधी पुण्य की दृढ़ता के साथ तीन भवरुप सद्गति की परम्परा में उत्तरोत्तर सुन्दर साधन-सामग्री संयोग को पाकर धनधाती कर्मो को तोड़कर केवल ज्ञान पाकर शाश्वत सुख को भी पाता है, इसी प्रकार जिनबिंब को भरानेवाला, अनुमोदना करनेवाला तीन भव में सिद्ध सुख को पाता है।

जैन दर्शन और आगम शास्त्रों की मानें तो 24 तीर्थकर परमात्मा होते है वैसे अध्ययन के विस्तार में जाए तो अनंत तीर्थकर हो चुके है इसके साथ ही महाविदेह क्षेत्र में 20 तीर्थकर परमात्मा होते हैं। तीर्थकर परमात्मा की अनुउपस्थिति में परमात्मा का आलंबन लेने के लिए सर्वश्रेष्ठ साधन हमारे तीर्थकरों की प्रतिमा, जिन प्रतिमा है, परमात्मा की पूजा करते समय यही लगना चाहिये कि हम साक्षात् परमात्मा को स्पर्श कर रहे है। गृहस्थ को परमात्मा के समान बनने के लिये प्रभु के गुणों का सम्मान, अपने में अवतरण, पूजन, आराधना करने का विधान है, प्रत्येक तीर्थंकर परमात्मा के जीवनकाल में पांच प्रसंग, च्वयन, जन्म, दीक्षा केवल मोक्ष या निर्वाण घटित होते हैं इन पंच कल्याणकों का तीर्थकर परमात्मा की अनुस्थति में बहुत महत्व बढ़ जाता है, क्योंकि प्रभु प्रतिमा को वर्तमान युग में इन पंच कल्याणकों के विधान के साथ प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है। यही प्रतिमा साक्षात् परमात्मा की अनुभूति करती है।

आत्मीय पाठकवृंद ! उपरोक्त भावों का प्रकटीकरण मालव देशोद्धारक श्री चन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराजा ने अपने एक आलेख में किया था। पूज्यश्री ने जिन प्रतिमा से दान शील, तप और भावना धर्म को पाने को उत्कृष्ट मार्ग प्रेरणा प्रदान की है तो आईये ! धर्म पाने के इस सर्वश्रेष्ठ मार्ग का आलंबन लेकर जीवन सार्थक करें। यही अभिलाषा !

-डॉ.सुभाष जैन

धर्म का प्रचार आचार से:- आज के जमाने में जहां लाखों पुरुष भूख से तड़प-तड़प कर अपनी जान खो रहे हों, वहां आप बड़े-बड़े जिमनवार करते हैं तो यह धर्म का प्रचार कहा जाय या धर्म का नाश ? धर्म प्रचार का सच्चा मार्ग ही आचार है। आचार से प्रचार होता है। आप अपने धर्म का सचमुच प्रचार करना चाहते हैं तो आप अपने आचार से दूसरों पर ऐसा प्रभाव डालें कि जिससे कोई झूठ नहीं बोले, चोरी नहीं करें, हिंसा नहीं करें। यानी जैनी कहलाने वाले अपने आचार में सत्य और अहिंसा को इस प्रकार उतार लें कि जिससे दूसरे लोग यह कहें कि जैनी कभी हिंसा नहीं करते हैं, झूठ नहीं बोलते और चोरी नहीं करते हैं। तभी वह सच्चा प्रचार है और इसी से धर्म की सच्ची प्रभावना भी हो सकती है। अट्ठाई करके वरघोड़ा निकालना और जिमनवार करना तो कभी-कभी धर्म का प्रचार नहीं, हास्य कराते हैं। अतः चरित्र ही एक ऐसी वस्तु है जिससे सच्चा प्रचार किया जा सकता है और जिसके सामने विद्या भी झुक जाती है।

महान जीवात्मा के पूर्वभव

1- श्रीपाल राजा-श्री कतिराजा
2- अजितसेन मुनि-सिंहराजा
3- कुमारपाल राजा-जयताक
4- इलाचीकुमार-अग्निशर्मा ब्राह्मण
5- श्रेणीक राजा- सुमंगल राजा
6- कोणिक-श्येनक तापस
7- समरादित्य केवली-गुणचंद्र
8- मेतार्य मुनि-सौवस्तिक
9- वज्रस्वामी-जृम्भकदेव
10-नंदिषेण-भीमनायक दास
11-शालिभद्र-संगम
12-हेमचंद्राचार्य-यशोभद्रसूरी
13-जम्बुस्वामी-शिवकुमार
14-चिलाती पुत्र-यजदेव ब्राह्मण
15-श्रीमती-बंधुमती
16-मेघाकुमार-मेरु प्रभ हाथी
17-आर्द्रकुमार-सोमादित्य (सामायिक)
18-हरिकेशो बल-सोमदेव पुरोहित
19-शुलपाणी यक्ष-धावलनामक बैल
20-मृगापुत्र-राष्ट्रकुट राजा
21-शंखराजा-पोपट
22-सुदर्शन सेठ-सुभग् गोवाल
23-जटायु पक्षी-दंडक राजा
24-ढंढण मुनि-पारासर ब्राह्मण
25-वरदत्तकुमार-वसुदेव सूरि
26-ओढर श्रावक-उदासन मंत्री
27-अकबर बादशाह-मुकुंद ब्रह्मचारी
28-हातिक खंडत-सदृष्ट नागकुमारदेव
29-कृतपुण्य-गोवालपुत्र

**** समस्त ज्ञानियों ने प्रेम-बंधन तथा द्वेष-बंधन को संसार का मुख्य कारण माना है। उसकी उलझन में जीव को निज विचार करने का अवकाश नहीं मिलता; अगर कदाचित मिले तो उस योग में उस बंधन के कारण आत्मवीर्य प्रवृत्ति नहीं कर सकता और यही सब प्रमाद का कारण है।***

पाप की सजा भारी...!

***प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.**

गतांक से आगे...!

नरक गति का परिचय:-

नरक गति में महाभयंकर सजा भुगतनी पड़ती है। 14 राजलोक के तीन लोक में जो अधोलोक है वह पाताललोक या नरक के नाम से पहचाना जाता है। जो सात विभाग में विभक्त है। वे 7 नरक पृथ्वीयां है। वह नरक क्या है ? और कहां है ?

7 नरक पृथ्वीयां:- 1- रत्नप्रभा 2- शर्कराप्रभा 3- वालुकाप्र 4-पंकप्रभा 5- धूमप्रभा 6- तमःप्र. 7- महातम।

ये सात नरक पृथ्वीयां अपने अपने स्थान के अनुरुप नामों से पहचानी जाती है। यहां घोर अंधेरा रहता है और पहली दुनिया में अंधेरा-दुःखादि ज्यादा है। दूसरे से तीसरी में ज्यादा, तीसरी से चौथी में ज्यादा और इस तरह आगे बढ़ते जाएं तो सातवीं नरक में तो भयंकर दुःख और निविड़ गाढ़ अंधेरा है। उत्तरोत्तर क्रम से ये सातों नरक एक से दूसरी बड़ी-बड़ी है और अधिक से अधिक दुःखदायी है। इसी तरह इनमें क्रमशः आयुष्य भी काफी ज्यादा है। कम से कम जघन्य आयुष्य यहां 10000 वर्ष से कम तो होता ही नहीं है और फिर आगे बढ़ता ही जाता है।

7 नरकों में आयुष्य:-

जघन्य आयुष्य (कम)	उत्कृष्ट आयुष्य (ज्यादा)
1 ली नरक में-10000 वर्ष-	1 सागरोपम वर्ष
2 री नरक में-1 सागरोपम वर्ष-	3 सागरोपम वर्ष
3 री नरक में-3 सागरोपम वर्ष-	7 सागरोपम वर्ष
4 थी नरक में-7 सागरोपम वर्ष-	10 सागरोपम वर्ष
5 वीं नरक में-10 सागरोपम वर्ष-	17 सागरोपम वर्ष
6 टी नरक में-17 सागरोपम वर्ष-	22 सागरोपम वर्ष
7 वीं नरक में-22 सागरोपम वर्ष-	33 सागरोपम वर्ष

इस तरह से इन सातों नरक पृथ्वीओं में इतना लम्बा चौड़ा आयुष्य रहता है। 1 सागरोपम का अर्थ असंख्य वर्ष होता है ऐसे 33 सागरोपम वर्ष वहां 1 जन्म में बिताना है।

7 नरकों में शरीर की ऊंचाई:-

कम ऊंचाई	अधिक ऊंचाई
1 ली नरक में-3 हाथ-	31 हाथ
2 री नरक में-33।। हाथ-	62।। हाथ
3 री नरक में-62।। हाथ-	125 हाथ
4 थी नरक में-125 हाथ-	250 हाथ
5 वीं नरक में-250 हाथ-	500 हाथ
6 टी नरक में-500 हाथ-	1000 हाथ
7 वीं नरक में-1000 हाथ-	2000 हाथ

इस तरह कम से कम और अधिक से अधिक शरीर की ऊंचाई इतने हाथ प्रमाण होती है अर्थात् इतना मोटा तगड़ा-लम्बा-चौड़ा-ऊंचा शरीर रहता है और सभी नारकीओं को नपुंसकपना मिलता है। नंपुसक को महा विषय-वासना रहती है और अति काम वासना के कारण अनेक प्रकार की धमाल करते रहते हैं। पारे के जैसा शरीर होता है अर्थात् एक-दो बार या 50-100 बार भी कोई काटे तो भी मरता नहीं है। जैसे पारा हाथ में नीचे गिरकर बिखर जाय और पुनः एकत्र करने पर वापिस एक सा हो जाय ठीक वैसा ही नारकीयों का शरीर होता है। परमाधामी ने हाथ-पैर काटकर चारों दिशा में फेंक भी दिए हो तो भी थोड़ी देर में वापिस जुड़ कर एक हो जाते है, और फिर बिचारा नारकी दौड़ने भागने लगता है। 1 मिनिट भी बेचारे नारकी को शांति नहीं है। दूसरी तरफ आयुष्य ऐसा निरुपक्रम वाला होता है कि आत्महत्या करने मरना भी चाहे तो मर नहीं सकता है। सात नरक पृथ्वीओं के 13-11-9-7-5-3-1=49 इस तरह कुल 49 प्रस्तरों की सात नारकों में असंख्य नारकी जीव रहते हैं। ये सभी नारकी बेचारे कुब्ज-वामन और शरीर वाले होते हैं। शरीर का रंग भी निकृष्ट-मलीन होता है। गधे और ऊंट के जैसी विचित्र चाल होती है। रोते हुए, विलाप करते हुए, और चित्कार से चिल्लाते हुए डरावने भयंकर उनके आवाज हमेशा होते रहते हैं। नारकी जीवों का जठराग्नि इतना ज्यादा प्रज्वलित रहता है अर्थात् इतनी तीव्र भूख लगती है कि दुनिया भर का घी और अन्न खिलाया जाय तो भी तृप्ति संभव नहीं है। जबकि नरक में नारकीओं का वैक्रिय शरीर ही ऐसा होता है कि वहां खाने-पीने का व्यवहार ही नहीं है। फिर भी वेदना के प्रकार में क्षुधा की तीव्रता भी एक प्रकार है। नारकीओं की लेश्याएं कृष्णा आदि बहुत खराब होती है। विचारधारा में भी क्रूरता बहुत ज्यादा होती है। आर्त से भी हजार गुना वहां रौद्र ध्यान का परिणाम रहता है। मारो-काटो की बात चलती है। क्रोधादि कषायों की मात्रा हजार गुनी ज्यादा रहती है।

नरक गति में वेदना:-

परस्परोदोरित,असुरोदीरित, क्षेत्राकृत

दु:ख पीड़ा को वेदना कहते है। इस तरह नरकगति में मुख्य लीन-प्रकार की वेदना होती है। परस्पर वैरी-दुश्मन ऐसे कई जीव नरक में साथ में उत्पन्न होते है वहां पर परस्पर लड़ना-झगड़ना आदि सतत रहता है। एक दूसरे को मारना, काटना आदि सतत चलता है। भयंकर युद्ध के जैसा वातावरण और तनाव सतत रहता है। चूहे-बिल्ली के जैसे दुश्मन सभी एक दूसरे को मारना ही चाहते हैं। जहां परमा धामी नहीं होते है ऐसी 4-5-6-7 वीं इन चारों नरकों में परस्पर लड़ते-रहते हैं। अंगोपांग छेदन-भेदन करते जाते हैं। एक तो घोर अंधेरी नरक और उसमें भी सतत एक-दूसरे से टकराकर भी लड़ना। डराना भीड़ना सतत चलता है।

असुरोदीरित वेदना-सक्लिष्टासुरोदीरित दु:खाश्च प्राय चतुर्थ्या: ।।3-5।। असुर-अर्थात् भयंकर राक्षसी कक्षा के परमाधामी भवनपति की जाति के देव। वे 1-2-3 नरक पृथ्वीओं में रहते हैं। परम+अधर्मी= परमाधामी ऐसा शब्द है। अर्थात् महाभयंकर अधर्मी यहां जो जेलर होता है वैसा काम उसका वहां है। आए हुए नारकी जीवों को मारना-काटना-पीटना, उठा के पटकना, अग्नि में जलाना आदि हजारों प्रकार से दु:खी करने में ही उनको मजा आता है। उससे जीवों की जो तीव्र वेदना होती है। वह असुरोदीरित परमाधामी कृत वेदना है। बस परमाधामीओं का काम ही यही है और उनको इसी में मजा आता है। ये 15 प्रकार के होते है अत: 15 परमाधामी कहलाते है। इनका स्वभाव भी बहुत ही संक्लिष्ट-क्रूर रहता है। अपने यहां की धरती पर से बड़े अच्छे जाने पहचाने समाज के प्रतिष्ठित सेठ जिन्दगी भर महापाप करके नरक में गए है और दो परमाधामी एक कड़ाई में उबलते हुए गरम-गरम तेल में उसे डालकर भालों से भजिए की तरह तलते है। यहां का सेठ वहां का नारकी बनकर कितनी भयंकर वेदना सहन करेगा ? किये हुए भयंकर पाप की सजा ऐसी मिलती है। ऐसी परमाधामीयों के द्वारा दी गई। **- आगे ओर है**

✻ अनुशासन जीवन जीने का एक निश्चित और नियमित तरीका है, जिसमें मनुष्यों का रहन-सहन, खान-पान, चाल-ढाल, बातचीत करना, काम करना सभी व्यवस्थित और सुंदरतापूर्ण होते हैं।

ममता

गर्भवती पत्नी को छोड़कर सेठ कमाने गये। बहुत कुछ कमाने के बाद सेठ वापस लौटे तब पुत्र 16 वर्ष का हो गया था। सेठजी रात को गांव के थोड़े दूर एक धर्मशाला में ठहरे। पुत्र भी अकस्मात वहां आया हुआ था। रात को पुत्र के पेट में भयंकर वेदना हुई। सभी परोपकारी मनुष्य वहां दौड़कर आये और उपचार करने लगे।

सेठजी ने दर्द भरी आवाज सुनी लेकिन विचार किया कि होगा ! जगत में ऐसा चलता ही रहता है। मुझे क्या ? सेठजी वहां ही बैठे रहें। भयंकर वेदना से तड़पते इस दर्दी ने आखिर सुबह मृत्यु को प्राप्त किया। मरनेवाले के पिता का नाम जाहिर हुआ**- छगन फूलचंद !**

''अरे यह तो मैं ही छगन फुलचंद ! सेठजी चौंक गये। आखिर मालुम करने पर पता चला कि यह तो मेरा ही पुत्र ! सेठजी फू ट-फूट कर रोने लगे। पहले दु:ख नहीं हुआ था, लेकिन अब दु:ख हुआ। कारण ? पहले ममता नहीं थी, अब ममता है।

मैत्रीभाव, प्रेमभाव खराब चीज नहीं है लेकिन वह सर्वगति होनी चाहिये। जब वह व्यक्तिगत बन जाती है तब ममता बन जाती है। मैत्रीभाव गुण है जबकि ममता-भाव दोष है। प्रेम को स्वार्थ के ढांचे में-अमुक स्वजन तक ही मर्यादित कर देना-इसमें प्रेम का अपमान है। आकाश को घड़े में कैद करना-इसमें आकाश का अपमान है। सागर को लोटे में कैद करना, इसमें सागर का अपमान है।

प्रेम सर्वव्यापी बनना चाहिये। संकुचित प्रेम बांधता है, सर्वगामी मैत्री हमें मुक्त बनाती है। फैलाने में जीवन है। संकोचाने में मृत्यु है। बीज वृक्षरुप से फैल जाय.... बिन्दु सिंधुरुप से फैल जाय उसी तरह व्यक्ति को विश्व-मानव के रुप में फैल जाना चाहिये।

''व्यक्ति मटी हूं बनुं विश्व मानवी, माथे धरुं धूल वसुंधरानी।''

✻ ब्राह्य परिचय को सोच-सोचकर निवृत्त करना यह छूटने का एक मार्ग है; जीव जितना इस बात को सोचेगा उतना ही ज्ञानीपुरुष के मार्ग को समझने का समय समीप प्राप्त होगा।

15 अगस्त-स्वतंत्रा दिवस पर विशेष लेखः-

भारतीय तिरंगे का इतिहास....

''**सभी** राष्ट्रों के लिए एक ध्वज होना अनिवार्य है। लाखों लोगों ने इस पर अपनी जान न्यौछावर की है। यह एक प्रकार की पूजा है, जिसे नष्ट करना पाप होगा। ध्वजा एक आदर्श का प्रतिनिधित्व करता है। यूनियन जैक अंग्रेजों के मन में भावनाएं जगाता है जिसकी शक्ति को मापना कठिन है। अमेरिकी नागरिकों के लिए ध्वज पर बने सितारे और पट्टियों का अर्थ उनकी दुनिया है। इस्लाम धर्म में सितारे और अर्थ चन्द्र का होना सर्वोत्तम वीरता का आव्हान करता है।''

''हमारे लिये यह अनिवार्य होगा कि हम भारतीय मुस्लिम, ईसाई, ज्यूस, पारसी और अन्य सभी, जिनके लिए भारत एक घर है, एक ही ध्वज को मान्यता दें और इसके लिए मर मिटें।'' - महात्मा गांधी

प्रत्येक का अपना एक ध्वज होता है। यह एक स्वतंत्र देश होने का संकेत है। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज की अभिकल्पना पिंगली वैंकैयानन्द ने की थी और इसे इसके वर्तमान स्वरुप में 22 जुलाई 1947 को आयोजित भारतीय संविधान सभा की बैठक के दौरान अपनाया गया था, जो 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों से भारत की स्वतंत्राता के कुछ ही दिन पूर्व की गई थी। इसे 15 अगस्त 1947 और 26 जनवरी 1950 के बीच भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रुप में अपनाया गया और इसके पश्चात भारतीय गणवंत्र ने इसे अपनाया। **भारत में ''तिरंगे'' का अर्थ भारतीय राष्ट्रीय ध्वज है।**

भारतीय राष्ट्रीय ध्वज में तीन रंग की क्षैतिज पटिटयां हैं, सबसे ऊपर केसरिया, बीच में सफेद और नीचे गहरे रंग की पट्टी और ये तीनों समानुपात में हैं। ध्वज की चौड़ाई का अनुपात इसकी लंबाई के साथ 2 और 3 का है। सफेद पट्टी के मध्य में गहरे, नीले रंग का एक चक्र है। यह चक्र अशोक की राजधानी के सारनाथ के शेर के स्तंभ पर बना हुआ है। इसका व्यास लगभग सफेद पट्टी की चौड़ाई के बराबर होता है और इसमें 24 तीलियां है।

तिरंगे का विकासः-

यह जानना अत्यंत रोचक है कि हमारा राष्ट्रीय ध्वज अपने आरंभ से किन-किन परिवर्तनों से गुजरा। इसे हमारे स्वतंत्राता के राष्ट्रीय संग्राम के दौरान खोजा गया था मान्यता दी गई। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज का विकास आज के इस रुप में पहुंचने के लिए अनेक दौरों में से गुजरा। एक रुप से यह राष्ट्र में राजनैतिक विकास को दर्शाता है। हमारे राष्ट्रीय ध्वज के विकास में कुछ ऐतिहासिक पड़ाव इस प्रकार हैंः-

✻ वन्दे मातरम्, 1906 में भारत का गैर आधिकाधिक ध्वज।

✻ वन्दे मातरम्, 1907 में भीका जीकामा द्वारा फहराया गया बर्लिन समिति का ध्वज।

✻ इस ध्वज को 1917 में गघरेलू शासन आंदोलन के दौरान अपनाया गया।

✻ इस ध्वज को 1921 में गैर अधिकारिक रुप से अपनाया गया।

✻ इस ध्वज को 1931 में अपनाया गया। यह ध्वज भारतीय राष्ट्रीय सेना का संग्राम चिन्ह भी था।

✻ भारत का वर्तमान तिरंगा ध्वज।

प्रथम राष्ट्रीय ध्वज 7 अगस्त 1906 को पारसी बागान चौक (ग्रीन पार्क) कलकत्ता में फहराया गया था जिसे अब कोलकाता कहते हैं। इस ध्वज को लाल, पीले और हरे रंग की क्षैतिज पट्टियों से बनाया गया था।

द्वितीय ध्वज को पेरिस में मैडम कामा और 1907 में उनके साथ निर्वासित किये गए कुछ क्रांतिकारियों द्वारा फहराया गया था (कुछ के अनुसार 1905 में)। यह भी पहले ध्वज के समान था सिवाय इसके कि इसमें सबसे ऊपरी की पट्टी पर केवल एक कमल था किंतु सात तारे सप्तऋषि को दर्शाते हैं। यह ध्वज बर्लिन में हुए समाजवादी सम्मेलन में भी प्रदर्शित किया गया था।

तृतीय ध्वज 1917 में आया जब हमारे राजनैतिक संघर्ष ने एक निश्चित मोड़ लिया। डॉ. एनी बीसेंट और लोकमान्य तिलक ने घरेलू शासन का आंदोलन के दौरान इसे फहराया। इस ध्वज में 5 लाल और 4 हरी क्षैतिज पट्टियां एक के बाद एक और सप्तऋषि के अभिविन्यास में इस पर बने सात सितारे थे। बांयी और ऊपरी किनारे पर (खंभे की ओर) यूनियन जैक था। एक कोने में सफेद अर्धचंद्र और सितारा भी था। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सत्र के दौरान जो 1921 में बेजवाड़ा (अब विजयवाड़ा) में किया गया यहां आंध्रप्रदेश के एक युवक ने एक झंडा बनाया और गांधीजी को दिया। यह दो रंग का बना था। लाल और हरा रंग जो दो प्रमुख समुदायों अर्थात् हिन्दू और मुस्लिम का प्रतिनिधित्व करता है। गांधीजी ने सुझाव दिया कि भारत के शेष समुदाय का प्रतिनिधित्व करने के लिए इसमें एक सफेद पट्टी और राष्ट्र की प्रगति का

संकेत देने के लिए एक चलता हुआ चरखा होना चाहिये।

वर्ष 1931 ध्वज के इतिहास में एक यादगार वर्ष है। तिरंगे ध्वज को हमारे राष्ट्रीय ध्वज के रुप में अपनाने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया गया। यह ध्वज जो वर्तमान स्वरुप का पूर्वज है, केसरिया, सफेद और मध्य में गांधीजी के चलते हुए चरखे के साथ था। तथापि यह स्पष्ट रुप से बताया गया इसका कोई साम्प्रदायिक महत्व नहीं था और इसकी व्याख्या इस प्रकार की जानी थी।

22 जुलाई 1947 को संविधान सभा ने इसे मुक्त भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के रुप में अपनाया। स्वतंत्राता मिलने के बाद इसके रंग और उनका महत्व बना रहा। केवल ध्वज में चलते हुए चरखे के स्थान पर सम्राट अशोक के धर्म चक्र को दिखाया गया। इस प्रकार कांग्रेस पार्टी का तिरंगा ध्वज अंततरु स्वतंत्र भारत का तिरंगा ध्वज बना।

ध्वज के रंग:-

भारत के राष्ट्रीय ध्वज की ऊपरी पट्टी में केसरिया रंग है जो देश की शक्ति और साहस को दर्शाता है। बीच में स्थित सफेद पट्टी धर्म चक्र के साथ शांति और सत्य का प्रतीक है। निचली हरी पट्टी उर्वरता, वृद्धि और भूमि की पवित्राता को दर्शाती है।

चक्र:-

इस धर्म चक्र को विधि का चक्र कहते हैं जो तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व मौर्य सम्राट अशोक द्वारा बनाए गए सरनाथ मंदिर से लिया गया है। इस चक्र को प्रदर्शित करने का आशय यह है कि जीवन गतिशील है और रुकने का अर्थ मृत्यु है।

ध्वज संहिता:-

26 जनवरी 2002 को भारतीय ध्वज संहिता में संशोधन किया गया और स्वतंत्राता के कई वर्ष बाद भारत के नागरिकों को अपने घरों, कार्यालयों और फैक्टरी में न केवल राष्ट्रीय दिवसों पर, बल्कि किसी भी दिन बिना किसी रुकावट के फहराने की अनुमति मिल गई। अब भारतीय नागरिक राष्ट्रीय झंडे को शान से कहीं भी और किसी भी समय फहरा सकते हैं। बशर्ते कि वे ध्वज की संहिता का कठोरता पूर्वक पालन करें और तिरंगे की शान में कोई कमी न आने दें। सुविधा की दृष्टि से भारतीय ध्वज संहिता, 2002 को तीन भागों में बांटा गया है। संहिता के पहले भाग में राष्ट्रीय ध्वज का सामान्य विवरण है। संहिता के दूसरे भाग में जनता, निजी संगठनों, शैक्षिक संस्थानों आदि के सदस्यों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज के प्रदर्शन के विषय में बताया गया है। संहिता का तीसरा भाग केन्द्रीय और राज्य सरकारों तथा उनके संगठनों और अभिकरणों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज के प्रदर्शन के विषय में जानकारी देता है।

26 जनवरी 2002 विधान पर आधारित कुछ नियम और विनिमय हैं कि ध्वज को किस प्रकार फहराया जाए।

क्या करें:-

❊ राष्ट्रीय ध्वज को शैक्षिक संस्थानों (विद्यालयों, महाविद्यालयों, खेल परिसरों, स्काउट शिविरों आदि) में ध्वज को सम्मान देने की प्रेरणा देने के लिए फहराया जा सकता है। विद्यालयों में ध्वज आरोहण में निष्ठा की एक शपथ शामिल की गई है। किसी सार्वजनिक, निजी संगठन या एक शैक्षिक संस्थान के सदस्य द्वारा राष्ट्रीय ध्वज का अरोहण प्रदर्शन सभी दिनों और अवसरों, आयोजनों पर अन्यथा राष्ट्रीय ध्वज के मान सम्मान और प्रतिष्ठा के अनुरुप अवसरों पर किया जा सकता है।

❊ नई संहिता की धारा में सभी निजी नागरिकों अपने परिसरों में ध्वज फहराने का अधिकार देना स्वीकार किया गया है।

क्या न करें:-

❊ इस ध्वज को सांप्रदायिक लाभ, पर्दे या वस्त्रों के रुप में उपयोग नहीं किया जा सकता है। जहां तक संभव हो इसे मौसम से प्रभावित हुए बिना सूर्योदय से सूर्यास्त तक फहराया जाना चाहिये।

❊ इस ध्वज को आशय पूर्वक भूमि, फर्श या पानी से स्पर्श नहीं कराया जाना चाहिये। इसे वाहनों के हुड, ऊपर और बगल या पीछे, रेलों, नावों या वायुयान पर लपेटा नहीं जा सकता।

❊ किसी अन्य ध्वज या ध्वज पट्ट को हमारे ध्वज से ऊंचे स्थान पर लगाया नहीं जा सकता है। तिरंगे ध्वज को वंदनवार, ध्वज पट्ट या गुलाब के समान संरचना बनाकर उपयोग नहीं किया जा सकता।

भारतीय राष्ट्रीय ध्वज भारत के नागरिकों की आशाएं और आकांक्षाएं दर्शाता है। यह हमारे राष्ट्रीय गर्व का प्रतीक है। पिछले पांच दशकों से अधिक समय से सशस्त्र सेना बलों के सदस्यों सहित अनेक नागरिकों ने तिरंगे की पूरी शान को बनाए रखने के लिए निरंतर अपने जीवन न्यौछावर किए हैं।

जमीं पर रहकर आसमां को
छूने की फितरत है मेरी,
पर किसी को गिरा कर,
ऊपर उठने का शौक नहीं मुझे !!

सूरत- गोपीपुरा एक पावन भूमि

सूरत शहर में गोपीपुरा विस्तार प्राचीन तीर्थ स्थलीयों से पावन हैं। गोपीपुरा विस्तार में 60 से भी अधिक प्राचीन जिनालय है, दूसरी ओर जैनियों की आबादी कम होती चली। जैसे-जैसे लोगों के पास पैसे बढ़ने लगे, लोगों ने नये सूरत की ओर रुख किया। जिनालय में जहां हर रोज सुबह होते ही भक्तों की भक्ति एवं घंटारव को मधुर ध्वनि से गोपीपुरा गूंज उठता था वहां सन्नाटा छा गया। पाषाण के बड़े-बड़े भव्य प्रभुजी की पूजा पूजारियों के द्वारा ही सम्पन्न होने लगी थी तब धातू के छोटे-छोटे प्रभुजी की पूजा कौन श्रावक करता होगा ?

दस साल पूर्व एक युवा श्रावक ने इस परिस्थिति को देखकर मनोमंथन किया। रोजाना एक जिनालय में वह अष्ट प्रकारी पूजा कर रहा था लेकिन अन्य जिनालयों में प्रभु पूजा की होने वाली उपेक्षा उसे चुभने लगी। उसका किया हुआ मनोमंथन सिर्फ विचार तक सीमित न रहते हुए सम्यग् परिवर्तन का कारण बना।

उस युवा श्रावक का नाम था **अल्पेश** गोपीपुरा में एक फ्लैट में बरसों से उसका परिवार रहता था। धीरे-धीरे उनके भाई वहां से नये सूरत में बस गये। उन्हें भी कई बार कहा कि-

अब अपने समाज के घर ना के बराबर है तो तूं भी यहां पर आ जा। लेकिन अल्पेश ने सोचा कि- यहां प्रभु भक्ति की समस्या का समाधान क्या है ? मैं उपेक्षा नहीं कर सकता। दस साल पूर्व किसी धान्य पल में उसने रोजाना सुबह 7 बजे से अलग-अलग जिनालयों में जाकर परमात्मा की अष्ट प्रकारी पूजा करना शुरु किया। रोजाना 4.00 बजे (शाम) तक उनका यह पूजा का कार्यक्रम जारी रहता है। बिना किसी भी प्रकार का वेतन या बहुमान, अल्पेश भाई नौ-नौ घंटे तक लगातार प्रभु की पूजा करते हैं। इस पूजा के दौरान शरीर के आवश्यक कार्य, पानी, पेशाब जाना, भोजन करना इत्यादि पर पूर्णरुप से उनका स्टे ऑर्डर रहता है। मतलब वे रोजाना बिना व्यवधान पूजा हो पाये इसलिये 4.00 बजे के बाद ठाम चौविहार एकासन करते हैं। मतलब 4.00 बजे के बाद जब पूजा के वस्त्र बदलकर सादे वस्त्र पहनते हैं तब वे एक ही जगह बैठकर एक ही समय आहार और पानी लेकर शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति कर लेते हैं। लगातार दस साल से वे इसी तरह रोजाना ठाम चौविहार एकासन करके प्रभु भक्ति करते हैं।

मैंने उन्हें पूछा कि- कितने जिनालय में भक्ति हो जाती है ? उन्होंने कहा- तेरह जिनालय में.... और उसमें भी अष्ट धातु की प्रतिमा बड़ी संख्या में होने से उसकी पूजा में करीबन करीबन उपेक्षा होती देखी है। इसलिए उन सभी प्रभुजी की भक्ति प्राथमिकता से करता है।

शुरु-शुरु में तो दोपहर बारह बजे के बाद सभी जिनालय मंगल (बंद) हो जाने से दिक्कत आ रही थी। लेकिन ट्रस्टियों से बातचीत करके उन्हें समझाकर उन जिनालयों की चाबी प्राप्त कर ली ताकि एक भी प्रभुजी बिना पूजा के न रह जाये।

मैंने पूछा कि- ''कभी शारीरिक प्रतिकूलता हो तब क्या करते हो ?'' उन्होंने जवाब दिया- प्रभु की कृपा से दस साल में कभी ऐसी समस्या नहीं आई है।''

मैंने पूछा कि- ''पूरा दिन पूजा में पूर्ण हो जाता है तो आर्थिक व्यवस्था किस तरह चलती है ?'' उन्होंने कहा- ''मेरे सेठ जैन है। शाम को एकासन करने के बाद में अकाउण्ट का काम कर लेता हूं। कभी-कभी महिने में एक दो दिन ज्यादा काम हो तो बेटा 2-3 घंटे पूजा का काम सम्हाल लेता है। आज भी मेरे इस कार्य में रोजाना बेटा 2-3 घंटा हाथ बंटाता है। पत्नी भी सभी तरह की अनुकूलता कर देती है। उसने मुझे इस कार्य में हमेशा साथ दिया है। जो आय होती है उससे हमारे परिवार का बहुत अच्छे से चलता है और परमात्मा की करुणा से मुझे कभी कम पड़ा नहीं और कम लगा भी नहीं !'' मैं उनकी भक्ति को नतमस्तक था।

''दस-दस साल से ऐसे भीष्म कार्य को करना, और अपने भावों को बढ़ाते रहना, यह कलियुग का चमत्कार है।'' इससे भी आगे कहूं तो कम्पीटीशन और कम्पेरिजन के इस युग में लोगों के बंगले गाड़ी और तरक्की देखने पर भी मन में किसी भी प्रकार की दीनता की बात तो छोड़ो, चेहरे पर उत्साह, उल्लास और आनंद की जो छटा दिखती है वह काबिल-ए-तारीफ है। धन्य प्रभु भक्त, धन्य जिनशासन....

✽ मांगु और खजाना क्या !
पाकर तुझको पाना क्या !!

जीवन में स्कूल का मुख नहीं देखा पर आज चार भाषा का ज्ञान है...!

पालीताना के पवित्र धाम की यात्रा को जाते समय मातपुरा गांव आता है उसी के पास श्री सिद्धाचल श्रुततीर्थ का निर्माण हुआ है, **आचार्य देवेश श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा. ने इस तीर्थ की स्थापना की है, पूज्यश्री के सुशिष्य पूज्य आगमप्रिय म.सा. है और उनके सुशिष्य बाल मुनि श्री आचरंगप्रिय म.सा. है। हम इन्हीं बालमुनि की बात कर रहे है।** आपने अभी संसार देखा भी नहीं था कि 6.5 वर्ष की अवस्था में आप शैलेष से पूज्य मुनिश्री आचरंगदेव म.सा. बन गये। मात्र 5 वर्ष की आयु में रिकार्ड बनाने वाले बाल मुनि तपस्वी के रुप में प्रसिद्ध हो गये जब आपने 6.5 वर्ष में दीक्षा ग्रहण की उस समय तक आपने स्कूल का मुख भी नहीं देखा था परन्तु आप गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत का ज्ञान आप को है।

बालमुनि श्रीआचरंगदेव म.सा. को 3500 से अधिक श्लोक कंठस्थ है, ईडर साबरकांठा जिला गुजरात की श्रीमती स्तुति बहन तथा श्री रमणभाई के पुत्र शैलेष जब 6 वर्ष के थे तब आप मुंबई में अपने गुरु के पास अध्ययन के लिये जाते थे इस समय गुरु के सरल स्वभाव उनके ज्ञान, तप को देख कर शैलेष का मन उनसे मिल गया और संयम ग्रहण करने का निश्चय कर लिया, जिस उम्र में बालक खेलता कूदता है, मस्ती करता है उस आयु में शैलेष ने गुरु के पास रहकर जैन अभ्यास किया, कुछ समय बितने पर उनके मन में दीक्षा के भाव जाग्रत हुए। गुरु की बात कर पिताश्री से सहमति लेकर संयम ग्रहण कर लिया। संयम ग्रहण करने के बाद इस छोटी उम्र में तप और ज्ञान अग्रणी बन गये।

आपने अभी कुछ ही समय में जैन धर्म के 40 स्तवन 40 सज्झाई, 3500 से अधिक संस्कृत के श्लोक याद कर लिये है, इसके साथ ही आप एकासणा, आयंबिल,अट्ठम तपाराधना करते है अभी कुछ ही समय पूर्व आपने वर्धमान तप की 32 वीं ओली पूर्ण की है। बालमुनि पद संचलन के द्वारा गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान अन्य राज्यों में विहार किया है। आप के संयम जीवन की खूब-खूब अनुमोदना।

सिंहगढ़

शिवाजी को सूचना मिली कि कोंडलगढ़ में औरंगजेब द्वारा नियुक्त अधिकारी एक हिंदू कन्या के साथ बलात् निकाह पढ़वाने वाला है। उन्होंने इस अनीति को रोकने के लिये कोंडलगढ़ विजय के लिए तुरन्त कूच करने की आज्ञा अपने प्रिय योद्धा तानाजी के पास भेज दी।

उन्हीं दिनों तानाजी के पुत्र का विवाह होनेवाला था, किंतु उन्होंने कर्त्तव्य की गरिमा समझी और तुरन्त प्रस्थान किया। समय पर पहुंचकर कन्या का उद्धार किया तथा गढ़ जीत लिया, किंतु इस अभियान में स्वयं भी बलिदान हो गए।

शिवाजी को गढ़ विजय तथा तानाजी के बलिदान का समाचार मिला तो उनके मुख से निकला- गढ़ आया, पर सिंह चला गया। दुर्ग का नाम सिंहगढ़ ही रख दिया गया।

सामायिक वक्त की कीमत

- 48 मिनिट की होती है एक सामायिक।
- 48 को उल्टा करते हैं तो होता है 84
- 84 लाख जीव योनि की रक्षा होती है एक सामायिक।
- 48 को आधा करो है तो होता है 24
- 24 तीर्थंकरों की आज्ञा में होती है एक सामायिक।
- 24 को आधा करते है तो होता है 12।
- 12 व्रतों में एक व्रत है सामायिक।
- 12 को आधा करते है तो होता है 6।
- छः काय की रक्षा होती है एक सामायिक।
- छः को आधा करते हैं तो होता है 3।
- तीन करण और तीन योग से होती है चारित्रआत्माओं की सामायिक।
- तीन के आगे होता है दो।
- दो करण और तीन योग से होती है श्रावकों की सामायिक।
- दो के आगे होता है एक।
- वो मोक्ष जाने का रास्ता है एक सामायिक।

बेटे के वियोग में गीत बनाया, बन गया प्रेमियों का सबसे अमर गाना

साल था 1957। फिल्म ''जनम जनम के फेरे'' रिलीज हुई। म्यूजिकल हिट साबित हुई। इस फिल्म में एक गाने **''जरा सामने तो आओ छलिये''** ने तो जैसे चारों ओर तहलका मचा दिया। यह गाना इतना सुपरहिट साबित हुआ कि उस साल की ''बिनाका गीत माला'' का यह नम्बर 1 गीत बन गया। इस गाने का अनोखा किस्सा है। इस गाने को लिखा था **पंडित भरत व्यास** ने। तो हुआ यों था कि पंडित भरत व्यासजी के एक बेटा था **श्याम सुन्दर व्यास!** श्याम सुन्दर बहुत संवेदनशील था। एक दिन भरतजी से किसी बात पर नाराज होकर बेटा श्याम सुन्दर घर छोड़कर चला गया।भरतजी ने उसे लाख ढूंढा। रेड़ियो और अखबार में विज्ञापन दिया। गली-गली दीवारों पर पोस्टर चिपकाए। धरती, आकाश और पाताल सब एक कर दिया। ज्योतिषयों, नजूमियों से पूछा। मजारों, गुरुद्वारे, चर्च और मंदिरों में मत्था टेका लेकिन वो नहीं मिला। जमीन खा गई या आसमां निगल गया। आखिर हो कहां पुत्र ? तेरी सारी इच्छाएं और हसरतें सर आंखों पर। तू लौट तो आ। बहुत निराश हो गए भरत व्यास। उस समय भरत व्यासजी कैरियर के बेहतरीन दौर से गुजर रहे थे। ऐसे में बेटे के अचानक चले जाने से जिंदगी ठहर सी गई। किसी काम में मन नहीं लगता। निराशा से भरे ऐसे दौर में एक निर्माता भरतजी से मिलने आया और उन्हें अपनी फिल्म में गाने लिखने के लिए निवेदन किया। भरतजी ने पुत्र वियोग में उस निर्माता को अपने घर से निकल जाने को कह दिया। लेकिन उसी समय भरतजी की धर्मपत्नी वहां आ गई। उन्होंने उस निर्माता से क्षमा मांगते हुए यह निवेदन किया कि वह अगले दिन सुबह पुनः भरतजी से मिलने आए। निर्माता मान गए। इसके पश्चात उनकी धर्मपत्नी में भरतजी से यह निवेदन किया कि पुत्र की याद में ही सही उन्हें इस फिल्म के गीत अवश्य लिखना चाहिए। ना मालूम क्या हुआ कि- पंडित भरत व्यास ने अपनी धर्मपत्नी की इस आग्रह को स्वीकार करते हुए गाने लिखना स्वीकार कर लिया। उन्होंने गीत लिखा- **''जरा सामने तो छलिये, छुप-छुप छलने में क्या राज है, यूं छुप न सकेगा परमात्मा, मेरी आत्मा की यह आवाज है...!''** इसे जन्म जन्म के फेरे'' (1957) फिल्म में शामिल किया गया। रफी और लताजी ने इसे बड़ी तबीयत से, दर्द भरे गले से गाया था। बहुत मशहूर हुआ यह गीत। लेकिन अफसोस कि बेटा फिर भी न लौटा। मगर व्यासजी ने हिम्मत नहीं हारी। फिल्म ''रानी रुपमती'' (1959) में उन्होंने एक और दर्द भरा गीत लिखा- **''आ लौट के आजा मेरे मीत, तुझे मेरे गीत बुलाते हैं, मेरा सूना पड़ा संगीत तुझे मेरी गीत बुलाते हैं...!''** इस गीत में भी बहुत दर्द था, और कोशिश थी। इस बार व्यासजी दुआ काम कर गई। बेटा घर लौट आया। लेकिन आश्चर्य देखिये कि वियोग के यह गाने उस दौर के युवा प्रेमियों के सर चढ़कर बोलते थे। यह पंडित व्यासजी की कलम का ही जादू था।

पंडित भरत व्यास राजस्थान के चुरु इलाके से 1943 में पहले पूना आये और फिर बंबई। बहुत संघाष किया। बेशुमार सुपर हिट गीत लिखे। हिंदी सिनेमा को उनकी देन का कोई मुकाबला नहीं। एक से बढ़कर एक बढ़िया गीत उनकी कलम से निकले। आधा है चंद्रमा रात आधी.... तू छुपी कहां मैं तड़पता यहां.... (नवरंग).... निर्बल की लड़ाई भगवान से, यह कहानी है दिए और तूफान की.... (तुफान और दिया).... सारंगा तेरी याद में (सारंगा).... तुम गगन के चंद्रमा हो मैं धरा की धूल हूं.... (सती सावित्री).... ज्योत से ज्योत जलाते जाओ.... (संत ज्ञानेश्वर).... हरी भरी वसुंधरा पे नीला नीला यह गगन, यह कोई चित्रकार है.... (बूंद जो बन गई मोती).... ऐ मालिक तेरे बंदे हम.... सैयां झूठों का बड़ा सरताज निकला.... (दो आंखें बारह हाथ).... दीप जल रहा मगर रोशनी कहां.... (अंधेर नगरी चौपट राजा....) दिल का खिलौना हाय टूट गया.... कह दो कोई न करें यहां प्यार.... तेरे सुर और मेरे गीत.... (गूंज उठी शहनाई).... कैद में है बुलबुल, सैय्याद मुस्कराये.... (बेदर्द जमाने क्या जाने ?) आदि।यह अमर नगमे आज भी गुनगुनाए जाते हैं। गोल्डन इरा के शौकीनों के अल्बम इन गानों के बिना अधूरे हैं। व्यासजी का यह गीत- ऐ मालिक तेरे बंदे हम.... महाराष्ट्र के कई स्कूलों में सालों तक सुबह की प्रार्थना सभाओं का गीत बना रहा। पचास का दशक भरत व्यास के फिल्मी जीवन का सर्वश्रेष्ठ दौर था।

यह सारी बातें इसलिए क्योंकि आज 5 जुलाई को भरत व्यासजी की पुण्यतिथि थी। पंडित भरत व्यासजी का जन्म 6 जनवरी 1918 को बीकानेर में हुआ था। वे जाति से पुष्करना ब्राह्मण थे। वे मूल रुप से चूरु के थे। बचपन से ही इनमें कवि प्रतिभा देखने लगी थी। मजबूत कद काठी के धनी भरत व्यास डूंगर कॉलेज बीकानेर में अध्ययन के दौरान वॉलीबॉल टीम के कप्तान भी रह चुके थे।

सोचो--जागो-उठो-जिन शासन की सेवा और रक्षा में कूद पड़े....

जिन शासन के आगेवानों ,पदाधिकारियों को निवेद!

✻ महेन्द्र-सी-कबदी, सायला-भीकावरम

वर्तमान में जो भी प्रसंग हो रहे है- चाहे धर्मानुष्ठान हो या व्यावहारिक हो, बरबादी बहुत ज्यादा हो रही है, अगर वर्तमान में परिवर्तन न लाया तो भविष्य बहुत बुरा होगा- वर्तमान में शासन सेवा और रक्षा की जरुरत है।

वर्तमान में नये तीर्थ स्थान-मंदिरों का नव निर्माण सिर्फ नाम और कीर्ति के लिये ज्यादा बन रहे है। जहां जरुरत हो वहां अवश्य बनाओ-सिर्फतल भाग में ही बनाओ और सीमित (Limit) प्रतिमाओं को ही विराजमान करो- नई प्रतिमाएं भराने के बदले प्राचीन प्रतिमाओं को ही विराजमान करो, कई तीर्थो के भंडारों में हजारों प्रतिमाएं (विराजमान) उपलब्ध है। उपधान तप की माला के चढ़ावे न बोलकर नकरे ही नक्की करो और साधारण खाते में ही जमा करो, जब उपधान तप की माला आराधक पहनता/पहनती है तब वह आराधक श्रावक-श्राविका ही होती है, संबंधी परिवार वाले ही माला पहनते है, तो साधारण ही हुआ न !

चार्तुमास, दीक्षा, प्रतिष्ठा के प्रसंग वर्तमान में बहुत महंगे हो गये है, होड़ मत लगाओ, सीमित खर्च से ही करो। खाना (भोजन) खड़े-खड़े मत खिलाओ, सिर्फ बैठा कर ही खिलाओ और आइटम में भी सिर्फ 15 से 21 तक ही बनाओ।

आमंत्रण पत्रिका महंगी (Costly) मत छपाओ। पत्रिका में भगवान या गुरुदेव का फोटो मत छपाओ। टेन्ट लाईटिंग भी कम लगाओ।

बूके पद्धति से खिलाने से भोजन की बरबादी ज्यादा होती है, थाली धोकर पीनेवालों की समस्या भी होती है। इस पद्धति से बार-बार झूठी थाली लेकर खाना मांगना पड़ता है क्या यह उचित है ?

कोई भी चड़ावों की रकम अनुष्ठान होने के बाद तीन या छः महिनों में ही भरने का समय दो।

संघ ही सर्वोपरि है- संघ को ही बदलाव लाना है।

नये वर्ष के पंचांग भी बहुत ज्यादा छप रहे है, पहले जैसी जरुरत वर्तमान में नहीं है, छपाना ही हो तो कम संख्या में छपाओ। भगवान या गुरुदेव के फोटो मत छपाओ !

प्रभावना, प्रवचन हॉल में प्रवेश के समय ही दो बाद में देने से रोड़ पर भीड़ हो जाती है।

प्रवचन पूर्ण होने के 15 मिनिट पहले तक प्रवेशद्वार पर ही तिलक कर प्रभावना दो।

वर्तमान में सभी तीर्थों या संघ के मंदिरों में देव-द्रव्य बहुत पड़ा है, जिसका उपयोग जहां चाहिये वहां जाकर कर खर्च करो।

साधारण खाते की रकम की आवश्यकता ज्यादा है। इस विषय पर श्री संघ विचार कर परिवर्तन लाओ। साधारण रकम आवक का रास्ता ढूंढो। (मेरा विचार यह नहीं है कि देव-द्रव्य को साधारण में लो।) हर जगह साधारण खाते की ही जरुरत है।

साधु-साध्वीओं को विहार सूर्योदय के बाद ही प्रारंभ होना चाहिये और सूर्यास्त के समय तक अपने स्थान पर पहुंच जाना चाहिये।

व्हील चेयर का उपयोग भी बढ़ गया है, चाहे वह चल सकते है तो भी उपयोग कर रहे है, फोन का उपयोग भी बढ़ गया है, सभी न करने योग्य कार्य करने की सुविधा अपन ही तो दे रहे है ना ? दोषी-आशातना के भागी हम ही है।

सभी विषयों पर संघ को ही सोचना है। साधु-साध्वीओं की सलाह अवश्य लो, लेकिन निर्णय तो संघ-पदाधिकारी, आगेवान को ही लेना चाहिये। सभी विषयों पर सोचो, परिवर्तन लाओ। अवश्य ध्यान दीजियेगा।

ये सभी विचार मेरी भावना के है, किसी के प्रति विरोधाता से नहीं। - मिच्छामि दुक्कड़म् ! मिच्छामि दुक्कड़म् !! मिच्छामि दुक्कड़म् !!! जय जिनेन्द्र-जय गुरुदेव !

10 बोल दुर्लभ

1- मनुष्य भव मिलना दुर्लभ है।
2-आर्य क्षेत्र मिलना दुर्लभ है।
3- उत्तम कुल मिलना दुर्लभ है।
4- पूर्ण इन्द्रिय मिलना दुर्लभ है।
5- लम्बा आयुष्य मिलना दुर्लभ है।
6- निरोगी काया मिलना दुर्लभ है।
7- जिनवाणी का मिलना दुर्लभ है।
8- जिनवाणी सुनना दुर्लभ है।
9- जिनवाणी पर श्रद्धा रखना दुर्लभ है।
10- धर्म में पराक्रम करना दुर्लभ है।

संस्कार : जन्म-जन्मान्तरों तक साथ चलते है

कुछ दिन पूर्व तक भौतिक विज्ञानी आत्मा-परमात्मा के अस्तित्व को नकारते थे। क्योंकि उन्हें प्रत्यक्ष नहीं देखा जा सकता। पीछे विज्ञान की बाल्यावस्था विकसित हुई और उसने प्रौढ़ावस्था में प्रवेश किया। इस प्रगति चरण में मस्तिष्कीय रहस्यमय परतों की खोज की गई और उसमें अतीन्द्रिय क्षमताओं से भरे-पूरे अनेकों केन्द्र पाये गये। साधारणतया वे प्रसुप्त स्थिति में रहते है, पर कारण वश उनका उभार भी देखा गया है। ऐसा उभार जो मात्र चमत्कारी ही नहीं होता वरन् आत्मा के अस्तित्व को भी सिद्ध करता है।

मानव मस्तिष्क की रहस्यमय परतों पर प्रकाश डालने वाले विज्ञान जगत के कई ग्रन्थ बहुत प्रख्यात है। मैकलिन डिक्शन लिखित- **''दि ह्यूमन सीचुएशन एवं ऐरिक फ्रौम के ''माइकोलॉजी एण्ड रिलीजन''** में हुए विषय पर गहरा प्रकाश डाला गया है। उनने परामनोविज्ञान को विज्ञान की एक विशेषधारा के रुप में प्रतिपादित किया गया है और इस सन्दर्भ में पिछले दिनों से होती रहने वाली चर्चाओं में पुनर्जन्म को भी सम्मिलित किया है। इससे पूर्व मात्र दूर-दर्शन दूर श्रवण, विचार संचालन आदि की ही चर्चा होती रहती थी।

पुनर्जन्म की मान्यता में सबसे बड़ी अड़चन ईसाई धर्म की यह मान्यता है कि जन्म एक ही बार होता है। ऐसी मान्यताएं इस प्रतिपादन में पूर्वग्रहों के कारण बाधक होती है। इसलिए प्रयोग पतिपादनों का जब भी समय आता है तो उन क्षेत्रों के वैज्ञानिक लड़ खाड़ा जाते है और तथ्यों और सत्यों तक पहुंचने में विलम्ब कर देते हैं।

फिर भी अनेकानेक प्रमाणों ने यह सिद्ध कर दिया है कि मृत्यु के उपरान्त मनुष्य का पुनर्जन्म होना एक वास्तविकता है। इस तथ्य को गहराई से जानने के लिए यह आवश्यक समझा जाय कि इस संबंध में जो प्रमाण इस समय उपलब्ध है, उनके विचरण तैयार कराने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय प्रयत्न किये जायें। अतएव खोजी जत्थे भी इस सन्दर्भ में भेजे गये।

इस संबंध में बर्जीनिया, अमेरिका के इयान स्टीवेन्सन भारत आये थे। उनका सहयोग इस प्रसंग में रुचि लेने वाले अन्याय कितने ही मनोविज्ञानियों ने किया। भारत में प्रायः 150 से अधिक ऐसे प्रमाण पाये गये जिसमें बालकों ने अपने पूर्व जन्मों के विचरण बताये उनको अनजान स्थानों पर ले जाने पर उन्होंने अपने घर पहचाने। कुटुम्बियों से इसी प्रकार वार्तालाप किया कि मानो वे पूर्व जन्मों के संस्मरणों को भली प्रकार दुहरा सकते हैं। इतना ही नहीं, जिन वस्तुओं से उनका सीधा सम्पर्क रहा था, उन्हें भी उन्होंने बताया। वे यह भी नहीं भूले थे कि उनकी मृत्यु किन परिस्थितियों में हुई।

इन विवरणों को प्रकाशित भी किया गया है। इनमें एक विलक्षण घटना ऐसी भी है जिसमें व्यावरा (राजस्थान) की एक सौलह वर्षीय लड़की ने अपने पिछले छह जन्मों के विवरण बताये। यह विलक्षण इसलिए भी है कि आमतौर से छोटी आयु के बच्चों में ही यह स्मृतियां पाई जाती है। वे जैसे-जैसे बड़े होते जाते है, उन स्मृतियों को भूलते जाते है। इसलिए प्रायः एक ही जन्म की स्मृति ध्यान में रहती है। कई जन्मों का स्मरण रहने की बात तो कदाचित ही कभी देखने को आती है।

मनुष्य की आत्मा अमर है, उसका जीवन अनन्त है। बार-बार जन्म-मरण का चक्र तो उसी प्रकार चलता रहता है, जैसे पुराने वस्त्रों के स्थान पर नये वस्त्र पहनने पड़ते है। यदि कर्म फल सत्य है तो यह भी मानना पड़ेगा कि इस जन्म में उसे भोगे जाने में जो कमी रह गई है, अगले जन्मों में जाकर पूरी हो सके।

पुनर्जन्म का एक और भी प्रमाण है कि कुछ बच्चे साधारण विकास का क्रमशः उल्लंघन करके छोटी आयु में ही अपनी साधारण प्रतिभा का परिचय देने लगते हैं जबकि उनकी जन्म जात परिस्थितियां वैसे नहीं होती और वातावरण ही ऐसा होता है जिसमें वे असाधारण साधनों की सहायता से असाधारण उन्नति कर सकें फिर भी वे अपनी निजी प्रतिभा के सहारे प्रगति-पथ पर अन्यत्र तेजी से चले और उस स्तर पर जा पहुंचे, जहां तक लोग नहीं पहुंच पाते।

नेत्रहीनों के लिए शिक्षा में काम आनेवाली ब्रेल लिपि फ्रांस के 15 वर्षीय बालक लुइस ब्रेल ने आविष्कृत की थी। पाकिस्तान बालक मुश्ताक मुहम्मद ने 12 वर्ष की आयु में क्रिकेट खिलाड़ियों में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर ली थी।

खेल जगत का ही बोरिस वेकर (टेनिस) का एक और उदाहरण है। वैज्ञानिक जगत के यशस्वी, अलबर्ट आइस्टीन ने 16 वर्ष की आयु में सापेक्षिकता के सिद्धांत पर एक लेख था। बाद में वे उसी अन्वेषण में लगे रहे और एक अन्य भौतिकी के विषय पर नोबुल पुरस्कार प्राप्त कर सके। आस्ट्रेलिया के एक कबीले में जन्मी आदिवासी किशोरी ईवान गुलगांस ने संसार के मूर्धन्य टैनिस खिलाड़ियों में अपना स्थान प्राप्त किया था। फ्रांस में क्रान्ति का शंखनाद फूंकने और शत्रु पक्ष की जड़े हिला देने वाली **''जोन ऑफ आर्क''** जब कार्य क्षेत्र में उतरी तब मात्र 16 वर्ष की थी। 19 वर्ष की उम्र में जो उन्होंने अपने प्राण उन्मार्ग कर दिये थे। ईसाई जगत में पोप पन्थियों के गुरुडम की नींद हिला देने वाली क्रांति की आग भड़का देने वाले पादरी मार्टिन लूथर जब कार्य क्षेत्र में उतरे तब वे मात्र 20 साल के थे।

अंग्रेज वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन ने जब विकासवाद के अपने अनुपम सिद्धांतों का प्रतिपादन किया तो संसार के बुद्धिजीवी आश्चर्यचकित रह गये। तब वे मात्र किशोर अवस्था को पार करके युवक वर्ग में पहला चरण ही रख पाये थे। उतना ही नहीं उन्होंने प्राणी जगत संबंधी खोजों के सिलसिले में 25 वर्ष तक संसार भर में भ्रमण किया और खोजपूर्ण ग्रंथ **''दि औरिजीन आफ स्पेसीज''** लिखा।

अंग्रेजी साहित्य के साहित्यकार चार्ल्स डिकेन्स ने 25 वर्ष की आयु तक इतने ग्रंथ लिख दिये थे कि संसार के माने हुए लेखनी के धनी माने जाने लगे। इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री विलियम पिट जब उस महत्वपूर्ण पद पर आसीन हुए तब मात्र 24 वर्ष के थे इशाक पिट मैननेरा वर्ष की आयु में स्टेनोग्राफिक साउण्ड के संबंध में वैज्ञानिक जगत को चकित कर दिया था। अमेरिका के नीग्री धावक कार्ल लुईस ने कितने ही स्वर्ण पदक जीते, तब उसकी आयु मात्र 13 वर्ष की थी। इशाक न्यूटन जब 23 वर्ष के थे तभी उन्होंने 342 अपने प्रतिपादनों से वैज्ञानिक जगत को आश्चर्य में डाल दिया था। उनकी खोजें अभूतपूर्व मानी जाती है। अमेरिका की अंधी और गूंगी हेलन केलर ने विकलांग होते हुए भी अपनी प्रतिभा से सर्वत्र हलचल मचा दी थी। कार्टून फिल्मों के निर्माता वल्ट डिस्ने जब 22 वर्ष के थे तभी उन्होंने सिनेमा जगत को नई दिशा दी थी।

भारत के अभयकुमार, ध्रुव, प्रहलाद, लव-कुश, भरत चक्रवर्ती शंकराचार्य, कबीर, ज्ञानेश्वर, रामतीर्थ, विवेकानंद आदि छोटी ही आयु में वह कार्य करने लगे थे जो बड़ी आयु वालों के लिये भी संभव नहीं होते।

ऐसी विलक्षणताएं जिन बालकों में पाई गई है, उनके बारे में यह भी खोजा गया है कि परिस्थितियों ने उन्हें ऊंचा उठाया या अपनी जन्मजात प्रतिभा के सहारे ही वे आश्चर्यजनक प्रगति कर सकने में सफल हुए। इन विशेषताओं के कारण ढूंढने पर पूर्व जन्म की संचित प्रतिभा के अतिरिक्त और कोई कारण ऐसा नहीं दिख पड़ता जिससे उनकी विशिष्टता को सांसारिक किसी प्रयोजन के साथ जोड़ा जा सके। मनुष्य के मात्र कर्म ही अगले जन्म तक साथ नहीं चलते वरन् विद्या, योग्यता, प्रतिभा भी उसके साथ-साथ चलती है।

राजा रघु ने लोकमंगल के लिये एक बार सर्वमेध यज्ञ किया। जो कुछ भी राजसंपत्ति थी उन्होंने प्रजा के हित के लिये लगा दी। सब कुछ दान कर देने के बाद संपत्ति के नाम पर एक मिट्टी का जलपात्र और कुश का आसन शेष बचा। ऋषि कौत्स तक राजा की दानशीलता का समाचार पहुंचा। उन्हें गुरु दक्षिणा चुकाने के लिये धन की आवश्यकता थी। धन की आकांक्षा लेकर ऋषि रघु के पास पहुंचे।

वहां दृश्य दूसरा ही था। राजा सब कुछ दान कर चुके थे। स्थिति विपरीत देखकर ऋषि कौत्स ने बिना कुछ कहे वापस लौट आना उचित समझा, किंतु राजा को समझाते देन न लगी कि ऋषि किसी विशेष प्रयोजन से आए हैं। राजा ने ऋषि को वापस बुला लिया और आश्वासन दिया कि आप थोड़ी देर प्रतीक्षा करें, धन की व्यवस्था हो जाएगी। कौत्स ठहर गए। रघु ने कुबेर को संदेश भेजा। कुबेर ने स्वर्ण मुद्रओं की वृष्टि कर दी। राजा ने कौत्स को अभीप्सित धन देकर संतुष्ट किया।

कौत्स ने आश्चर्यान्वित हो तनिक-सी याचना पर राजा को इतना धन मिल जाने का रहस्य जानना चाहा। कुबेर ने कहा- ऋषिवर ! धर्म के प्रति आस्थावान व्यक्ति परमार्थ प्रयोजन के लिए जो प्रयत्न करते है उन्हें यदि सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा सहायता न दी जाए तो धनपति और धन दोनों कलंकित होने लगेंगे।

अनुसरण महामानवों का करें

अनुसरण सहज है। वह बहुमत के पीछे चलने से सम्पन्न हो जाता है। अनुसरण कठिन है क्योंकि उसके लिए श्रेष्ठ और सत्पात्रों को ढूंढना पड़ता है जो अल्पमत में तो सदा ही रहते हैं। कभी-कभी तो वे इतने कम हो जाते हैं जिन्हें अभाववत् समझा जा सके।

सरलता सबको प्रिय है। कम परिश्रम में भरपूर सुविधा की प्राप्ति यही प्राणी की इच्छा रहती है। इसकी पूर्ति हो भी जाती है किन्तु होता तभी है जब उचित अनुचित का विचार न किया जाय। जिस राह पर अधिकांश चलते हैं उसी पर चला जाए।

श्रेष्ठता और वरिष्ठता के लिए दूरवर्ती विवेकशीलता अपनानी पड़ती है। साथियों का सहयोग तकने से विमुख होना पड़ता है और वरिष्ठता की दिशा में एकाकी चल पड़ना पड़ता है।

उपलब्धियां समुचित श्रम के बदले मिलती है। किन्तु जिन्हें सुविधाओं की अत्यधिक ललक है। वे नीति अनीति के झंझट में नहीं पड़ते वरन् यह देखते हैं कि किस प्रकार सरलता पूर्वक अभीष्ट सुख साधन उपलब्ध हों। किन्तु प्रकृति के नियम कुछ और ही है।

बगुले कीड़े खाते है वे उन्हें किसी भी नमी की जगह में सरलतापूर्वक मिल जाते हैं पर जिन्हें मोतियों की तलाश है उन्हें हंसों की रीति-नीति अपनानी और मान-सरोवर तक दौड़लगानी पड़ती है। हंसों के झुण्ड नहीं होते वे कदाचित ही कहीं दिख पड़ते हैं। बुगलों के झुण्ड तालाबों और खेतों पर छाये रहते हैं। संख्या उन्हीं की अधिक है। बहुमत में वे ही हैं। उन्हीं की गतिविधियाँ सरलतापूर्वक देखी जाती है। पर हंस कहां रहते हैं, किस तेजी से उड़ते हैं, मानसरोवर में डुबकी लगाकर कितनी कठिनाई से मोती ढूंढने और उन्हें चुगने का आनन्द लेते हैं, यह किन्हीं जानकारों से पूछकर या पुस्तकें पढ़कर ही जाना जा सकता है। बगुलों की तरह उनकी गतिविधियां सर्वत्र देखने को नहीं मिलती। इसीलिए अनुकरण को सरल और अनुसरण को कठिन बताया गया है।

बहुमत प्रकृति प्रेरणा पर चलता है। भूख उनसे शारीरिक श्रम कराती है और यौवन की तरंगें मस्तिष्क की कामुकता की पूर्ति का ताना-बाना बुनने में लगती हैं। इसके उपरान्त जो क्षमता बचती है उसे कुदकने, फुदकने या आराम करने में लगाने की प्राणि प्रवृत्ति देखी जाती है। इसी धूरी पर सब का जीवन चक्र घूमता रहता है और समय आने पर उनका अन्त भी हो जाता है। यही सामान्य क्रम है। बहुतों का साथ सबको सुहाता है। चींटी दीमक तक की गतिविधियां अपनी जैसी गतिविधियों के लिए साक्षी ढूंढ लेती है। टिड्डी जब निकलती है तो खेतों और पेड़ों को पूरी तरह आच्छादित कर लेती है। किन्तु भ्रमर और कोकिलों का गूंजन सुनने के लिए पुष्पोद्यान की तलाश करते हुए वहां तक पहुंचना पड़ता है। जबकि मक्खी मच्छरों के झुण्ड किसी भी गंदी नाली के इर्द-गिर्द झुण्ड के झुण्ड भुनभुनाते हुए देखे जाते हैं।

लोग क्या करते है, क्या सोचते है ? क्या चाहते हैं ? इसका अन्वेषण किया जाय तो प्रतीत होगा कि इन्द्रिय तृप्ति और मनोवांछाओं की पूर्ति ही उन्हें अभीष्ट है। मनोवांछाओं में वह वैभव चाहिए जो वासना और तृष्णा की पूर्ति करता है। अपना आतंक दूसरों पर जमाता है। श्रेष्ठता अपनाकर दूसरों की श्रद्धा और सद्भावना जीत सकना तो किसी किसी से ही बन पड़ता है। अधिकांश अपन आक्रमकता, दुष्टता के बलबुते आतंक उत्पन्न करते और डराकर अपना वर्चस्व जमाने का प्रयत्न करते हैं। यही है सामान्य लोगों की गतिविधियां जिन्हें लोभ, मोह और अहंकार से वर्गीकृत किया जा सकता है। इसके बाद भी कुछ क्षमता भी बच सकती है तो उसे आलस्य प्रमाद और दुर्व्यसनों में व्यतीत करते हैं। न्यूनाधिक मात्रा में यही है बहुजन जीवन की रुपरेखा है।

जिन्हें दूरदर्शी प्रज्ञा प्राप्त नहीं है। वे भीड़के साथ चलते हैं। अन्धानुकरण करते हैं। फलतः दुर्बुद्धि अपनाते कुकर्म करते और कृमि कीटक स्तर का जीवनयापन करते दुनिया में मत्स्य न्याय ही चलता है। बड़ी मछली छोटी को खाती है और फिर बचती बड़ी भी नहीं। मछुओं के जाल और डोंगे उन्हें भी बटोरते और फाड़-चीरकर खा जाते हैं। मत्स्य न्याय की तरह जंगल का कानून भी है। हिंस्र जन्तु भोली प्रकृति वालों पर आक्रमण करते और अपना दर्प दिखाते, आतंक जमाते दृष्टिगोचर होते हैं।

जिन्हें नर-पशु की तरह जीना है। उनके लिए यह बहुमत का अनुसरण ही पर्याप्त है। पेट और प्रजनन ही उनका प्रिय विषय और लक्ष्य है। परिणाम सोचने की उन्हें फुरसत नहीं। नियति के चक्र से बचकर मानवी गरिमा के संबंध में सोचने और अपनाने के लिए उनका मानस ही नहीं उमंगता। निकृष्ट योनियों के संचित कुसंस्कार ही उन पर हावी रहते हैं। वे ही उनकी इच्छा आकांक्षा का निर्माण, निर्धारण करते हैं। वही उनका गतिचक्र है। मनुष्य शरीर मिल जाने पर भी सामान्य होने पर नर पशु की तरह और असामान्य होने पर नर पिशाच की तरह जीते हैं। ध्वंस और पतन ही उनकी दिशाधारी होती है। उसी में बहते हुए अपना दुर्भाग्यपूर्ण अन्त करते हैं। मनुष्यों में जो विशिष्टऔर वरिष्ठ है। उन्हें जनसाधारण का अनुकरण करने की ललक को जीतना पड़ता है और वह मार्ग अपनाते हैं

जो महामानवों ने अपनाया किन्तु कठिनाई यह है कि अपने चारों ओर हेय जीवन ही बिखरा दिखता है। सरल यही पड़ता है कि इसी हेय वर्ग की गतिविधियों का अनुकरण किया जाय। उन्हीं के संकेतों और परामर्शों का अनुगमन किया जाय। मनुष्य एक दूसरे को इसी प्रकार पतन की दिशा में खींचता और धकेलता है। शुभ चिन्तन, हितैषी, कुटुम्बी, मित्र कहलाने वाले भी यही करते है जो उन्होंने समझा, अपनाया और किया है उसके अतिरिक्त अन्य प्रकार की शिक्षा वे दें तो दें भी कैसे ? जिन्होंने आदर्शों की मात्र चर्चा सुनी है। उस मार्ग पर प्रत्यक्षतः एक कदम भी नहीं उठाया, उनसे यह आशा करना कि वे सच्चे मन से किसी को श्रेष्ठता के उस मार्ग पर चलने का प्रयत्न करेंगे या सफल होंगे, आशा नहीं ही की जा सकती। वे स्वयं जिस प्रकार के घिनौनेपन को अन्तरंग और बहिरंग में धारण किये रहे है। उनसे भिन्न प्रकार के परामर्श या सहयोग की आशा करना भी व्यर्थ है।

अनुसरण के लिए उच्च स्तरीय व्यक्तियों की तलाश करनी पड़ती है। पर वे मिलते नहीं। ऐसी दशा में विश्व इतिहास के पुष्पोद्यान में खिले हुए परिजात पुष्पों को ही ढूंढना पड़ता है। चिंतन की उत्कृष्टता, चरित्र की आदर्श वादिता और व्यवहार की शालीनता जिनने व्यवहार में अपनाई हो उन्हें खोजने के लिए हमें इतिहास के पृष्ठ पढ़ने और महामानवों के जीवन क्रम ढूंढने पड़ेंगे। आज की स्थिति में भी वे कहीं-कहीं हो सकते हैं पर उन्हें इतनी सूक्ष्म बुद्धि और गहन तत्परता से ढूंढना होगा। जैसे पर्वत शिखरों पर उगे हुए ब्रह्म कमलों को असाधारण प्रयत्न पूर्वक ढूंढना पड़ता है। अनुसरण ऐसों का ही किया जाता है। उन्हें खोज निकालना भी किसी शोध प्रबंध के लेखन में अनुसंधान भरी सफलता प्राप्त करने के ही समतुल्य है।

चमकाने वाले लोग आकर्षित तो विशेष रुप से करते है, पर उनके पीछे विषाक्तता के खतरे भी इतने छीपे पाये जाते हैं कि उनकी ओर खिंच जाना और भी अधिक अनर्थ का कारण बनता है।

मुर्दे की चिता से उंची लपटें उठते दिखाती हैं। सर्प का काय कलेवर कैसा सुहावना लगता है। छुरे की धार कैसी चमचमाती है। इनके समीप जाने और सम्पर्क साधने का मन सहज ही करता है। पर इन तथाकथित बड़े आदमियों की स्थिति और भी बुरी होती है। उनका वैभव आकर्षण ऐसा लगता है मानो यह पारस जैसे हो और उनके सम्पर्क में आने से हमें भी ऊंचा उठने का रास्ता मिलेगा किन्तु दुर्भाग्य यह है कि पानी में भंवरों और हवा में देखे जाने चक्रवातों की तरह इनमें छद्म और प्रपंच सिखाने की ही क्षमता होती है क्योंकि वे स्वयं इसी आधार का अवलम्बन करके बड़े बने होते हैं। पतन उनमें पाया जाता है जो हेय है, दीन दयनीय है। पर साथ ही बड़े भी ऐसे ही दिखाई पड़ते हैं जिन्होंने आडम्बर बनाकर अनेकों का शोषण किया है तथाकथिन बड़े आदमी भी प्रकारान्तर से हमें जो सिखाते है वह क्षुद्रजनों की नीचता से कम भयंकर नहीं होता।

ऐसी दशा में प्रश्न यही रह जाता है कि ''अनुसरण'' किसका करें, इसके लिए हमें खरा सोना परखने के लिए दहकती आग और सही कसौटी को आगे करना और उत्कृष्ता का पता लगाना पड़ेगा। यह जीवित मनुष्यों में भी कभी-कभी मिल जाती है। पर उनमें खतरा ही रहता है किन्तु चमकने वाला कांच वही चमक आने पर मात्र कांच पर नकली हीरा ही साबित न हो। मृत्यु ही जीवन के अध्याय की पूर्णता है। उसी के आधार पर यह जाना जाता है कि निजी जीवन की आदर्शवादिता और लोक व्यवहार में परमार्थ परायणता कितनी खरी और कितनी सही साबित हुई। इससे पूर्व यह आशंका ही रहती है कि कहीं जोरों से दहाड़ने वाले ढोल के भीतर खोखली चालें ही न भरी हो। यह आशंका इन दिनों और भी अधिक बढ़ गई है। लोगों ने विडम्बनाओं के अन्यान्य धंधे की जानकारी में आते जाने के कारण यह नई शैली अपनाई है कि अपने को भगवत भक्त या परमार्थ परायण लोकसेवी सिद्ध करें और इस आड़ में भावुक लोगों को चुंगल में फंसाकर अपना उल्लू सीधा करें। यह एक विचित्र समस्या है कि परमार्थ प्रदर्शन की आड़ में भी अब छल छद्म ने अपना विस्तार और जंजाल काफी मजबूत कर लिया है।

ऐसी दशा में बिना जोखिम का क्षेत्र एक ही हो सकता है जिन्होंने आदि से लेकर अन्त तक का अपना स्वरुप स्पष्ट कर दिया। हर कसौटी पर खरे सिद्ध होते रहे। उन दिवंगत महामानवों को अपना आदर्श माना जाय। उन पर श्रद्धा केन्द्रित की जाय और यथासंभव उन्हीं के परखे हुए मार्ग का अनुसरण किया जाय। व्यक्तिगत जीवन की आदर्श वादिता क्रिया-कलापों से बढ़-चढ़कर आदर्श वादिता और समय के अनुरुप क्रिया की गतिशीलता यह तीनों ही तथ्य जिनके जीवन में कितनी सीमा तक चरितार्थ हुए, उन्हें उसी अनुपात से श्रद्धा भाजन माना जाय और अन्तःकरण में श्रेष्ठता का अवलम्बन करने का उत्साह उठे तो उन्हीं लोगों की दिशाधारा का अवलम्बन किया जाय। भले ही वे शरीर धारण किये हुए हों या उसका परित्याग कर चुके हों।

महामानवों का अनुसरण ही हमारे लिए श्रेयस्कर है। उन्हीं की तरह अपनी जीवनचर्या का स्वरुप निर्धारित करें और उस लक्ष्य तक पहुंचे, जहां तक वे पहुंच चुके। इसी में अपनी विवेकशीलता और जीवनचर्या की सार्थकता है। न हमें उदर परायणों, दीन-हीनों की तरह जीना चाहिए और उन पाखण्ड्यिों की तरह जो अपनी कथनी और करनी में जमीन आसमान जैसा अन्तर बनाये रह रहे हैं।

अष्ट महाप्रतिहार्य, 34 अतिशय के धारी भगवान श्रीमहावीर स्वामी

✻ शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर

तीर्थंकर की महिमा भारी, चौतीस अतिशय धारी,
आठ महा प्रतिहार्य से शोभे, कीर्तन की नहीं शक्ति हमारी।

श्रमण भगवान श्रीमहावीर स्वामी वर्तमान जिनशासन के विषय में धर्म की आदि करने वाले धर्मतीर्थ की स्थापना करनेवाले, स्वयं संबुद्ध अर्थात् अपने आप ही बोध पाये हुए पुरुषों में उत्तम, पुरुषों में सिंह के समान पुण्डरीक श्रेष्ठ कमल के समान, प्रधान गंधहस्ती के समान, लोक में उत्तम, लोक के नाथ, लोक का हित करनेवाले, लोक के लिये दीपक समान, लोक में उद्योत करनेवाले, जीवों को अभयदान देने वाले, ज्ञान रुपी यक्षु देनेवाले मोक्ष मार्ग और शरण देनेवाले सम्यक और ज्ञान रुप जीवन देनेवाले, बोधि सम्यक्त्व देनेवाले, चारित्र धर्म और श्रुत चारित्र धर्म का उपदेश देने वाले, धर्म के नायक, धर्मरुपी रथ के सारथी, चार गति का अंत करने वाले, धर्म रुप चक्र को धारण करने वाले होने से धर्म के श्रेष्ठ चातुरंत चक्रवर्ती संसार समुद्र में द्वीप के समान रक्षक रुप, शरणभूत गति रुप, संसार सागर में गिरते प्राणियों के लिये आधार रुप, अप्रतिहत बाधा रहित पूर्ण ज्ञान दर्शन को धारण करनेवाले, छद्मस्थपने से निवृत्त होनेवाले स्वयं राग-द्वेष को जीतनेवाले, दूसरों को राग-द्वेष जिताने वाले स्वयं संसार समुद्र से तिरनेवाले और दूसरों को तिरानेवाले स्वयंमेव बोध को प्राप्त करने वाले, दूसरों को बोध प्राप्त करानेवाले, स्वकर्म बंधन से मुक्त होकर दूसरों को भी कर्म बंधन से मुक्त करानेवाले सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, शिवकल्याण स्वरुप, निरुपद्रव, अचल-स्थिर, रोग रहित, अनंत-अंतरहित, अक्षय विनाश रहित, बाधा पीड़ रहित, पुनरागमन रहित, सिद्धगति रुप शाश्वत स्थान को प्राप्त होने के अभिलाषी भगवान महावीर स्वामी को वंदन।

भगवान श्रीमहावीर स्वामी के अष्ट महाप्रतिहार्य है:-

1- दिव्य सुशोभित स्फटिक **सिंहासन** जिस पर बैठे प्रभु पद्मासन।

2- त्रिभुवनपति **त्रिछत्र** बिराजे, अविकल आभा से रवि लाज।

3- **वृक्ष अशोक** बारह गुन ऊंचा, तन, मन, शोक हरन में सच्चा।

4- **भामण्डल** की शोभा न्यारी, श्रीमहावीर प्रभु अतिशय धारी।

5- खड़े देव जो **चामर** ढोले, श्रीमहावीर की महिमा बोले।

6-**दिव्य ध्वनि** दे रही सुनाई सुरनर तिरि सुनते पुल्लकाई।

7- **देव दुंदभि** देव बजाते, दिग् दिगन्त भूतल गूंजाते।

8- **सुमन** सुगंधित आचित्त बरसे, बारह परिषद तन-मन तरसे।

बुद्धातिशेष- तीर्थंकर भगवंतों के वैसे अतिशय अनन्त होते हैं। उत्तराध्ययन सूत्र के 22 वें रथनेमीय अध्ययन में- ''अट्ठसहस्स लवखण धरो गोयमोकाल गच्छती'' गाथा 5 में तीर्थंकर भगवान श्रीअरिष्टनेमिजी के शरीर के बाहरी 1008 लक्षण होते हैं, उसी प्रकार आंतरिक लक्षण अनंत होते है किन्तु तीर्थकर भगवंतों के 34 अतिशय बताये हैं।

श्री निस्यावलिका सूत्र

1. त जहां- (1) काले (2) सुकाले (3) महाकाले (4) कण्हे (5) सुकण्डे (6) तहा महाकाण्हे (7) वीरकण्हे (8) य बोद्धव्वे रामकण्हे (9) तहेव या पिउसेणकण्हे नवमे (10) दसमे महासेणकाण्हे उ ॥

चेडा राजा और काणिक के बीच महा संग्राम में श्रेणिक महाराजा के काल आदि 10 पुत्रों मरकर नरक में गए और पूर्व की साधना के बल से नरक में से निकलकर महाविदेह क्षेत्र में दीक्षा ग्रहण कर के मोक्ष में जाएंगे।

क्रोधः वैर-लड़ाई का परिणाम बुरा ही होता है, चेडा और कोणिक की लड़ाई (युद्ध) में 1,80,00,000 सैनिक मरकर प्रायः नरक गति में गए।

हमारी साहित्यिक विरासत

✻ आचार्य विजय मुनिचंद सूरी

श्रुत संशोधन पर विचार करते समय हस्तलिखित प्रतों के विषय में पहले विचार किया जाना चाहिये, यह होना स्वाभाविक भी है।

हस्त लिखित प्रतों के इतिहास और प्रतों के सूची पत्रों पर गणिवर्य श्री वैराग्यरति विजयजी म.सा. ने जो लेख लिखा है यह उसका संक्षिप्त रुप है।

✻ भारत में वर्तमान में एक करोड़ हस्त लिखित प्रत है। भारत तथा भारत से बाहर 10 लाख से अधिक हस्तलिखित प्रत जैन साहित्य में उपलब्ध है।

✻ जैनों की संख्या अत्यधिक कम, एक प्रतिशत से भी कम होने के बाद भी जैन साहित्य में 10 प्रतिशत हस्तलिखित प्रतों का होना हमारे लिये गौरवान्वित होने वाली बात है।

प्राचीन उपलब्ध सूची पत्रों में ''बृहट्टिप्पनिका'' प्रख्यात है इसके बाद अंग्रेजों ने मुद्रित सूची पत्रों का काम किया इसके साथ भारतीय विद्वानों के योगदान से इस काम में बहुत तेजी आ गई इसकी जानकारी इस प्रकार मिलती है -

कील्होर्न रिपोर्ट ई.सं. 1869 से 82 पांच भाग। बुल्हेर की रिपोर्ट ई.सं. 1870 से 80- आठ भाग। पीटरसन की रिपोर्ट ई.सं. 1882 से 98- छह भाग। भांडारकर रिपोर्ट ई.सं. 1879 से 91 तक छः भाग एवं मित्रा रिपोर्ट के दस भाग।

इसके बाद एच.डी.वेलणकर नाम के एक विद्वान हुए उन्होंने इस क्षेत्र में प्रयास किया कि किस ग्रंथ की हस्तलिखित प्रत किस-किस भंडार में है इसलिये अनेक सूचीपत्र देखने पड़ते है। यह कार्य समय साध्य- श्रम साध्य होने से बहुत कठिन था। इसके स्थान पर एक संकलित सूची पत्र बनाया जाना चाहिये। इसके लिये वेलणकर महोदय ने जिनरत्न कोष भाग-1 में अकरादि क्रम में ग्रंथ का नाम एवं ग्रंथ जिस भंडार में हो, उसका सांकेतिक नाम आदि पर काम किया।

इसके दूसरे भाग में ग्रंथकारों (लेखकों) की सूची बनाने की वेलणकर की योजना थी जो पूरी नहीं हो सकी।

जिनरत्न कोष भाग-1 को प्रकाशित हुए पचास से अधिक वर्ष हो गये है इसमें आज अनेक सुधार, वृद्धि, संशोधन करने पड़े ऐसी स्थिति है। गणिवर्य वैराग्यरति विजयजी म.सा. के मार्गदर्शन प्रेरणा से श्रुत भवन पूना द्वारा वर्धमान जिनरत्न कोश की योजना को क्रियान्वित किया गया है।

हमारे पास जो हस्तलिखित साहित्य उपलब्ध है इसमें गुजराती मारुगुर्जर साहित्य के अलावा 8 करोड़ प्रत का अन्य साहित्य है।

गणि वैराग्यरति म.सा. के द्वारा इस क्षेत्र में किये गये कार्य के अनुसार 300 श्रमण-श्रमणी एवं 500 पंड़ित निरंतर रोज आठ-आठ प्रत के पाने खोजे तो भी तीस वर्ष इन ग्रंथों पर काम में लग सकते है।

अंदाज से 15 हजार ग्रंथ जैन साहित्य के है इसमें से कितने प्रकाशित है तथा कितने अप्रकाशित है, यह जानकारी नहीं है यह बहुत कठिन कार्य है, श्रमण-श्रमणी इन प्राचीन लिपियों को जानने के अभ्यास के साथ इनकी प्रतिलिपि बनाने के कार्य में सहयोगी बने पाठ भेद के कार्यों में जुड़े, तथा संशोधन करें तो यह कार्य आसन हो सकता है।

फूल सफेद ही थे

अयोध्या में राज्याभिषेक होने के बाद एक दिन राज्यसभा में लंका की चर्चा होने लगी। हनुमान कहते थे कि अशोक वाटिका में कमल के फूल लाल रंग के थे। सीताजी कहती थी कि सफेद रंग के थे।

हनुमानजी हठ करने लगे कि मैंने अपनी आँखों से लाल कमल देखे थे, मैं कैसे मानूं कि वे सफेद थे। सीताजी ने कहा- मैं इतने दिन अशोक वाटिका में रही, रोज ही सफेद कमल देखती थी, वे लाल कैसे हो सकते हैं!

रामचंद्रजी ने विवाद को सुलझाते हुए कहा- फूल वस्तुतः सफेद ही थे, पर उस समय हनुमानजी को क्रोध आ रहा था। आँखों की लाली कमलों में प्रतिर्बिंबित होने से वे उन्हें लाल ही दिखते थे। अपने भीतर जो होता है वही बाहर भी दिखाई देता है।

विश्वरत्न : जल्दी उठ मेरे पास समय नहीं है !

✻विश्वरत्नसागर सूरीश्वर

चार्तुमास के लिये सजे पंडाल निर्जिव दिखाई देने लगे थे, जो चौराहे, ढोल ढमाकों की आवाज से गुंजते थे, शांत और सुनसान दिखाई दे रहे थे, भक्तों और धर्मिष्ठों के चेहरे उदास और कांतिहीन दिखाई देने लगे थे, कुछ उदासी पूज्य गुरुदेव के गुरुकुल के सभी शिष्य -प्रशिष्यों में भी दिखाई देने लगी थी, **पिछले पांच माह से जिस नगर में धर्म का जागरण अभियान चल रहा था अब वह सब कालजयी होने जा रहा था, कारण स्पष्ट था चार्तुमास उपधान सब कुछ पूर्ण होने के बाद अब यहां से हमारा विहार होने वाला था।** धर्म-अध्यात्म के जगत में चैन्नई का इतिहास लिखा जा चुका था। **विराट और विहंगम रुप से हुआ चैन्नई चार्तुमास अब यादगार और ऐतिहासिक स्वरुप में लोगों के हृदय में बना रहेगा।**

निर्विकारी, निराकुल और निस्पृही अनासक्त महायोगी गुरुदेव को चैन्नईवालों ने चार्तुमास में अजमा लिया था, जो सोचा था उससे अधिक उस गुरुदेव में पाया था। **आध्यात्म की गहरी साधना में डूबे गुरुदेवश्री अलौकिक, शालीनता सर्वहित साधक ,क्षमा, शील, समताधारी साधक अब चैन्नई से बिदा होने की तैयारी में था,** सभी को ज्ञान हो गया था कि श्रवण संस्कृति के ऊर्जावान आचार्यश्री आदि साधु मंडल का विहार आनेवाली सुबह होने वाला है तो बड़ी संख्या में भक्त एकत्र हो गये थे, चारों ओर निराशा और मन को आर्द्र करने वाला वातावरण बन गया था, सबके मन भारी हो गये थे। पूज्यश्री भी उदास और थके हुए दिखाई दे रहे थे, सभी को अपनी अमृतवाणी से संबोधित करते हुए गुरुदेव ने आर्शीवचन देते हुए कहा- सभी अपना आत्मचिंतन कर आत्म कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़े जीवन के अमूल्य क्षणों को व्यर्थ नहीं जाने दें। इसके बाद गुरुदेव ने सभी को मांगलिक सुनाई और धीर गंभीर वातावरण के बीच विहार आरंभ किया, हम वेलुर की ओर जा रहे थे।

विहार यात्रा के दौरान भी भक्तों का निरंतर आगमन होता था। सबसे बातचीत चर्चा होती थी, सभी की इच्छा थी कि वेलुर का महालक्ष्मी स्वर्ग मंदिर का अवलोकन करेंगे, चैन्नई और वेलुर आदि स्थान के श्रावकों ने महालक्ष्मी मंदिर का निर्माण करानेवाले संत स्वामीजी से गुरुदेव की भेंट कराने का प्रबंध भी कर दिया था।

विहार यात्रा के दौरान गुरुदेव का स्वास्थ्य नरम-गरम दिखाई दे रहा था, हम लगभग वेलुर के निकट पहुंच गये थे, **डॉक्टर से गुरुदेव का परीक्षण करवाने पर पथरी की शिकायत है, यह ज्ञात हो गया था और उसके अंतर्गत ही दवाई आदि गुरुदेव ले यह प्रबंध भी हो गया था, पेट तीव्र पीड़ा के साथ दर्द गुरुदेव को बेचैन कर रहा था, अत्यधिक पीड़ा में भी अपनी नियमित धर्म क्रिया को आपने नहीं रोका था,** मैंने गुरुदेव को हॉस्पिटल भर्ती करने का प्रबंध कर लिया था, गुरुदेव ने इन्कार कर दिया कि मैं भर्ती नहीं होऊंगा। दर्द बैचेनी और पेट की पीड़ा से गुरुदेव अत्यन्त व्यथीत दिखाई दे रहे थे, मैं निरंतर साहेबजी के निकटही था। गुरुदेव से सब आग्रह कर रहे थे कि हॉस्पिटल में भर्ती होना ठीक रहेगा परन्तु **गुरुदेव किसी प्रकार की परबस्ता स्वीकार करने को राजी नहीं दिख रहे थे।**

गुरुदेव के द्वारा देहत्याग के तीन दिन पूर्व हम लोग एक स्थान पर रुके हुए थे,रात का समय था गुरुकुल के सभी संत आराम में चल रहे थे, गुरुदेव भी आंख बंद कर आराम कर रहे थे, पर शायद पेट दर्द की बैचेनी से नींद खुल रही थी। मैं भी सो रहा था कि अचानक रात को दो-तीन बजे के समय गुरुदेव ने मेरे समीप आकर आवाज लगाई- विश्वरत्न। पहली आवाज सुनते ही मैं तुरन्त उठा और गुरुदेव से बोला- म्हारा साहेब ! क्या बात है ? पेटदर्द कर रहा है क्या ? अभी तो 2-3 बजे का समय हो रहा है। बोलो साहेबजी, तो **साहेबजी बोले- विश्वरत्न ! तू जल्दी उठ मेरे पास समय नहीं है। मैंने फिर पूछा-क्या बात है साहेबजी ! अभी कहां चले ? अभी तो विहार का समय भी नहीं हुआ है।** पूज्यश्री के चेहरे पर मुझे बैचेनी दिखाई दे रही थी, **पूज्यश्री पुनः बोले-विश्वरत्न तू जल्दी से उठ मेरे पास समय नहीं है। मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था, इतनी रात में क्या करुं ? मैं शीघ्रता से उठा और गुरुदेव को पाट पर बैठाया फिर पूछा—क्या**

बात है ? म्हारा साहेबजी ! डॉक्टर को बुला लेते है, हॉस्पिटल में भर्ती होना अच्छा रहेगा। ईलाज अच्छी तरह से हो जायेगा। **पता नहीं क्या बात थी ? गुरुदेव तो बस एक ही बात की रट लगाये हुए थे। विश्वरत्न ! चल तू मेरे पास समय नहीं ?** हम सभी परेशान हो गये थे, क्या करें ? समझ में नहीं आ रहा था। मैंने कहा, साहेब ! कल हॉस्पिटल में भर्ती हो जाना अच्छा रहेगा। ईलाज के बाद महालक्ष्मी मंदिर और संत स्वामीजी से मिलने भी जाना है, उनसे समय मिल गया है, पर गुरुदेव ने सबके लिये मना कर दिया, हम सबने निश्चय किया कि गुरुदेव को हॉस्पिटल में भर्ती करवा देंगे और डॉक्टर जो कहेगा वैसा आगे करेंगे, **गुरुदेव की स्थिरता देख हम सब चिंतित हो रहे थे। यह क्या हो रहा है ?अचानक गुरुदेव क्यों इस तरह की बात कर रहे है। गुरुदेव लगातार मुझे उनके पास रहने का बोलते रहते अगर मैं दिखाई नहीं देता तो सबसे पूछते- विश्वरत्न कहां है ?**

प्रातः लिये निर्णय के अनुसार गुरुदेव को हॉस्पिटल में भर्ती करवा दिया यहीं नहीं गुरुदेव का स्वास्थ्य ठीक हो इसके लिये डॉक्टरों से सब चर्चा भी कर ली। हॉस्पिटल में गुरुदेव को ग्लुकोज की बाटल चढ़ाई गई। गुरुदेव के प्रति हम सब चिंतित हो रहे थे, डॉक्टर ने पथरी बताई थी उसी से आपको पेट दर्द हो रहा था, दर्द की तीव्रता से बहुत ही बैचेनी थी। ईलाज चल रहा था। **हम सब बदहवास से हो गये थे कि गुरुदेव को यह क्या हो गया है ? सम्पूर्ण संयम जीवन में गुरुदेव ने कभी भी साधु जीवन की मर्यादा भंग नहीं किया, कभी आने-जाने में वाहन का उपयोग नहीं किया, यहां तक कि आराधना का बस्ता भी किसी को उठाने तक नहीं दिया, जब अपने आपको हॉस्पिटल में पाया तो गुरुदेव बहुत ही दुःखी हुए** और **आदेशात्मक स्वर मे बोले- मुझे यहां से जाना है, यहां नहीं रहना है। हमारे लिये यह स्थिति अत्यधिक विकट थी। विश्वरत्न ! मुझे यहां नहीं रहना है, यहां से चले। गुरुदेव की बच्चों जैसी जिद से हम भी परेशान हो गये थे। कर क्या सकते थे ?** सुबह डॉक्टर से छुट्टी ले क्या कर विहार की योजना बन गई, वेलुर तक जाने का भाव था। **गुरुदेव ने इस विकट स्थिति में मेरे प्रति जो भाव प्रकट किया वह मेरे जीवन की सम्पत्ति बन गया है।** ऐसे मानवता के मसीहा वात्सल्य के सागर, श्रमणत्व के संरक्षक साधना और संकल्प के हिमालय, समता की वसुंधरा, अध्यात्म के अनंत प्रकाश करुणा की प्रतिमूर्ति सम्यक, दृष्टा आत्म साधक के चरणों में नमन करता हूं- **हे गुरुदेव ! आपने मेरे तुच्छ हृदय में जो प्रेम प्रकट किया है उसे जीवन की अंतिम सांस तक संभाल कर रखुंगा। आपका आर्शीवाद मुझ पर बनाये रखे।**

एक वृद्ध सड़क के किनारे पड़ा था। वृद्धावस्था के कारण कुछ काम नहीं कर सकता था और खाने को उसके पास कुछ था नहीं। कोई कुछ डाल जाता, वही खा लेता था। एक बच्चा उधर से आया करता था। वह प्रतिदिन बुड्ढे को अपने खाने में से कुछ अंश दिया करता था, पर उस दिन वह स्वयं भी भूखा था, क्योंकि घर में कुछ न था।

बच्चे को देखते ही बुड्ढे ने हाथ उठाए। बच्चे ने कहा- बाबा! आज तो मेरे पास भी देने को कुछ नहीं है। वृद्ध की आंखें भर आई उसने कहा- बच्चे तूने आज वह सब दे दिया, जो अब तक किसी ने नहीं दिया था।

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लिये:-

बैंक का नामः- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)

खाताः- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं.:- 06800200001425 IFSC Code:- IOBA0000680

उठो और जागो और तब तक रुको नहीं जब तक की तुम अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेते

✻सिया पोखरणा

मैं दीपावली पर घर में होने वाली साफ-सफाई के काम में मम्मी की मदद कर रही थी तभी अचानक मुझे पुरानी किताबों के बीच में स्वामी विवेकानंदजी से सम्बघित एक छोटी सी पुस्तिका दिखाई दी मै सहज रुप से उस पुस्तिका को खोल कर उसके पन्ने पलटने लगी तभी मेरी नजर स्वामी विवेकानंदजी के कुछ अमृत वाक्य पर पडी जो पहला वाक्य था जिसने मुझे पूरी पुस्तिका पढने पर मजबुर कर दिया वह वाक्य यह था कि-**उठो और जागो और तब तक रुको नहीं जब तक की तुम अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेते** । इस वाक्य ने मेरे जीवन की दशा और दिशा बदलने के साथ साथ ही मेरे जीवन के लक्ष्य और जीवन के महत्व को समझा दिया यही नही मुझे अपने जीवन में किस तरह से आगे बढना है इसके लिये क्या करना है ? यह भी मुझे समझ में आ गया जीवन जीने का उद्देश्य कैसे पूर्ण करना ? इसका मार्ग दर्शन स्वामी विवेकानंदजी के इस अमृत वाक्य में मुझे मिल गया।

एक बार में रेल्वे स्टेशन अपने परिचित को छोडने के लिये गई थी रेल आने कुछ समय था तो मैंने बुक स्टाल पर फिर से स्वामी विवेकानन्दजी से सम्बघित पुस्तक देखी तो उसे खरीद लिया अब घर जाकर पुस्तक पढने को बैचेन हो गई धर आकर मैंने एकांत मे बैठकर पूरी पुस्तक पढने की ठान ली। उसमें एक कहानी थी जिसे पढकर मुझे लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित कर लक्ष्य कैसे प्राप्त करना और जीवन में सफलता प्राप्त करने का रहस्य मिल गया वह कहानी यह थी-

एक बार स्वामी विवेकानन्दजी अपने आश्रम में सो रहे थे कि तभी एक व्यक्ति उनके पास आया जो कि बहुत दुःखी थ और आते ही स्वामी विवेकानन्दजी के चरणों में गिर पड़ा और बोला महाराज मैं अपने जीवन में खूब मेहनत करता हूं हर काम खूब मन लगाकर भी करता हूं फिर भी आज तक मैं कभी सफल व्यक्ति नहीं बन पाया।

उस व्यक्ति की बातें सुनकर विवेकानन्द ने कहा- ठीक है। आप मेरे इस पालतू कुत्ते को थोड़ी देर तक घुमाकर लाये तब तक आपके समस्या का समाधान ढूंढता हूं, इतना कहने के बाद वह व्यक्ति कुत्ते को घुमाने के लिये चला गया और फिर कुछ समय बीताने के बाद वह व्यक्ति वापस आया है। तो स्वामी विवेकानन्दजी ने उस व्यक्ति से पूछा कि- यह कुत्ता इतना हॉफ क्यों रहा है। जबकि तुम थोड़े से भी थके हुए नहीं लग रहे हो आखिर ऐसा क्या हुआ ?

इस पर उस व्यक्ति ने कहा कि -मैं तो सीधा अपने रास्ते पर चल रहा था जबकि यह कुत्ता इधर उधर रास्ते भर भगता रहा और कुछ भी देखता तो उधर ही दौड़ जाता था, जिसके कारण यह इतना थक गया है। इस पर स्वामी विवेकानन्दजी मुस्कुराते हुए कहा -बस यही तुम्हारे प्रश्नों का जवाब है, तुम्हारी सफलता की मंजिल तो तुम्हारे सामने ही होती है लेकिन तुम अपने मंजिल के बजाय इधर उधर भागते हो जिससे तुम अपने जीवन में कभी सफल नहीं हो पाए, यह बात सुनकर उस व्यक्ति को समझ में आ गया था कि- यदि सफल होना है तो हमें अपने मंजिल पर ध्यान देना चाहिये।

यही नही स्वामी विवेकानंदजी के जीवन से सम्बधित अन्य प्रसंग पढकर गुरु ओर अपने से वरिष्ठ बडे-बुर्जुगों के प्रति अपना व्यवहार ओर सम्मान कैसे रखना चाहिये यह सीख भी मुझे मिली तब से मैं अपने से बडे लोगो के प्रति ओर अधिक सम्मान का भव रखने रखी शायद स्वामी विवेकानंदजी मेरे जीवन में पुस्तक के रुप में आकर मुझे जवन कैसे जीना यह संदेश ही देने आये थे। गुरु के प्रति निष्ठा कैसे प्रकट करना उसे स्वामी विवेकानंदजी के जीवन से सम्बधित इस घटना से समझा जा सकता है-

निष्ठा-

एक बार किसी शिष्य ने गुरुदेव की सेवा में घृणा और निष्क्रियता दिखाते हुए नाक-भौं सिकोड़ी। यह

देखकर विवेकानन्द को क्रोध आ गया। वे अपने उस गुरु भाई को सेवा का पाठ पढ़ाते हुए गुरुदेव की प्रत्येक वस्तु के प्रति प्रेम दर्शाते हुए उनके बिस्तर के पास रक्त, कफ आदि से भरी थुकदानी उठाकर फेंकते थे। गुरु के प्रति ऐसी अनन्य भक्ति और निष्ठा के प्रताप से ही वे अपने गुरु के शरीर और उनके दिव्यतम आदर्शो की उत्तम सेवा कर सके। गुरुदेव को समझ सके और स्वयं के अस्तित्व को गुरुदेव के स्वरुप में विलीन कर सके और आगे चलकर समय विश्व में भरत के अमूल्य आध्यात्मिक भंडार की महक फैला सके। ऐसी थी उनके इस महान व्यक्तित्व की नींव में गुरुभक्ति, गुरुसेवा और गुरु के प्रति अनन्य निष्ठा जिसका परिणाम सारे संसार ने देखा। स्वामी विवेकानन्द अपना जीवन अपने गुरुदेव रामकृष्ण परमहंस को समर्पित कर चुके थे। उनके गुरुदेव का शरीर अत्यन्त रुग्ण हो गया था। गुरुदेव के शरीर-त्याग के दिनों में अपने घर और कुटुम्ब की नाजुक हालत व स्वयं के भोजन की चिंता किये बिना वे गुरु की सेवा में सतत संलग्न रहे।

विवेकानन्द बड़े स्वप्नदृष्टा थे। उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी जिसमें धर्म या जाति के आधार पर मनुष्य में कोई भेद न रहे। अध्यात्मवाद बनाम भौतिकवाद के विवाद में पड़े बिना भी यह कहा जा सकता है कि समता के सिद्धांत का जो आधार विवेकानन्द ने दिया उससे सबल बौद्धिक आधार पर शायद ही ढूंढा जा सके। विवेकानन्द को युवकों से बड़ी आशाएं थी। आज के युवकों के लिये इस ओजस्वी संन्यासी का जीवन एक आदर्श है। मैने भी स्वामी विवेकानन्दजी को अपने जीवन का आदर्श मान लिया है।

आईय स्वामी विवेकानन्दजी के दिये गये योगदान पर भी कुछ चर्चा कर ले-

विवेकानन्द का योगदान तथा महत्वः-

उन्तालीस वर्ष के संक्षिप्त जीवनकाल में स्वामी विवेकानन्द जो काम कर गए, वे अपने आनेवाली अनेक शताब्दियों तक पीढ़ियों का मार्गदर्शन करते रहेंगे।

तीस वर्ष की आयु में स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो, अमेरिका में विश्व धर्म सम्मेलन में हिंदू धर्म का प्रतिनिधित्व किया और उसे सार्वभौमिक पहचान दिलवाई। गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर ने एक बार कहा था- ''**यदि आप भारत को जानना चाहते हैं तो विवेकानन्द को पढ़िए। उनमें आप सब कुछ सकारात्मक ही पाएंगे, नकारात्मक कुछ भी नहीं**।''रोमां रोलां ने उनके बारे में कहा था- ''**उनके द्वितीय होने की कल्पना करना भी असंभव है। वे जहां भी गए, सर्वप्रथम हुए। हर कोई उनमें अपने नेता का दिग्दर्शन करता। वे ईश्वर के प्रतिनिधि थे और सब पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेना ही उनकी विशिष्टता थी** हिमालय प्रदेश में एक बार एक अनजान यात्री उन्हें देखकर ठिठककर रुक गया और आश्चर्यपूर्वक चिल्ला उठा, '' **शिव !**'' यह ऐसा हुआ मानो उस व्यक्ति के आराध्य देव ने अपना नाम उनके माथे पर लिख दिया हो।'' **स्वामी विवेकानन्दजी के विचारों को अपने जीवन मे उतार कर हम अपने जीवन को बहु उपयोगी बना सकते है मै स्वामी विवेकानन्दजी के जीवन को जानकर बहुत ही प्रभावित हुं ओर स्वामी विवेकानन्दजी के द्वारा कही गई बातों को अपने जीवन के लिये उपयोगी बनाने के लिये प्रयास कर रही हुं।**

क्रोधी

एक जंगल में एक सिंह रहता था। प्रायः सिंहों का स्वभाव होता है कि वे हिंसक वृत्ति के होते हुए भी अकारण हिंसा नहीं करते। किंतु यह सिंह बड़ा अहंकारी था और प्रकृति के नियम का अपवाद करता था। जंगल के सारे जानवर परेशान थे। अस्तु, एक छोटे से खरगोश ने उसे खत्म करने का निश्चय कर लिया। उसने बुद्धि का सहारा लिया और एक दिन उस दुर्बुद्धि सिंह का विनाश कर दिया। उसने शेर की माँद के पास एक छोटा बिल बनाया और उसमें बैठकर उसे गाली देने लगा। शेर ने सुना तो क्रोध से पागल हो गया। शेर बिल के भीतर तो घुस नहीं सकता था, इसलिये बिल के मुंह पर बैठकर उसके निकलने की प्रतीक्षा करने लगा। फ्ल यह हुआ कि चार-छह दिन बाद भूखा-प्यासा क्रोधी सिंह तड़प-तड़पकर मर गया। उसका क्रोध स्वयं उसे ही खा गया। क्रोधी की यही दशा होती है।

नमो लोए सव्व साहूणं

✻ सकल संघ हितेषी आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी महाराज

पंच परमेष्टि का हमारे जीवन पर अनंत उपकार है। हम इतनी आराधना, तप, जप और साधना करते है उसके ब ाद भी सर्वरुप से परमेष्ठी का भाव हमारे ध्यान में नहीं आया है। सूत्र में सुधर्म स्वामी पंच परमेष्ठी की पूज्यता, महानता आदि के ब ारे में बताने का प्रयास कर रहे है। आज तक हमने नवपद के बारे में जो समझा वह पूर्ण नहीं है।

पांचवाँ पद नमो लोए सव्व साहूणं । सबमें दो शब्द है इसमें चार शब्द है। सव्व शब्द से इतनी विशालता महापुरुष ने स्थापित की है इसमें इसी विशालता के साथ साधु भगवंत को नमस्कार किया गया है। सर्व का अर्थ---- यह महत्वपूर्ण समझ कर इस सविवास तीर्थंकरा अर्थ होता है, तीर्थंकर भगवान को परमेष्ठी से नमस्कार करते है, जगत में 56 लाख से अधिक जोगी है पर यह सिर्फ जैन साधु को नमस्कार करते है। साध याने व्यापक जम्बुद्वीप भरत क्षेत्र अर्ध पुष्कारावृत्त हो सभी साधुओं को। महाविदेह क्षेत्र में रहे हुए इसमें आ गये है उन्हें सबको इस पद से नमस्कार किया गया है। स्वयं बुद्ध कौन बने? संसार को छोड़कर साधुत्व ग्रहण करने वाले प्रत्येक बुद्ध -बुद्ध योगी है।

तीर्थंकर स्वामी स्वयं बुद्ध है, केवल ज्ञान की प्राप्ति के पहले परमात्मा नमो लोए सव्व साहुणं पद में ही होते है, साधु पद ग्रहण किये बगैर अरिहंत बन नहीं सकते। तीर्थंकर की आत्मा के लिये भी साधु पद आवश्यक है। परमात्मा की आज्ञा को सुनकर रत्नत्रयी की आराधना में अपने को लगाते है। साधु का काम है सुनना, सुनकर, उपदेश बाद में देना है जो सुने नहीं वह साधु नहीं हो सकता है।

लोए-लोक में रहे हुए साधु को हम नमस्कार करते हैं। केवल यह शब्द साधु पद में सम्मिलित किया गया है। आचार्य, उपाध्याय, पंन्यास गुरु परम्परा अनुसार विशिष्ट कोटि का मंत्र है, देव भी इनका अपहरण नहीं कर सकते है। लोक में ही नहीं तीन लोक में कहीं भी रहनेवाले साधु हो हम उन्हें वंदन करते हैं।

साधु का, साहुणं का अर्थ क्या है ? सहाय करें वह साधु। ऐसे साधुओं को हम वंदन करते है, रत्नत्रयी की आराधना में हमें सहाय करें वह साधु। ऐसे साधुओं को हम वंदन करते है, रत्नत्रयी की आराधना में हमें सहाय करें, अरिहंत के मार्ग पर चलने वाले साधु होते है।

पंचश्रुत महास्कंद :-

पंच परमेष्ठी को नमस्कार करने से हमें लाभ क्या है। श्रद्धा से निगाह डाले तो फायदा-फायदा है। आंतरिक भाव में जाए तो एक अक्षर से सात सागरोपम के पाप का नाश हो सकता है। भाव से गिनने पर या ऐसे ही गिनने पर नवकार की माला लोग 2,3,5 मिनिट में पूरी कर लेते है, यह कैसे संभव है ? शास्त्र में बात आती है 16833 हाथी प्रमाण 14 पूर्व स्याही से (सूखी) स्याही से, इससे इतना ही जल और मिलना चाहिये और जब तक स्याही समाप्त नहीं हो जाये, खत्म नहीं हो जाये, ग्रंथ लिखे जाये तो कितने ग्रंथ लिखे जा सकते है ? एक हाथी से अगर हमारा जीवन पूर्ण हो जाए तो महाविदेह का मनुष्य जो 500 धनुष का है तो वहां का हाथी कितना बड़ा होगा। ऐसे 16863 हाथी के बराबर स्याही से शास्त्र लिखे जाये तो 48 मिनिट में इन लिखे शास्त्र का अध्ययन कर लें इतनी ताकत मनुष्य के पास है। नवकार दो मिनिट से गिना जाये। मंत्र की ताकत 500 सागरोपम के दुःख को दूर किया जा सकता है। भाव पूर्वक किया गया, एक नवकार का जाप केवल ज्ञान की प्राप्ति करवा सकता है। द्रव्य की ताकत बहुत बड़ी है। नवकार के पास में रखे तो कितना लाभ ?

विदेश में एक व्यक्ति किसी संकट परेशानी में फंस गया बहुत ही बैचेन और परेशान था उसे किसी ने एक फकीर के बारे में बतलाया कि वह आपके कष्ट को दूर कर सकते है तो वह कष्ट निवारण के लिये फकीर के पास गया। बोला- बहुत परेशान हूं, रास्ता बतलाओ, मार्ग बतलाओ। फकीर ने उसकी बात सुनी और बोला कल आना तुम्हारा काम हो जायेगा। दूसरे दिन फकीर ने उस परेशान व्यक्ति को एक ताबीज दिया और बोला इसे गले में पहन लेना जब तक काम नहीं हो जाये गले से मत निकालना और काम हो जाये तो पानी में डाल देना। मरता क्या न करता फकीर को भावपूर्वक देखा, नमस्कार किया, ताबीज लेकर घर आया और गले से ताबीज को पहन लिया। कुछ ही दिनों में ऐसा योग संयोग बना कि उस व्यक्ति की सभी परेशानियां दूर हो गई, बहुत ही प्रसन्न हुआ। फकीर को बहुत धन्यवाद दिया कि इतना अच्छा मांत्रिक ताबीज दिया,

मेरी सारी परेशानियां दूर हो गई। ताबीज गले पहनने पर जो भावना थी वह पूर्ण हो गई। बहुत प्रसन्नचित्त और आनंद में था, फकीर के पास गया और नमस्कार का बहुत ही धन्यवाद दिया कि आपने इतना अच्छा मंत्र वाला ताबिज दिया मेरी सारी ही परेशानियां दूर हो गई है। मैं बहुत खुश हूं, फकीर बोला- मैंने आपको क्या बोला था–हाँ याद है कि काम हो जाये तो ताबीज को पानी में डाल देना। तो वह व्यक्ति बोला- हाँ याद है, आपको बतलाने आया था, अभी जाकर ताबीज को पानी में डाल देता हूं। फकीर को यह बोल वह व्यक्ति ताबीज को पानी में डालने के लिये तत्पर हुआ किंतु उसके मन में विचार आया और एक बार देख तो लूं इस ताबीज में ऐसा क्या था कि मेरी सब परेशानी दूर हो गई। बस यह विचार मन में आते ही उसने ताबीज को पानी में डालने से पहले खोला और खोलकर देखा उसके मुंह से आश्चर्य की वाणी निकल गई ओह ! यह क्या- उसने देखा कि ताबीज में एक कागज रखा हुआ था और उस पर नवकार महामंत्र लिखा हुआ था। कागज में पूरा नवकार महामंत्र लिखा हुआ था। वह व्यक्ति भावविभोर हो गया क्योंकि वह भी जैन ही था। आप विचार करें उसके मन में नवकार महामंत्र के प्रति कैसे भाव आये होंगे। यह एकदम सच्ची घटना है। सुधर्मी यहां पर बैठकर आपको गलत नहीं बोलूंगा। झूठा व्याख्यान नहीं दूंगा, वह वापस फकीर के पास गया। फकीर से क्षमा मांगी, काम तो हो ही गया था पर काम हो जाने के बाद मैंने ताबीज को आपके कहने के अनुसार पानी में डालने के पहले खोलकर देख लिया इसलिये क्षमा चाहता हूं। ताबीज में निकले कागज पर नवकार महामंत्र लिखा देखकर मैं तो आश्चर्यचकित रह गया। तो फकीर बोला– मुझे आपके नवकार पर बहुत ही भरोसा है। भाव, भक्ति, श्रद्धा रखने पर एक काम हो जाता है। उसी के कारणभूत सफलता प्राप्त हुई। यदि नवकार हृदय में स्थापित हो जाये तो सब कुछ संभव हो सकता है, अरे ! ताबीज गले में लटका तो इतना लाभ हो गया अगर नवकार हृदय में उतारा जाये तो कितनी ताकत आ सकती है, जरा सोचे तो सही। क्या नहीं हो सकता है।

ज्ञानी भगवंत कहते है- परमेष्ठी भगवंत आराधना कैसे की जाये ? नवकार की आराधना करने के लिये समय बतलाया है, समय पर आप सचेत रहे तो वह साधना सिद्धी में बदल सकती है। कौन से समय हमें नवकार की आराधना करना चाहिये। सभी साधु–साध्वी भगवंत अपनी आराधना सूर्य उदय होने के तीन घंटे पहले 14 वें मुहूर्त में अगर हम आराधना करें तो वह सिद्धी में बदल जाती है। 2 पहर संसारी के लिये, 2 तुच्छ देवी–देवताओं के लिये 1,2,3 पहर साधना के लिये, विजय मुहूर्त जीवन के सुख शांति के लिये ब्रह्म मुहूर्त में आराधना करना चाहिये। दिन में 100 एवं 1000 लाभ रात्री में गिनने पर मिलता है। जब कार्य भाव अच्छा है तो 1,2,3 पहर के बीच आराधना करने से सिद्धी मिलती है। सभी अशुचि–अशुद्धि दूर होकर एक सूक्ष्म शक्ति का संचार होता है। इस जाप में शक्ति का त्रीव संचार होता है। मन में दिव्य चेतना का संचार होता है।

भारतीय वीरांगना

मेवाड़ के राजकुमार की रक्षा कर रही पन्ना धाय के सामने क्रूर काल खड़ा था। उसने पूछा-उदयसिंह कहां है? पन्नाधाय ने पालने की तरफ इशारा किया। वहीं उसने अपने बच्चे को लिटा रखा था। बनवीर के जाते ही पन्ना धाय ने अपने बच्चे का अंतिम संस्कार किया, जिसे मार डाला गया था। राणा सांगा के बेटे उदयसिंह को बचाने के लिये एक दायी ने अपने बेटे चंदन की भेंट चढ़ा दी थी। कितना महान त्याग! सर्वोपरि कर्त्तव्य परायणता! पन्नाधाय के चरण छूकर ही उदयसिंह बाद में मेवाड़ की गद्‌दी पर बैठे। धन्य है भारतीय वीरांगनाओं का इतिहास!

फि र प्रशंसा किसकी

जार्ज बर्नार्ड शॉ ने अपने कुटुंबियों व पाठकों से यही कहा कि मेरी कब्र पर ऐसा कुछ न लिखना, जिसे मेरी आत्मा स्वीकार न करें। यदि कुछ लिखना ही हो तो सीधे-सीधे लिख देना- यहीं गाड़ा गया है बर्नार्ड शॉ, न जाने वह बेचारा कौन था? यही लिखा भी गया। वे कहते थे कि मैं अंत तक यह नहीं जान पाया कि मेरे भावों को स्पंदन और हृदय को हलचल देनेवाला कौन है। जब मैं उसे नहीं जान पाया तो फिर प्रशंसा किसकी लिखाऊं-शरीर की? ऐसा करके मैं समूची मानव जाति को झूठा नहीं बनाऊंगा।

राजा की सेना एक गांव से होकर गुजरी। सेनापति ने गांव के मुखिया को बुलाकर पूछा- घोड़ों को खिलाने लायक सबसे अच्छा खेत किसका है ? मुखिया ने अपना खेत बता दिया। चारा काट लिया गया। सेनापति ने फिर पूछा- ये खेत किसके थे ? मुखिया ने कहा- मेरे। मुझे दूसरों की हानि कराने का क्या अधिकार है। सेनापति स्तब्ध रह गए। उन्होंने खेत का मुआवजा चुका दिया।

वर्ग पहेली क्रमांक-339

✽ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1		2	■	3	4		5	6
	■	7	8	■		■	9	
	■	10		■	11	12	■	
13		■	■	14	■	15		■
	■	■	16				■	17
■	■	18	■		■	■	19	
20	■	21	22		23	24	■	
25	26	■		■	27		■	
28					■	29		

बाएं से दाएं:-

1- चौथै तीर्थकर प्रभु का नाम श्री --- दन स्वामी (3)

3- भोयणी तीर्थ के निकट चंदनवर्णी आदिनाथ प्रभु का तीर्थ--- (5)

7- धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान (2)

9- जावरा के निकट नेमि प्रभु का प्राचीन तीर्थ इं---पथ (2)

10-हो न निराश करो मन को, कुछ काम करो, कुछ काम करो (2)

11-प्रभु पूजा में उपयोग में आती है के--- (2)

13-वर दे---वादिनी वर दे, प्रिय स्वतंत्र रव, अमृत मंत्र नव भारत में भर दे (2)

15-भ.नेमिनाथ की मोक्षस्थली का नाम गिर --- (2)

16-राजा विजयसेनकी के तीर्थंकर पुत्र का नाम---(4)

19-घाति और अघाति ये दो भेद है---के (2)

21-हथुण्डी तीर्थ में बिराजे है--- र (2,3)

25-नौवे तीर्थंकर प्रभु की माता का नाम---(2)

27-पंजाब के इस शहर में भ.वासुपूज्य स्वामी का प्राचीन जैन मंदिर हैः होशि---पुर (2)

28-इस तीर्थ में बिराजे है श्री पल्लविया पार्श्वनाथ-प्र---र (5)

29-यहां के नरेश बिम्बसार थे जिनका नाम जैन जगत में श्रेणिक प्रसिद्ध है (3)

वर्ग पहेली क्रमांक-338 का परिणाम

अ	चि	रा	■	बा	व	न	■	ल
■	न्ता	■	शा	लि	ही	■	अ	प
क	म	ल	■	■	पा	र्श्व	ना	थ
म	■	पु	■	च	■	■	व	■
ठ	सु	र	■	क	■	बा	र	सा
■	द	■	दे	वा	नं	दा	■	■
द	र्श	न	■	■	द	म	य	न्ति
धि	ना	■	न	वा	न	■	मं	■
वा	■	भी	पु	र	■	म	ग	र

ऊपर से नीचे:-

1- आठवें विहरमानजी का नाम--- (5)

2- वीर प्रभु का पच्चीसवें भव में नाम--- राजकुमार (3)

4- मंदसौर जिले में ऋषभ प्रभु का प्राचीन तीर्थ--- ली (3)

5- इलाहाबाद का नया नाम प्र--- राज (2)

6- भोपाल का एक जैन तीर्थ मनुआभान की टेकरी है जो--- टी में स्थित है (3)

8- मित्र का समानार्थी शब्द ---(2)

12-बारह चक्रवर्ती में से एक अ--- (3)

14-आंध्र के पश्चिम गोदावरी जिले में स्थित भगवान आदिनाथ का तीर्थ पे--- (4)

17-हाल ही में आचार्य श्रीमद विजयानंद सूरि (आत्मारामजी) महाराज की पाकिस्तान स्थित समाधि स्थल की यात्रा करने वाले आचार्य का नाम विजय---र सूरि (2,3)

18-भ.शांतिनाथ की माता का नाम अ---देवी (2)

20-तेरहवें तीर्थकर श्री विमलनाथ भगवान का लांछन/चिन्ह--- (3)

22-मोहनखेड़ा-कुक्षी के निकट स्थित भगवान आदिनाथ का प्राचीन तीर्थ- ---पुर (3)

23-बौद्ध धर्म की दो शाखाओं में से एक म---न (2)

24-वरघोड़ा/सामैया में बोला जाने वाला नारा-वंदे--- (3)

26-माता त्रिशला ने पांचवें स्वप्न में देखी थी पुष्प--- (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-339

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

नीचे दिये वाक्यों को पढ़कर उचित या अनुचित किया वह लिखो।

1- काव्या ने खाना खाकर पद्मासन किया।

2- मधुबहन ने व्याख्यान सुनते नवकार माला फेरी।

3- आशिष ने बोली के रुपये प्रथम भरकर सपनाजी उतारे।

4- अतुल, गुरु को सुबह देवसि एवं शाम को राई बोलकर वंदन करते हैं।

5- देवचंद्रभाई, देवद्रव्य एवं ज्ञानद्रव्य के बोली के रुपये उसी खाते में डालते हैं।

6- प्रकाशजी, श्रीखंड एवं खमणा को अलग खाने की सूचना बारंबार करते है।

7- राजु, अभक्ष्य पदार्थ खाता नहीं और नियम भी लेता नहीं।

8- कमला ने परोसी हुई रसोई की प्रशंसा करते-करते भोजन किया।

9- सतीशजी धर्म में धन वापरने हेतु फैक्ट्री में मशीन बढ़ाते हैं।

10- प्रमिलाजी बच्चे आम का अचार धूप में डाले बिना बनाती नहीं है।

11- महेन्द्र, पालतु तोते को पिंजरे में ही रखता है।

✻ अन्य पदार्थ का जो कुछ विचार करना है वह जीव के मोक्ष के हेतु करना है, अन्य पदार्थ के ज्ञान के लिए नहीं।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-8-2023 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

वर्ग पहेली क्रमांक-338 के परिणाम

विजेताः-

1- चंदनबाला जैन, देवास (म.प्र.) -प्रथम

2- सरोज तलेरा, इन्दौर (म.प्र.) - द्वितीय

3- हंसा वैभव जैन, देवास (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे-

सुधा लोढ़ा, उज्जैन, भारती जैन, देवास।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-338 के परिणाम

विजेताः-

1- भारती जैन, देवास (म.प्र.) - प्रथम

2- सुधा लोढ़ा, उज्जैन (म.प्र.) - द्वितीय

सही उत्तर-

1- मैथुन, 2- भरत, 3- शीत/उष्ण, 4- शुक्ल, 5- आहार, 6- भाषा, 7- शुक्ल, 8- अशोक, 9- काउस्यग्ग। 10- सास्वादन, 11- निर्जरा, 12- ब्रह्मचर्य

✻ जो मुमुक्षु जीव गृहस्थ के व्यवहार में रहते हों, उन्हें तो पहले तो आत्मा में अखण्ड नीति का मूल स्थापना करना चाहिए; नहीं तो उपदेश आदि निष्फल होते हैं। द्रव्य आदि उत्पन्न करना इत्यादि व्यवहारों में सांगोपांग न्याय सम्पन्न रहना उसका नाम नीति है। इस नीति को त्यजने में प्राण चले जायँ ऐसी दशा को प्राप्त कर लें तभी त्याग-वैराग्य असल रुप में प्रगट होते हैं; उस जीव को ही सत्पुरुष के वचनों का और आज्ञाधर्म का अद्भूत सामर्थ्य, महात्म्य और रहस्य समझ में आता है और सब वृत्तियाँ निजरुप से प्रवृत्ति करें ऐसा मार्ग स्पष्ट सिद्ध होता है।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धान्यवाद।

।। श्री परमात्माय नमः ।।

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1
मो.: 09825414470 / 9820078772
स्थापना वि. सं. 1962
इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744
PAN : AAATS8024L

पैसा भेजने का पत्ता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी
26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्‌गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासो के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है । ओर शेठश्री के उत्तम पुन्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है । जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है ।

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है । ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उनको संभालकर रखा जाता है ।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है । अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री । सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दोनो का भी बहुत बडा महत्व है । जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है ।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दौन
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है ।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे ।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है ।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये ।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा ।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था,
उस समय में कुल २५९३ जीवो को छुडवाया गया है ।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है । जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है ।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 00120100001219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम कार्य है ।

दान अेज सफल जीवन

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

जतीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

मालव विभूषण जैनाचार्य श्री वीररत्नसूरीजी का अवसान मालवा के जैन जगत के लिये बहुत बड़ी क्षति है

दिनांक 14 जुलाई को देवलोकगमन हुआ : अंतिम संस्कार शिवपुर में 15 जुलाई को हुआ

इन्दौर- श्री तिलकनगर जैन संघ में चार्तुमास हेतु विराजित रहे पूज्यपाद आचार्य देवेश श्रीमद् विजय वीररत्न सूरीश्वरजी महाराज का देवलोकगमन दिनांक 14 जुलाई को लम्बी अस्वस्थ्य के कारण हो गया। सारे देश में यह दुःखदायी समाचार आग की तरह फैल गया। मालवा के जैन जगत के लिये यह एक अपूरणीय क्षति में हमेशा याद में रहेगा। आपश्री का अग्नि संस्कार दिनांक 15 जुलाई को शिवपुर मातमोर तीर्थ में किया गया। अग्नि संस्कार के चढ़ावे पूज्यश्री की ख्याति सारे गुरुभक्तों के प्रेम के कारण बहुत अच्छे रहे। मालवा के अनेक श्री संघों पर आपश्री का उपकारी भाव रहा है इसलिये पूज्यश्री के अग्नि संस्कार में सैकड़ों श्री संघ के धर्मिष्ठों और गुरुभक्तों का आवागमन हुआ था। पूज्य आचार्य भगवंत श्री पद्मभूषण सूरीश्वरजी महाराज आपके साथ ही चार्तुमास में विराजित थे। आपश्री के मार्गदर्शन में ही अंतिम सभी क्रिया का निर्णय लिया गया। दिनांक 16 जुलाई को पूज्यश्री का मंगल स्मरण करते हुए तिलकनगर श्रीसंघ में गुणानुवाद सभा के आयोजन में सैकड़ों की संख्या में श्रीसंघ के धर्मिष्ठों का आगमन हुआ था। अनेक वक्ताओं ने पूज्यश्री के उपकरो को । स्मरण किया। मालवा के अनेक श्रीसंघों में गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। आगमोद्धारक मासिक के प्रति आपश्री का गहरा लगाव रहा है, अनेकबार आपश्री का आगमन कार्यालय पर भी हुआ था। हम आपश्री को भावभरी आदरांजलि अर्पित करते हैं।

नयापुरा श्री संघ में जैनाचार्यश्री के प्रथम चार्तुमास में धर्म प्रभावना से उत्साह का वातावरण बना

उज्जैन-यहां के नयापुरा क्षेत्र में श्री चन्द्रप्रभस्वामी जिन मंदिर परिसर में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित जैनाचार्य श्री मतिचंद्रसागर सूरीजी महाराज एवं मुनि श्री श्रुतचंद्र सागरजी म.सा. की निश्रा में धार्म प्रभावना का रिकार्ड बन रहा है। प्रतिदिन प्रवचन और धार्मिक आयोजन में धर्मिष्ठ उत्साह से सम्मिलित हो रहे है। पूज्यपाद श्री सागरजी महाराजा की 149 वीं जन्म जयंति पर त्रिदिवसीय आयोजन किया गया। दिनांक 16 जुलाई को पूज्य सागरजी महाराज की 36 वीं एवं 77 पाट परम्परा महापूजन हुई, दीपक के एकासणे हुए, दिनांक 17 जुलाई को भव्य गुणानुवाद सभा हुई, 36 गिनी से पूजन किया गया। 36 गहुंली प्रतियोगिता हुई। दिनांक 18 जुलाई को शक्रस्तव अभिषेक तथा श्री सागरजी महाराज का विभिन्न भाषा में युवाओं ने गुणानुवाद किया, प्रभावना गौतम प्रसादी भी रखी गई। दिनांक 22 जुलाई को श्री आदिनाथदादा की प्रतिष्ठा होने के निमित्त श्री आदिनाथ प्रभु के एकासणा और श्री भक्तामर महापूजन हुई।

रतलाम में श्री सागरजी जन्म जयंति का आयोजन

रतलाम- श्री देवसूर तपागच्छ चारथुई जैन श्री संघ गुजराती उपाश्रय में विराजित पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री विजयकुलबोधि सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में यहां भाईयों के लिये प्रतिदिन रात्री प्रवचन के अंतर्गत समरादित्य महागाथा के आयोजन में बड़ी संख्या में धार्मिष्ठों की उपस्थिति हो रही है। आगमोद्धारक भवन सेठजी के बाजार में यह रात्री प्रवचन माल का आयोजन हो रहा है। पूज्यश्री की निश्रा में दिनांक 17 जुलाई को पूज्यपादश्री सागरजी महाराजा के 149 वें जन्म दिवस पर भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया जिसमें बड़ी संख्या में धर्मिष्ठ सम्मिलित हुए, श्री कबीर साहब के मंदिर में भव्य गुणानुवाद सभा हुई। सभा को अनेक वक्ता और पूज्यश्री ने संबोधित किया। गुरुपूजन का आयोजन भी हुआ, अंत में भाते का आयोजन रखा गया था।

श्री सिमंधर स्वामीजी की भावयात्रा हुई

बेटमा-यहां चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजमान पूज्य साध्वीवर्या श्री स्वर्णज्योतिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 की निश्रा में दिनांक 9 जुलाई को श्री सिमंधर स्वामीजी की भावयात्रा का आयोजन किया गया। दिनांक 17 जुलाई को पूज्यपाद श्री सागरजी महाराजा का 149 वां जन्मदिन विभिन्न आयोजन और गुणानुवाद सभा हुई, प्रभावना हुई।

मालवा के युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी के गुरुकुल ने मुंबई के तीन संघों में धर्माराधना का साम्राज स्थापित किया

प्रवेश ठाकुर द्वारा संघ में 1 जुलाई को हुआ।

*** गुरु पूर्णिमा महोत्सव, बालसंयमी उज्जवल श्री वीर पथगामी बनेंगे। * मुनिश्री उज्जवल रत्नसागरजी म.सा. गुरुपदवी पायेंगे। * जैन बेसिक कोर्स का 14 दिवसीय आयोजन। * पूज्यपाद सागरजी महाराजा का जन्म दिवस की उजवाणी हुई। 18 जुलाई को महामांगलिक का आयोजन हुआ। * मुंबई चार्तुमास के बाद दिसंबर में मेरु महोत्सव में पूना पहुंचने की संभावना इसके बाद उज्जैन आने की संभावना। * उज्जैन-इन्दौर में नवनिर्मित होनेवाले जिन मंदिर में प्रभु की चल प्रतिष्ठा हुई - प्रतिष्ठा 2024 में हो सकती है।**

मुंबई- श्री ठाकुरद्वार जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ में चातुमार्सिक आराधना करने करवाने के लिये पधारे मालवा के युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागरसूरीजी महाराजा परमात्मा श्री वीर प्रभु के शासन की अभिवृद्धि के लिये अपने सम्पूर्ण पुण्यबल का सुनियोजित उपयोग कर स्वयं और आपश्री ने गुरुकुल के युवा मुनिपुंग भरपूर जिन शासन की प्रभावना कर मायापुरी में जैनत्व का इतिहास रचने के लिये तत्पर बने हैं। मुंबई के तीन श्री संघों में आपश्री के साथ युवा श्रमण भगवंत अद्भूत शासन भक्ति कर युवा और वरिष्ठ धर्मिष्ठों को आकृषित कर जैनत्व का झण्डा फहरा रहे है। पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा का गुरुकुल श्री वीरप्रभु के शासन को उज्जवल बनाने के लिये वर्तमानकाल में जैनत्व का शंखनाद कर रहे है।

चार्तुमास का आगज होते ही दिनांक 3 जुलाई को गुरु पूर्णिमा महोत्सव के अंतर्गत गुरुश्री को बधाने के लिये वशिष्ठ अनुष्ठान का आयोजन किया गया, इसके बाद जैन बेसिक कोर्स के लिये एक प्रकार से शिविर का आयोजन 20 जुलाई से आरम्भ हुआ जो 11 दिवसीय था जिसमें आत्मा-मोक्ष-कर्म-प्रभु पूजन-प्रतिक्रमण जैसे अनेक प्रश्नों का समाधानपूर्वक उत्तर दिया गया तथा जैन संस्कारों को आत्मसात करने की प्रेरणा दी गई।

दिनांक 18 जुलाई को आपश्री की महामांगलिक के आयोजन में आचार्य देवेश देवचंद्रसागर सूरीश्वरजी आदि ठाणा का आगमन भी हुआ, महामांगलिक में मंत्रों का दिव्य उच्चारण ग्रहण कर अनेक लोगों के जीवन में मनवांछित की पूर्ति हुई है। इस प्रसंग पर मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान आदि राज्यों के साथ अनेक स्थानों से गुरुभक्त सैकड़ें की संख्या में आये थे। यह अद्भूत महामांगलिक इस कारण से विशिष्ठ बन गई कि इसी दिन उज्जवल पथ ग्रहण कर श्री वीर प्रभु की पाटपरम्परा में अपना योगदान देने के लिये बाल संयमी उज्जवल गुंदेचा ने पूज्य आचार्य भगवंत से अपनी दीक्षा का मुर्हूत मांग कर वीर पथगामी बनने का अनुरोध किया। पूज्य मुनिश्री उज्जवलरत्नसागरजी म.सा. को अपना जीवन गुरु बनाने की अभिलाषा रखनेवाले बाल मुमुक्षु श्री उज्जवल गुंदेचा को पूज्यश्री ने भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति के साथ दीक्षा दिवस 7 दिसंबर को प्रदान किया। हर्ष से सभा मंडप गुंजमान हो गया। एक और विशिष्ट प्रसंग यह बना कि 35 कल्याणक भूमि के अध्यक्ष श्री

कमलसिंहजी रामपुरिया कोलकत्ता से अपने ट्रस्ट मंडल के साथ पधारे थे। आपने पूज्यश्री से आग्रह भरी विनंती कि- 2024 में विश्व विख्यात महातीर्थ श्री सम्मेदशिखरजी के अधि-ष्ठायक देव श्री सम्मेद शिखरजी पधारे। पूज्यश्री ने अनुकुलता से जवाब देने को कहा है।

युवा जैनाचार्यश्री अपने गुरुकुल के युवा मुनि भगवंत प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्न सागरजी म. सा. ,प.पू. मुनि श्रीतीर्थ रत्न सागर जी म. सा. प.पू. मुनि श्रीउदय रत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उज्ञवलरत्न सागर जी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीप.पू. मुनि श्रीरम्यरत्नसागरजी म.सा.,प.पू. मुनिश्रीलब्धि रत्नसागरजी म. सा. मुनिश्री शौर्यरत्न सागरजी म.सा. मुनिश्री ऋषभरत्नसागरजी म.सा .मुनि श्रीसिध्दरत्न सागरजी म.सा.आदि ठाणा युवा शिष्य मंडली के मुबंई के श्रीसंघों में शासन प्रभावना कर रहे है।

बड़ी दीक्षा सम्पन्न

इन्दौर- पूज्य प्रवचन प्रभावक गणिवर्य श्री आनंदचंद्रसागरजी म.सा. मुनिश्री ऋषभचंद्रसागरजी म.सा. तथा साध्वीवर्या श्री सौम्ययशा श्रीजी एवं साध्वीवर्या श्री शीलरेखाश्रीजी म.सा. साध्वी वर्या श्री हेमप्रज्ञाश्रीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में उपस्थित साधु-साध्वीजी की अमृत निश्रा में नूतन दीक्षित साध्वीवर्या राजगढ़ की रत्ना साध्वी श्री सिद्धार्षिनिधि तथा साध्वी श्री राजर्षिनिधि श्रीजी की बड़ी दीक्षा का भव्य आयोजन रेसकोर्स रोड़ इन्दौर में सम्पन्न हुआ। दिनांक 1 जुलाई को प्रातः 8 बजे से आयोजित बड़ी दीक्षा में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही।

लुधियाना दोराहा में श्री मणिलक्ष्मीधाम में वल्लभ गच्छाधिपति आचार्यश्री का चार्तुमास

लुधियाना- यहां के समीप दोराहा में त्रिशिखरयुक्त भव्य जिनप्रसाद का निर्माण श्री मणिलक्ष्मीधामके नाम से हुआ है। वल्लभ समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय नित्यानंद सूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी का चार्तुमास दोहरा में हो रहा है यहां परमात्मा विराजमान करने के लिये भव्य अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन 30 मई से 6 जून के मध्य सम्पन्न हुआ था। वड़ोदरा के समीप श्री मणिलक्ष्मी तीर्थ का निर्माण करने वाले परिवार ने भी यहां बड़ा लाभ लेकर तीर्थ निर्माण में सहयोगी बने है।

जोधपुर में प्रथम बार श्री सागरजी महाराजा के जन्मदिन पर गौरवगाथा-गुण कीर्तन का आयोजन हुआ

✻ डॉ. सुभाष जैन ''आगमोद्धारक'' सुमंगल आराधना में कीर्तिगाथा सुनाई।

✻ इस बार जोधपुर में प्रथम बार 5 स्थानों पर सागर समुदाय के चार्तुमास

जोधपुर- जोधपुर में प्रथम बार पांच स्थानों पर सागर के साधु-साध्वी भगवंतों के चार्तुमास हो रहे है। यह क्षेत्र सागर समुदाय के साधु-साध्वीजी से अनभिज्ञ है और नहीं पूज्यपाद सागरजी महाराज से परिचित है। यह संघ ऐसे है जहां चार्तुमास बहुत अच्छे हो सकते है। श्री नंदनवन जैन श्वेतांबर श्री संघ में चार्तुमास हेतु विराजित साध्वीवर्या श्री चन्द्ररत्नाश्रीजी और बाल साध्वी श्री ध्वनिरत्नाश्रीजी का चार्तुमास बड़े उत्साह से आगे प्रसार हो रहा है। पूज्यपाद सागरजी महाराज की 149 वीं जन्म जयंति पर यहां भव्य रुप से 36 गहुंली बनाकर 36 दीपक प्रज्ज वलित किये गये थे। जो धर्म गुणानुवाद सभा की पूर्णाहुति के बाद भी प्रज्जलित रहे। **यहां डॉ. सुभाष जैन ''आगमोद्धारक'' ने लगभग 80 मिनिट तक पूज्यपादश्री के जीवन के अनेक प्रसंगों को आज मयवाणी में श्रोताओं को अवगत कराया।** लोगों ने भावविभोर होकर आनंद लिया। यहां के संघ पूज्यपाद श्री सागरजी महाराजा से अपरिचित होने से पूज्यश्री की गुण कीर्ति गाथा को मनोयोग से सुना। लड्डू की प्रभावना और 20 रुपये नगद की प्रभावना हुई। डॉ. सुभाष जैन ने भी 10/- रुपये की प्रभावना का लाभ लिया। अन्य संघों ने भी गुण कीर्ति गाथा का आयोजन हुआ।

मंदसौर में आगमोद्धारकश्री का जन्मदिन उत्साह से मना

मंदसौर- श्री केशरिया आदिनाथ श्री संघ रुपचंद्र आराधना भवन में पूज्यपाद श्री आगमोद्धारक श्री सागरजी महाराजा का जन्मदिन त्रिदिवसीय महोत्सव के साथ मनाया गया। पूज्य साध्वीवर्या श्री अमी-दर्शा-मृदुपूर्णा श्रीजी, श्री अर्हताश्रीजी, मैत्रीपूर्णा श्रीजी, रमणपूर्णा श्रीजी, सिद्धपूर्णा श्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 15 से 17 जुलाई तक महोत्सव के रुप में मनाये गये जन्मदिन में शोभावसार के साथ विविध आयोजन और गुणानुवाद सभा हुई।

कोढ़वा के चार्तुमास में सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपतिश्री की निश्रा में पूना की धर्म फिजा बदल रही है

✻ प्रवचन उत्सव का आयोजन, कुमारपाल की महाआरती, त्रिदिवसीय गुरुभक्ति त्रिदिवसीय अहो जिनशासन शिविर जैसे भव्य आयोजन के साथ पूना के विभिन्न श्रीसंघों में गुरु भगवंत, साध्वी भगवंतों की निश्रा में धर्म का शंखनाद पांच माह तक चलेगा। ✻ पूना में धर्मचक्र महातप का भव्य शंखनाद ८० दिन का तप का शुभारंभ 5 जुलाई को अट्ठम तप के साथ हुआ। ✻ तप की पूर्णाहुति 24 सितंबर को होगी।

मेरु महोत्सव आयोजन की भव्य तैयारीयां

✻ मेरु महोत्सव का आयोजन 7 से 18 दिसंबर तक होगा। ✻ महोत्सव में दीक्षा, 100 वीं ओली पारणा भी होगा। ✻ पूना में 200 साधु साध्वी भगवंत के साथ भव्य चार्तुमास का आयोजन। ✻ संघ हितचिंतक जैनाचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी के प्रयास की अनुमोदना।

पूना- यहां के कोढ्वा श्री संघ में परम पावन जिनशासन की शान सागर समुदाय के जैन जगत में सर्वोच्च रुप से वरिष्ठतम संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधि पति गीतार्थ मूर्धनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्यपाद श्री दौलत सागरसूरीजी महाराजा आदि ठाणा शताधिक संख्या में गुरु भगवंतों, साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में हजारों की जनमोदिनी की उपस्थिति में चार्तुमास प्रवेश यादगार बन गया। यहां के धर्ममय वातावरण को देखकर यह लग रहा है कि इस बार का चार्तुमास पूना की फिजा को बदलकर रख देगा। प्रवचन महोत्सव से आचार्य देवेश श्री चंदरत्न सागरसूरीजी एवं पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी युवाओं को उद्घोषित कर रहे है, श्रमण-श्रमणी की वाचना भी पूज्य आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी दे रहे है। बाल संस्कार शिविर मुनिश्री चैत्यरत्नसागरजी संभाल रहे है और रविवाररीय शिविर पंन्यास श्री विराग सागरजी म.सा. देख रहे है। त्रिदिवसीय रविवाररीय शिविर दिनांक 23 एवं 30 जुलाई तथा 6 अगस्त को हुए शिविर का आचार्यश्री और पंन्यासजी ने संचालित किया। पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री सागरानंदसूरीजी महाराजा की 149 वीं जनम जयंति पर त्रिदिवसीय गुरुभक्ति का आयोजन दिनांक 15 से 17 जुलाई तक हुआ। सागर के अनमोल मोती, 18 हजार गुरु वंदना और भव्य गुणानुवाद सभा हुई। 17 जुलाई को गुणानुवाद सभा मेंसर्व प्रथम पू.आ.श्री जितरत्न सागरसूरीजी म. ने पू.गच्छा.श्री के जीवन की विशिष्ताओं को आलोकित किया। पू.आ.श्री मुक्तिसागर सूरीश्वरजी म. ने अजातशत्रु पू.आ.श्री नंदिवर्धनसागर सूरीजी म. एवं वचनसिद्ध पू.आ.श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी म. के गुणानु वाद किया। आपने अजातशत्रु आचार्यश्री के साथ पू.पंन्यास श्री अभयसागरजी म. को भी याद करते हुए कहा कि मेरे गुरुदेव पू.सागरजी म. के बाद समुदाय के ये दोनों महापुरुष मेरी श्रद्धा के केन्द्र रहे है। आपने कहा कि ज्ञान को कंठस्थ करनेवाले विद्वान या पंडित हो सकते है, ज्ञानी नहीं। मगर उसे जीवन में आचरित करनेवाले ही सही माने में ज्ञानी होते है। दरअसल, मैं इन्हें ज्ञानी समझता हूं। पू.आ.श्री हर्षसागरसूरिजी म. ने बंधुत्रिपुटी श्री अशोक-जिन-हेमचंद्रसागर सूरीश्वर जी म. की शासन प्रभावना का जिक्र किया। पू.जितरत्न म.सा. ने पू. मुक्ति सागर म. और अभ्युदयपुरम की भी भरपूर प्रशंसा की। पू.पंन्यास श्री विराग सागरजी म. ने समुदाय के अन्य अनेक आचार्यो को याद किया। श्रीफल, लड्डू और 50 रुपये की प्रभावना हुई। इसके पूर्व दिनांक 9 जुलाई को कुमारपाल राजा की 1800 सौ सामायिक का आयोजन किया गया। रविवार को दीपक के एकासणा भी हुए। चार्तुमास धर्म जाग्रति का प्रमाण बन गया है। 85 वर्ष संयम जीवन के पूर्ण होने पर एक वर्ष तक संयम मेरु महोत्सव में 8 हजार 500 जिनशासन प्रभावक कार्यो से वर्ल्ड रिकार्ड बनेगा ऐसा युग प्रभावक मेरु महोत्सव मनाने की भव्य आयोजन

की तैयारी में लगे संघहित चिंतक पूज्य आचार्यदेव श्री हर्षसाग रसूरीजी म.सा. का स्वास्थ्य में अब अच्छा सुधार है सागर समुदाय के साधु भगवंतों के चार्तुमास पूना के विभिन्न संघों में हो रहे है । शताधिक साधु-साध्वी और हजारों की जनमोदिनी की उपस्थिति में धर्ममय वातावरण दिखाई दे रहा था । चार्तुमास आरंभ होते हे कोढ़वा में पोषध धर्म का शुभारंभ होगा इसके साथ ही 80 दिवसीय धर्मचक्र का भी शुभारंभ 5 जुलाई से होकर 24 सितंबर को पूर्णाहुति होगी इसके साथ ही इस बार अधिक मास होने से चार्तुमास 5 माह का होने से भी धर्म प्रभावना का जोर रहेगा । विविध तप जप के साथ अनेक आयोजन होने की श्रृंखला बनेगी । पूज्य आचार्यश्री नंदीवर्धनसागर सूरीजी वर्तमान में स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे है ।

मेरु महोत्सव- आगामी चार्तुमास उपरांत अति भव्य रुप से ऐसा परम शासन प्रभावक पूज्यश्री का 85 वां विराट संयमोत्सव मनाया जायेगा । यह आयोजन आगामी चार्तुमास के उपरांत 7-18 दिसबंर तक मनाया जायेगा कार्यक्रम को अंतिम रुप दिया जा रहा है आपश्री की निश्रा में पूना में सागर समुदाय के लगभग 200 से अधिक गुरु भगवंतों, साधु-साध्वी जी का भव्य चार्तुमास की तैयारियां चल रही है । चार्तुमास से जुड़ने के लिए भारत के चारों कोने से साधु-साध्वी भगवंतों 100 से 1000 किलोमीटर का विहार कर पूना पहुंच रहे है । जैनत्व के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित हो ऐसा ऐतिहासिक और भव्य चार्तुमास के साथ पूज्यपाद श्री का 85 वां संयमोत्सव मनाने के भव्य संघ हित चिंतक पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीजी महाराजा के मन में आया और अब वह क्रियान्वित भी होने जा रहा है । पूना के श्री संघ इस संयमोत्सव के लिये जी-जान से जुड़ रहे है और तन-मन-धन से पूर्ण समर्पित जिन शासन संरक्षण हित की भावना से जाग्रत होकर तैयारी कर रहे हैं । मुनिश्री मोक्षरत्नसागरजी एवं मुनिश्री पद्मकीर्तिसागरजी का 100 वीं ओली का पारणा भी मेरु महोत्सव में होगा ।

बंधु बेलड़ी आचार्य श्री सिद्धाचल महातीर्थ में धर्म गंगा का प्रवाह गतिमान कर रहे है

पालीताना- बंधु बेलड़ी आचार्य-द्रेय पूज्यपाद श्री जिनचंद्रसागर सूरीजी महाराजा, आचार्यदेवेश श्री हेमचंद्रसागर सूरीजी महाराजा, आचार्य देवेश श्री विरमदचंद्रसागर सूरीजी महाराज आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों का भव्य चार्तुमास प्रवेश चैन्नई भवन में होने के बाद यहां धर्म गंगा का प्रवाह गतिमान है । पूज्यश्री के चार्तुमास के लाभार्थी चाणस्मा के श्रीमती कांताबहन केशवलाल शाह परिवार है । पूज्यश्री की निश्रा में पूज्यपाद श्री सागरजी महाराजा की 149 वीं जन्म जयंति पर महर्षि संतों का विशिष्टस्मरण किया गया । चार्तुमास जोरदार चल रहा है । 9 जुलाई को युवा मुमुक्षु श्री देवकुमार पालरेचा की दीक्षा के लिये मुर्हूत प्रदान किया गया । दिनांक 23 जुलाई को प्रथम तीर्थकर परमात्मा श्री आदिनाथ दादा के जीवन प्रसंग को गीत संगीत और संवेदना के माध्यम से प्रस्तुत किया । अद्भूत भक्तियात्रा का आयोजन हुआ ।

✻ शारीरिक वेदना को, देह का धर्म जानकर और बांधे हुए कर्मो का फल जानकर, सम्यक् प्रकार से सहन योग्य है ।

साध्वीवर्या श्री सौम्यवंदना श्रीजी की निश्रा में धर्मरत्न प्रकरण और श्री भीमसेन चारित्र पर पांच माह के प्रवचन

✻ श्री गौतम स्वामी की अष्ट प्रकार पूजन । ✻ मां पद्मावती की विशिष्ट आराधना । ✻ श्री सागरजी जन्म जयंति मनाई गई । ✻ श्री नवग्रह तप का आयोजन ।

उज्जैन- श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर विराजित पूज्य साध्वीवर्या श्री सौम्यवंदना श्रीजी, श्री राजिताश्रीजी एवं प्रवचनपुर साध्वी श्री नमिताश्रीजी आदि ठाणा-5 का चार्तुमास धर्माराधना का आधार बन रहा है । दिनांक 23 जून को प्रवेश के उपरांत आपश्री के द्वारा चार्तुमास में 5 माह तक श्री धर्मरत्न प्रकरण में मार्गानुसारी के 35 गुण तथा भावना अधिकार में श्री भीमसेन एवं हरीसेन चारित्र पर प्रवचन होंगे । **उक्त दोनों ग्रंथों को वोहराने का लाभ डॉ. सुभाष जैन ''आगमोद्धारक'' परिवार को मिला है ।** श्री गौतम स्वामीजी लब्धि कलश स्थापना के साथ श्री गौतम स्वामीजी की प्रतिदिन अष्ट प्रकार की पूजन हो रही है । माँ पद्मावती की विशिष्ट पूजन तथा श्री नवग्रह तप 18 दिवसीय आराधना भी चल रही है । दिनांक 17 जुलाई को पूज्यपाद श्री सागराजी महाराजा की जन्म जयंति पर 45 आगम पूजन तथा गुणानुवाद सभा हुई । महिला मंडल ने प्रस्तुति भी दी ।

अशोकसागरसूरीजी की निश्रा में 300 आराधक चार्तुमास की आराधना करेंगे

✻श्री नागेश्वर महातीर्थ में चार्तुमास प्रवेश 29 जून को हुआ।
✻ मालवा के श्रीसंघों में विचरण मंदसौर में आयोजन हुए।
✻ साध्वीश्री दमिताश्रीजी का चार्तुमास भी यहीं हो रहा है।

नागेश्वर- मांडवगढ़ तीर्थोद्धारक सिद्धचक्र आराधक समाज मार्गदर्शक पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अशोकसागरसूरीजी महाराजा आचार्य देवेश श्री सौम्यचंदसागरसूरीजी म.सा. आचार्य श्री विवेकचंद्रसागरसूरीजी म.सा. प्रर्वतक श्रीधैर्यचंद्रसागरजी म.सा.आदि ठाणा के साथ पूज्य साध्वीवर्या श्री दमिता श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री नागेश्वर तीर्थ में हो रहा है प्रवेश 29 जुन को हुआ।300 की संख्या में आराधक देश के विभिन्न प्रांतों से आराधना के लिये आये है इसके पूर्व आपश्री की निश्रा में मन्दसौर में परमात्मा श्री पार्श्वनाथ प्रभु तथा आचार्यश्री आर्यदीक्षितसूरीजी की प्रतिमा प्रवेश 11 जून को श्री आर्य दीक्षित सूरी तीर्थधाम मंदसौर में हुआ। यहां आपश्री श्री नागेश्वर तीर्थ पधारें आपकी अमृत निश्रा में चातुर्मास आराधना का जोरदार आयोजन होगा।

संयम का स्पर्श बाल संस्कार आगम ज्ञान पर 45 दिवसीय ज्ञान श्रृंखला का आयोजन

मुंबई- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के सुशिष्य चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजित आचार्य देवेश वागड़ नरेश श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म. सा., उपाध्याय प्रवर श्री वैराग्यरत्न सागर जी म.सा. पू. मुनिश्री मोक्षरत्न सागर जी म.सा. पू. मुनिश्री पदमरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा -5 का आदि ठाणा के साथ धर्मसूरी समुदाय के साध्वीश्री रत्नेश कला श्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में भव्य धर्माराधना की शुरुवात हुई। साधु जीवन के उपयोगी उपकरणों की वंदनावली का आयोजन 9 जुलाई को किया गया। 8 जुलाई को बाल संस्कार शिविर का आयोजन उन बच्चों के लिये किया गया जो माता-पिता के बगैर आ सकते थे इसके साथ ही 45 दिवसीय आगम तत्व ज्ञान की जानकारी देने के लिये प्रवचन श्रृंखला का शुभारंभ 19 जुलाई से हुआ जो सितम्बर तक चलेगी। 18 जुलाई को आपश्री की महामांगलिक का आयोजन जोरदार रहा। वर्धमान तप की 99 वीं ओली के आराधक तपस्वी मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजी म.सा. को वर्धमान तप की 99 वीं ओली पूर्ण हो गई है

जैनाचार्य श्री मुक्तिसागर सूरीजी का आगामी चार्तुमास इन्दौर में

पूना- विगत दिनों यहां चार्तुमास आराधना के लिये विराजित जैनाचार्य श्री मुक्तिसागरसूरीजी एवं आचार्य देव श्री अंचलमुक्तिसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा के आगामी चार्तुमास श्री अर्बुजगिरी जैन श्वेतांबर उपाश्रय इन्दौर में होने की घोषणा की गई है।

मुनिश्री विशुद्धरत्नसागरजी म.सा. नेपाल में चार्तुमास

काठमांडु- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्यदेवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा के गुरुकुल के रत्न मुनिश्री विशुद्धरत्न सागरजी एवं मुनिश्री समकितरत्न सागर जी म.सा. हिमालय की यात्रा पर है, नाम के अनुरुप शुद्ध सात्विक चारित्र का पालन करने वाले मुनिश्री एकांत में रहते हुए साधना करते रहे है, मोबाईल आदि से सम्पर्क से दूर रहने वाले मुनिश्री की हिमालय के दुर्गम पर्वतों पर आराधना की है। मुनिश्री विशुद्ध रत्नसागरजी म.सा.एवं मुनिश्री समकित रत्नसागरजी म.सा. का चार्तुमास नेपाल काठमांडु में हो रहा है।

आचार्यश्री हंसरत्नसूरीजी महाभद्र तप कर रहे है

मुंबई- यहां चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित महातपस्वी आचार्य भगवंत श्री हंसरत्नसूरीश्वरजी महाराजा जिन्होंने पूर्व में 18 उपवास किये थे अब आपश्री महाभद्र तप की आराधना का शुभारंभ दिनांक 25 जुलाई से करेंगे। महाभद्र तप की प्रथमबारी की शुरुवात होगी। इस महोत्सव में कुल 245 दिवस 196 उपवास और 99 बियासणा आयेंगे। पहली बारी में 28 उपवास तथा सात बियासणे आयेंगे। यह आराधना 35 दिन की रहेगी।

✻ जो ईश्वरेच्छा होगी, सो होगा। मनुष्य के लिए केवल प्रयत्न करना सृजित है और उसी से अपने प्रारब्ध में जो होगा वह मिला करेगा। अत: मन में संकल्प-विकल्प नहीं करना।

नाकोड़ा में उपधान तप के साथ नव्वांणु यात्रा का महायोजन

नाकोड़ा- पूज्य आचार्यदेवेश श्री नयचंद्रसागरसूरीजी महाराजा के शिष्यरत्न मुनिश्री सुमितचंद्रसागरजी और मुनिश्री शीतलचंद्रसागरजी महाराज आदि साधु साध्वी की निश्रा में यहां उपधान तप का भव्य आयोजन प्रथम मुर्हूत दिनांक 7 और 9 दिसंबर तथा द्वितीय मुर्हूत 14 एवं 16 दिसंबर के साथ आरंभ होने जा रहा है। उपधान तप के तपस्वीयों की भव्य शोभायात्रा तथा मालारोपण का आयोजन दिनांक 25 जनवरी 2024 को होगा। बच्चों के लिये 18 दिवसीय उपधान का आयोजन दिनांक 23 दिसंबर से होगा। नव्वांणु यात्रा नाकोड़ा तीर्थ में पीछे की ओर बने 500 सीढ़ियां ऊपर विराजित श्री नेमि, पार्श्व एवं श्री शांतिप्रभु की यात्रा के साथ कराई जायेगी।

श्री नाकोड़ा भैरवधाम में महामांगलिक-उपधान होगा

मुंबई- राष्ट्रसंत आचार्य देवेश श्री चन्द्राननसागर सूरीश्वरजी महाराजा की महामांगलिक का आयोजन आपश्री के द्वारा संस्थापित तीर्थ श्री नाकोड़ा भैरव दर्शनधाम ठेकाले में दिनांक 18 जुलाई को भव्य आयोजन के साथ सम्पन्न हुई ।मुंबई तथा आसपास के क्षेत्र से बड़ी से बड़ी संख्या में धर्मिष्ठ श्री नाकोड़ाधाम महामांगलिक सुनने के लिये आये थे । पूज्य आचार्यश्री का चार्तुमास यही पर भव्य रुप से प्रसार हो रहा है । यहां उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। प्रथम मुर्हूत दिनांक 29 अक्टूबर तथा द्वितीय मुर्हूत दिनांक 31 अक्टूबर को है। तपस्वियों का वरघोड़ा 16 दिसंबर को निकलेगा तथा माल दिनांक 17 दिसंबर को होगी ।

सर्वधर्म समाज के संतों ने अगवानी कर राष्ट्रसंत के चातुमार्सिक प्रवेश को बनाया ऐतिहासिक

उदयपुर- राष्ट्रसंत ललितप्रभ, राष्ट्रसंत चन्द्रप्रभ एवं शान्तिप्रियसागर महाराज का टाउन हॉल प्रांगण में चातुमार्सिक मंगल प्रवेश हुआ, जहां शोभायात्रा के साथ पहुंचने पर महापौर कलेक्टर, विधायक, पूर्व मंत्री सहित गणमान्य एवं विशिष्ट व्यक्तियों ने भव्य अगवानी कर स्वागत किया।

धर्मसभा का प्रारंभ संत प्रवर ललितप्रभ महाराज ने कहा कि वह देश ने महान नगरी मेवाड़ में दिव्य चार्तुमास करने आए हैं। इस चार्तुमास के लिए देश के कई क्षेत्रों से विनंती आई थी लेकिन उदयपुर का प्रेम भाव और स्नेह ऐसा है तो यहां आने के लिये कौन मना कर सकता है।

उन्होंने कहा कि यूं तो हम शब्द है मिल जाए शास्त्र है, यूं तो हम एक है मिल जाए तो इमारत है, यूं तो हम इंसान है मिल जाए तो पूरा भारत है.... जैसे प्रेरणादायी वाक्यों का सभी से उच्चारण करवाया। अंत में णमोकार महामंत्र का सभी से सामूहिक जाप करवा कर मंगल चार्तुमास के पहले दिन का श्रीगणेश किया। उनके बाद हंसराज चौधरी ने स्वागत उद्‌बोधन दिया। संत डॉ. शांतिप्रिय सागर महाराज ने प्रभु प्रार्थना करवाई।

मालवा के संत पूना में रात्री प्रवचनमाला में जोरदार प्रवचन से महावीर का संदेश दे रहे है

पूना- वर्धमान नगर में चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजमान जैनाचार्य वाणी के जादूगर पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीजी महाराज मुनिश्रीचैत्यरत्नसागर जी मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनिश्री गोयमसागरजी म.सा.आदि ठाणा यहां पर नवयुवकों और पुरुष धर्मिष्ठों के लिये जाहिर प्रवचन तथा रात्री प्रवचन माला के द्वारा संस्कार और धर्म का शंखनाद कर रहे है। जिनशासन के शूरवीर, जीव विचार, देव और नरक का वर्णन, मंदिर की आशातना, लव जिहाद, जैन जाग्रती जैसे विषय पर प्रवचन से संस्कारों की समझ दे रहे है। गुरु में महत्व को बतलाते हुए आपश्री ने ''गुरु की महिमा अपरंपार'' इस विषय पर अपने बढ़ा का सम्मान आदर देने का आव्हान किया। बड़ी संख्या में लोग प्रवचन सुनने आ रहे है।

प्रतापगढ़ में नवकार भावयात्रा हुई

प्रतापगढ़-पूज्य उपाध्याय श्री इन्द्रविजयजी म.सा. आदि ठाणा-4 एवं साध्वी श्री अक्षयनंदिता श्रीजी आदि ठाणा-4 की निश्रा में यहां दिनांक 23 जुलाई को संगीतमय श्री नवकार महामंत्र की भावयात्रा का आयोजन किया गया। गुमानजी मंदिर में आयोजन के बाद सधार्मिक भक्ति हुई।

पूना में मालवा के जैनाचार्यों को चार्तुमास धर्मप्रभावना का सर्जन चल रहा है

पूना- पूज्य आचार्य भगवान श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. एवं पूज्य आचार्यश्री चन्द्ररत्नसागरसूरीजी म.सा. का पूना में वर्षावास सम्पन्न हो रहा है। पूज्यश्री वर्धमानपुरा मार्केट यार्ड में अपना चार्तुमास निर्गमन कर रहे है।

पूज्य गुरु भगवंतों का चार्तुमास प्रवेश 24-6-2023 को संघ स्थवीर पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी म.सा., वचन सिध्द पूज्य आचार्य भगवंत श्री नरदेव सागर सूरीजी म.सा., संघ हित चिंतक समिति पूज्य आचार्य देवेश श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. आदि अर्ध शताधिक अलग श्रमणी भगवंतों की पावन निश्रा में वर्धमानपुरा में भव्य प्रवेश हुआ। पूज्यश्री का वर्धमानपुरा, पूना में प्रथम चार्तुमास हो रहा है। इससे पूर्व यहां हमेशा साध्वीजी के ही चार्तुमास होते रहे है। आचार्यश्री का प्रथम बार चार्तुमास हो रहा है। अतः संघ में खूब ही उमंग, उत्साह और आनंद का वातावरण है। पूज्यश्री प्रतिदिन 9 से 10 बजे प्रवचन करते है इसमें श्रोता उमड़ते है। आप क्लब हाऊस में प्रवचन कर रहे है। क्लब हाऊस का विशाल हॉल और परिसर श्रोताओं से उभरा जाता है। प्रति रविवार को जाहिर प्रवचन हो रहे है जिसमें वर्धमानपुरा के अलावा गंगाधाम सोसायटी, गगन विहार, गगन गैलेक्सी, शंकर महाराज सोसायटी आदि से सैकड़ों की संख्या में प्रवचन लाभ ले रहे है। पूज्यश्री के सानिध्य में प्रति रविवार को दोपहर 3 से 5 बजे संस्कार शिक्षण शिविर आयोजित हो रहे है जिसमें 9 वर्ष से 20 वर्ष के लड़के-लड़कियां भाग ले रहे है जिसे श्रीचैत्य रत्नसागरजी, श्रीज्ञानेश रत्नसागरजी, श्रीपवित्ररत्नसागरजी म. एवं श्रीगोयम रत्न सागरजी म. संचालित कर रहे है जिसमें 300 बालक-बालिकाएं भाग ले रहे है।

श्रावण वदी अमावस्या दिनांक 17-7-2023 को आगमोद्धारक ध्यानास्थ स्वर्गस्थ पूज्याचार्य श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा का 149 वां जन्म दिन भी धूमधाम से बनाया गया जिसमें वर्धमानपुरा सोसायटी की बहनों में आचार्य पदवी की 36 गहुंलिया बनाई थी। गुणानुवाद सभा को पूज्याचार्य के अलावा भी अन्य मुनि भगवंतों ने भी संबोधित की। प्रभु से संघ पूजन हुआ एवं घेवर की प्रभावना भी दी गई।

बहनों को आराधना कराने के लिए साध्वीश्री दिव्ययशा श्रीजी म.सा. ठाणा-3 पधारे है। प्रतिदिन बहनों का प्रवचन दोपहर 3 से 4 बजे को होता है रात्रि को प्रतिक्रमण करने के लिये करीब 250 से 300 बहनें प्रतिदिन आ रही है। पर्युषण जैसा माहौल है।

सुवासरा में अरिहंत वंदनावली हुई

सुवासरा-यहां चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित साध्वीवर्या श्री सिद्धांतज्योति श्रीजी म.सा.आदि ठाणा-5 की निश्रा में 17 जुलाई को पूज्यपाद सागरजी महाराजा के 149 वें जन्मदिन पर भव्य गुणानुवाद सभा के बाद दिनांक 13 जुलाई को श्री अरिहंत वंदनावली एवं आचार्य पद के एकासणा का आयोजन किया गया। नव-सूर्य सिद्धांत आराधना भवन में आयोजन हुआ।

पूना में गुरु भगवंतों की मंगल अमृत निश्रा

संघास्थविर संघानायक, सुविशाल गच्छाधिपति सर्वाधिक वय-संयम-श्रुत-अनुभवपर्यायी युग पुरुष प. पू.आ.भ.श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा। ✻ जिनशासन के सर्वोच्च संयम पर्यायी महापुरुषों की श्रृंखला में पंचम क्रम पर विराज मान पू.आ.भ.श्री नंदिवर्धन सागर सूरीश्वरजी म.सा.। ✻ वचनसिद्ध, सौजन्यमूर्ति, प्रकांड विद्वान पू.आ. भ.श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी म. सा.।✻प्रचंड पुण्य निधान, सकल संघ हितचिंतक संघैक्यभावितमति पू. आ.भ.श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. । ✻ 325 से अधिक पुस्तकों के विख्यात लेखक पू.आ.भ.श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. । ✻ 100+100+66 वीं ओली के महा तपस्वी पू.आ.भ.श्री चंद्ररत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा. । ✻ प्रभावक एवं प्रबुद्ध प्रवचनकार, संस्कार यज्ञ प्रणेता पू.आ.भ.श्री मुक्ति सागर सूरीश्वरजी म.सा. ।✻ समर्पण गुणनिधि, सर्वकार्य कुशल पू.नूतन आ. भ.श्री अचलमुक्ति सागरसूरीजी म.सा. । ✻ शानदार प्रवचनकार, गुरुचरण सेवी पू.पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा.। ✻ वर्धमान तप की 99 वीं ओली के आराधक पू.मुनिवर श्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. । ✻ अनेक ग्रंथों के तात्विक अनुवादक पू.मुनिवर श्री जयचंद्र सागरजी महाराज । ✻ युवा प्रवचन कार पू. मुनिवर श्री अर्हरत्नसागरजी महाराज आदि विशाल मुनिवृंद।

वचनसिद्ध आचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी की निश्रा में लेकटाउन में वंदे शासन बाल शिविर

✻ तपस्वी मुनि श्री पद्मकीर्तिसागरजी को 99 वीं ओली चही रही है।

पूना- आराधना भवन लेक टाउन सिटी में चातुर्मास के लिये विराजित सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्य पूज्यपाद वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा एवं आयंबिल तपाराधक मुनिराज श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में बच्चों के लिये बाल शिविर का आयोजन रविवार की दिनांक 23 जुलाई को आयोजित किया गया। शिविर में ध्यान, तत्वबोध धर्मकथा, स्तुति, स्तवन, गेम आदि के माध्यम से बच्चों को जैन धर्म से अवगत कराया गया। बड़ी संख्या में बच्चों ने शिविर में भाग लिया। पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. क100 वी ओली जी का पारणा मेरु महोत्सव पूना में होगा।

नवसारी में तप का इतिहास रचा गया

नवसारी- पूज्यपाद आचार्यदेवेश श्री रत्नचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. तथा आचार्य देवेश श्री विजय उदयरत्न सूरीश्वरजी म.सा., साध्वीश्री गुणयशा श्रीजी म.सा.आदि साधु-साध्वीजी की निश्रा में यह मासक्षमण तप का इतिहास का सर्जन हुआ। 30 घर के संघ में 1500 लोगों ने मासक्षमण की भावना से पच्चखाण के लिये शुरु में 300 धार्मिष्ठों ने 16 उपवास के 75 पच्चखाण, 9 उपवास के 30 तथा उपवास के 150 से अधिक धार्मिष्ठों ने पच्चखाण लेकर जैन पर्व का ढंका बजा दिया है।

गणि महाराज का चातुर्मास में धर्म प्रभावना के शंखनाद से धर्म जाग्रति कर रहा है

भवानीमंडी- पूज्यपाद गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागर जी म.सा.गणिवर्य श्री अक्षतरत्नसागर जी म.सा.आदि ठाणा श्रमण-श्रमणी वृंद के भवानीमंडी में चातुर्मास प्रवेश से ही धर्म जाग्रति का कारण बन गया है। आपके आध्यात्मिक का अनुभव धार्मिष्ठ कर रहे है। रविवाररीय प्रवचन के अंतर्गत ''मैं मजे में हूं'' विषय पर प्रवचन हुए। 17 जुलाई को पूज्यपाद सागरजी महाराज की जन्म जयंति पर गुणानुवाद सभा यादगार बन गई। रात्री में युवाओं के लिये धर्म परिचर्चा का आयोजन नियमित हो रहा है। 18 जुलाई को पूज्यश्री की महामांगलिक का आयोजन किया गया।

✻ ''आत्म भावना भावतां जीव लहे केवलज्ञान रे।'' आत्मभाव की भावना करते करते जीव केवलज्ञान प्राप्त करता है।

बंधु त्रिपुटी का चार्तुमास प्रवचन के द्वारा यादगार बन रहा है

पालीताना- जैनाचार्य अपूर्व मंगल रत्नसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल के बंधु त्रिपुटी मुनि प्रवर श्री आगम प्रश्म- व्रजरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास नवरत्नधाम पालीताना में चल रहा है चातुमार्सिक आराधना में 300 आराधक है। प्रवेश 1 जुलाई को हुआ। यहां विभिन्न तपाराधना चल रही है। प्रवचन में अनेक रसिकों का आगमन भी हो रहा है। पूज्य जैनाचार्य श्री वीररत्नसूरीजी म.सा. को मुनिपुंग श्री वज्ररत्नसागरजी ने अपने शब्दों से भावभरा स्मरण करते हुए आदरांजलि दी। दिनांक 17 जुलाई को पूज्यपाद श्री सागरजी महाराजा को स्मरण करते हुए गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया।

श्री अरिहंत परमात्मा का गुणकीर्तन हुआ

मुंबई-पूज्य आचार्य भगवंत युवा हृदय सम्राट श्री विश्वरत्नसागरजी महाराजा के युवा सुशिष्य मुनिश्री कीर्तिरत्नसागरजी एवं मुनि श्री सिध्यांतरत्नसागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में श्री अरिहंत वासुपूज्य स्वामी जैन संघ लोढ़ा वर्ड टॉवर --- पोल वेस्ट में दिनांक 9 जुलाई को अरिहंत परमात्मा के गुणकीर्तिन का आयोजन तथा पंच कल्याणक की उजवणी की गई। दिनांक 17 जुलाई को पूज्यपाद श्री सागरजी महाराज की जन्म जयंति पर गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया।

बोरिवली में जैनाचार्य श्री पूर्णचंद्रसूरीजी ने धर्माराधना का बिगुल बजाया

मुंबई- पूज्यपाद कलापूर्णसूरीजी महाराजा के सुशिष्य पूज्यपाद जैनाचार्य श्री पूर्णचंद्रसूरीश्वरजी महाराजा आदि साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में चार्तुमास के अंतर्गत पूरे पांच माह के लिये धर्माराधना का साम्राज स्थापित कर दिया गया। श्री आदिश्वर जैन देरासर परिसर में चल रहे चार्तुमास में अनेक विध्ा आयोजन हो रहे है। जिनशासन का केशरिया रंग, अंतर निरीक्षण, मातृपित् वंदन, व्यक्तित्व विकास, हर परिस्थिति में खुश रहने की कला तथा नमस्कार महामंत्र की महिमा के साथ श्री नेमनाथ प्रभु के जन्म दीक्षा कल्याणक महोत्सव, सामुहिक अट्ठम तप एवं सिद्धि तप की पूर्णाहुति दिनांक 27 अगस्त को होगी। आगे होनेवाले धर्मायोजनों की रुपरेखा भी बन गई है।

सांवेर में 13 साल बाद चार्तुमास

सांवेर- 13 साल के अंतराल के बाद एक बार फिर चार्तुमास में जैन मंदिर में साध्वीवर्या पद्मलता श्रीजी साध्वीवगण पूर्णलता श्रीजी, तत्वरुचि श्रीजी, दौलतलता श्रीजी और आज्ञारुचि श्रीजी आदि ठाणा पांच के साथ विराजी हुई है। साध्वी पद्मलता श्रीजी की प्रेरणा और पावन निश्रा में स्थानीय श्रावक-श्राविकाएं उत्साहित भाव से भाग्य एकासना, तेला, वेला, आयम्बिल की लड़ी, अट्ठम तप की लड़ी, पंच परमेष्ठी के एकासने जिसमें परमेष्ठी की तपस्या कर रहे है।

तपस्वियों का बहुमानः- इस चार्तुमास में सांवेर नगर में 11 उपवास की पहली तपस्या पूर्ण करने वाली शालू का श्रीसंघ की ओर से बहुमान किया गया।

✻ अरे नामू, तेरी धोती में खून कैसे लग रहा है ? यह तो माँ, मैंने कुल्हाड़ी से पैर को छीलकर देखा था। माँ ने धोती उठाकर देखा, पैर में एक जगह की चमड़ी मांसरहित छील दी गई है। नामदेव तो ऐसे चल रहा था, मानो उसको कुछ हुआ ही नहीं। माँ ने फिर पूछा- ''नामू, तू बड़ा मूर्ख है। कोई अपने पैर पर भी कल्हाड़ी चलाया करता है! पैर टूट जाए तो लंगड़ा होना पड़े। घाव पक जाए या सड़ जाए तो पैर कटवाने की नौबत आए।'' ''तब पेड़ को भी कुल्हाड़ी से चोट लगनी चाहिए। उस दिन तेरे कहने से मैं पलाश के पेड़ पर कुल्हाड़ी चलाकर उसकी छाल उतार लाया था। मेरे मन में आया कि अपने पैर की छाल भी उतारकर देखूं, मुझे कैसा लगता है। पलाश के पेड़ को कुछ हुआ होगा, यही जानने के लिए मैंने ऐसा किया है माँ!''

नामदेव की माँ को याद आया कि मैंने नामू को उस दिन काढ़े के लिए पलाश की छाल लाने भेजा था। माँ रो पड़ी। उसने कहा- ''बेटा नामू, मालूम होता है, तू महान साधु होगा। पेड़ों में और दूसरे जीव-जंतुओं में भी मनुष्य के ही जैसा जीव है। अपनी चोट लगने पर दुःख होता है, वैसा ही उनको भी होता है।'' बड़ा होने पर यही नामू प्रसिद्ध भक्त नामदेव हुए।

साधना की सरगम

पूना- श्री गोदीवाल ओसवाल जैन संघ में विराजित आचार्य देवेश श्री राजरत्नसूरीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में साधना की सरगम के अंतर्गत चातुमार्सिक नियमावली बुक दिये। नियमों का पालन करने के लिए प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। नियम चार्तुमास के पांच माह में पूर्ण करने है। विजेता को पुरस्कार राशि के साथ बहुमान किया जायेगा।

रविवारीय बाल शिविर

मुंबई-श्री राजस्थान जैन संघ मलाड़ (वेस्ट) में चार्तुमास हेतु विराजित मुनिप्रवर श्री उदयरत्नसागरजी म.सा. मुनिश्री उत्तमरत्नसागरजी म.सा. एवं साध्वी श्री सुरेखाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में यहां रविवारीय बाल शिविर का आयोजन दिनांक 16 जुलाई को किया गया। शिविर में गेम, कहानियों के माध्यम से जैन संस्कार से बच्चों को अवगत कराया गया।

अगाशी तीर्थ में उपधान तप

अगाशी- परम परमात्मा श्री मुनिसुव्रतस्वामी प्रभु से महिमा मंडित श्री अगाशी तीर्थ विरार (वेस्ट) में उपधान तप होने जा रहा है। राजग्रही तीर्थ प्रेरक आचार्य देवेश श्री अक्षयचन्द्र सागरसूरीजी म.सा., पूज्य प्रर्वतक श्री नयशेखरसागरजी म.सा. एवं साध्वी-वर्या श्री भव्यज्ञाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में प्रथम मुर्हूत दिनांक 20 दिसंबर तथा द्वितीय मुर्हूत 21 दिसंबर से उपधान का शुभारंभ होगा। उपधान तप का मालारोपण दिनांक 8 फरवरी 2024 को होगा।

बालाघाट में उग्रतपस्वी श्री विरागमुनिजी का पारणा

बालाघाट- भारत की भूमि महान संत महात्माओं की भूमि मानी जाती है, यहां आदिकाल से अनेक संत महात्मा एवं दीर्घ तपस्वी हुए जिन्होंने अपनी तपश्चर्या से पवित्र भारत भूमि को धन्य कर दिया। जैन धर्म के खरतगच्छ के इतिहास में 1000 साल बाद ऐसा प्रसंग आया कि 46 वर्षीय विरागमुनि जिन्होंने एक पर दशक पूर्व पत्नी, पुत्र तथा पुत्री सहित दीक्षा लेकर वैराग्य का पथ अंगीकार किया। उन्होंने वर्तमान में 15 जनवरी 2023 को महाराष्ट्र के चंद्रपुर जिले में आहार का त्याग कर दिया था आधा लीटर गर्म जल पर वे 171 दिनों के कठोर तप पर रहते हुए बालाघाट तक पहुंचने 1000 कि.मी. की विहार यात्रा की और गुरु भगवंतों प.पू. श्री विनयकुशल मुनि प.पू. नंदीषेण मुनिजी म.सा. एवं प.पू.भव्यमुनिजी म.सा. के साथ दिव्य तपस्वी प.पू.विरागमुनि म.सा. बालाघाटपहुंचे आगमन के सातवें दिन 171 उपवास के बाद उनका पारणा हुआ। आप पूर्णतः स्वस्थ है अभूतपूर्व दीर्घा तपस्या के पारणे के लाभार्थी बालाघाट के श्री अजय लुनिया व पवन बाफना परिवार बना जिन्होंने गुरुदेव के अभिग्रह व्रत को पूर्ण करने के लिये आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का संकल्प लिया।

लंदन में प्रतिष्ठा महोत्सव

मुंबई- पूज्य आचार्य भगवंत श्री नयप्रभसागरसूरीजी म.सा. के वरद हस्ते अंजनशलाका की गई। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा का आयोजन लंदन के जैन सेन्टर में स्थित जिनालय में किया जायेगा। दिनांक 23 से 28 अगस्त तक प्रतिष्ठा का आयोजन होगा। प्रतिष्ठा 27 अगस्त को होगी। लंदन में निर्मित जैन सेन्टर में भोजनशाला, उपाश्रय, पठन-पाठन आदि की सुन्दर व्यवस्था की गई है, यह प्रति वर्ष महापर्व पर्युषण, ओली आराधना जैसे सभी आयोजन आयोजित होंगे।

✻ अनंत अव्याबाध सुख का एक अनन्य उपाय स्वरुपस्थ होना ही है। यही हितकारी उपाय ज्ञाना पुरुष ने देखा है।

पालीताना में जैनाचार्यश्री जिनोत्तमसूरीजी की निश्रा में उपधान-अंजन-प्रतिष्ठा संघ के आयोजन होंगे

पालीताना- पूज्य आचार्य श्री सुशीलसूरीजी कृपापात्र जैनाचार्य श्री जिनोत्तमसूरीजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में इस वर्ष चातुर्मास आराधना के साथ उपधान-तप-अंजन प्रतिष्ठा-12 गांव का संघ अयोध्यापुरम् से पालीताना संघ आदि आयोजन होने जा रहे है। अन्य नगरों में प्रतिष्ठा होने के साथ चैत्र माह की नवपद ओली आराधना श्री नाकोड़ा महातीर्थ में होगी। चातुर्मास प्रवेश 29 जून को श्री पार्श्व भैरवधाम, सुशील विहार, हस्तगिरी, तलेटीरोड़, पालीताना (भावनगर)-264270 (गुज.) में हुवा।

✻ मुमुक्षु जीव को अर्थात् विचारवान जीव को इस संसार में अज्ञान के सिवाय और कोई भय नहीं है। एक अज्ञान की निवृत्ति की इच्छा रखना, इस एक इच्छा के सिवाय विचारवान जीव को अन्य इच्छा न हो।

गणिवर्य आनंदसागरजी के जिन शासनम् चार्तुमास से इन्दौर धर्ममय बना

विभिन्न तप पूजा के साथ आराधना नियमवालों का बहुमान हुआ

इन्दौर-पूज्य गणिवर्य श्री आनंद सागरजी महाराज, मुनि श्री ऋषभचंद्र सागरजी म.सा. आदि ठाणा-8 के अमृत सानिध्य में इन्दौर में धर्म की बहार आई हुई है। 25 जून को रेसकोर्स श्री जैन संघ में प्रवेश के पूर्व ही आपश्री की निश्रा में यह चार्तुमास यादगार बनेगा इसकी स्क्रीप्ट विभिन्न आयोजन के माध्यम से लिखी जा चुकी थी। निगोद निवारण तप का आरंभ 10 जुलाई को हुआ। चार्तुमास में 30 करोड़ ॐ ह्रीं नमो चास्तिष्क षट का जाप चल रहा है। 1 लाख सामुहिक सामायिक का आयोजन के साथ 17 जुलाई को पूज्यपाद श्री सागरजी महाराजा की जन्म जयंति एक यादगार कार्यक्रम रहा। दिनांक 30 जुलाई को 9 से 21 वर्ष के बच्चों युवाओं का जिन शासन के नियम, आराधना साधना तप-पूजा आदि के द्वारा जीवन को जैन संस्कारों से सिचिंत करने के लिये बहुमान किया गया। साध्वी सौम्ययशा श्रीजी आदि ठाणा-13 का चातुर्मास भी यहां चल रहा है। गणिवर्यश्री की निश्रा में दिनांक 23 जुलाई को शाश्वत श्री नवकार महामंत्र का अनुष्ठान किया गया।

गच्छाधिपतिश्री की निश्रा में उपधान तथा श्री शंखेश्वर तीर्थ का छ:रिपालित यात्रा

गांधीनगर- त्याग-दीप प्रवर समिति के कार्यवाहक पू. गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री अभयदेवसागर सूरीश्वरजी महाराज आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों का चार्तुमास चल रहा है। विगत दिनों 40 के लगभग साधु-साध्वी भगवंतों को 50 दिवसीय जोग की भव्य शुरुवात आचार्यदेव श्री मोक्षरत्न सूरीश्वरजी ने करवाई। इस अवसर पर सकल संघ की उपस्थिति में साधु-साध्वी भगवंतों को वधारणा किया गया। आपश्री की निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की संयम साधना करानेवाली आराधना, उपधान का आयोजन प्रथम मुहूर्त दिनांक 25 अक्टूबर तथा द्वितीय मुहूर्त दिनांक 27 अक्टूबर से होने जा रहा है। उपधान तप का मालारोपण का भव्य आयोजन दिनांक 14 दिसंबर को होगा। अभय अमृत महोत्सव समिति के द्वारा आयोजित यह तपाराधना सेक्टर-22 गांधीनगर में होगी। उपधान के बाद आपश्री की निश्रा में राघनपुर से श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ का छ:रिपालित यात्रा संघ का आयोजन दिनांक 29 दिसंबर से होगा। संघ माल दिनांक 3 जनवरी 2024 को होगी।

उमरा जैन संघ में आचार्यश्री रश्मिरत्न सूरिश्वरजी महाराजा आदि-72 साधु-साध्वीजी भगवंतों का चार्तुमास

सूरत- श्री उमरा जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ में पूज्यपाद दीक्षा-दानेश्वरी आ. श्री गुणरत्न सूरीश्वरजी म.सा. के आजीवन चरणोपासक आचार्य श्री रश्मिरत्नसूरीश्वरजी महाराज, पंन्यास हर्ष-जित-सौम्यांग दीक्षितरत्न विजयजी म.सा., गणिवर्य गौतम-सुधर्म-यश-त्रिभुवनरत्न विजयजी आदि 48 साधु भगवंतों एवं प्रवर्तिनी साध्वी श्री पुण्यरेखा श्रीजी म.सा. के शिष्या विदुषी सा.श्री मनीष रेखा श्रीजी. सा.श्री मनोज्ञरेखा श्रीजी और सा. श्री विशुद्धरेखाश्रीजी म. सा. आदि 28 साध्वीजी भगवंतों का ता. 21 जून को भव्य चार्तुमास प्रवेश सम्पन्न हुआ ।पूज्यश्री ने चार्तुमास अपने गुरुदेव को समर्पित करते हुए बताया कि आगामी 22 फरवरी 2024 को पूज्य गुरुदेव का सूरत-वेसु में स्वप्न तीर्थ 600 से अधिक साधु-साध्वीजी भगवंतों को शाता समाधि देता हुआ स्थिरवास वैयावच्च संकुल दीक्षा-दानेश्वरी संयमतीर्थ श्री महाविदेहधाम की प्रतिष्ठा बड़े पैमाने में होनेवाली है। उस निमित्त समस्त सूरत संघ में तप-जप-खप की विशिष्ट साधना करवाई जायेगी । अषाढ़ वद-2 बुधवार के मंगल मुहूर्त में श्री महाविदेहधाम में देव-गुरु की प्रतिष्ठा हेतु आचार्य श्रीजी की निश्रा में प्रतिष्ठा कुंभ भराया, कुंभ में अनेक पू.गच्छाधिपति भगवंतों एवं 100 से अधिक आचार्य भगवंतों का वासक्षेप भरा गया है। 17 जुलाई 2024 को पू. गुरुदेव श्री गुणरत्न सूरीश्वरजी का तृतीय स्वर्गारोहण तिथि निमित्त सूरत में 1500 भात-पानी के शुद्ध आयंबिल व जगह-जगह गुणानुवाद हुए।

आगामी चार्तुमास की जय बोलाई गई

मुंबई- यहां के विलेपार्ले श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ की आग्रहभरी विनंती पर पूज्य आचार्य देवेश श्री अक्षयबोधि सूरीश्वरजी तथा आचार्यदेव श्री महाबोधि सूरीश्वरजी महाराज का आगामी विक्रम संवत् 2080 ईस्वी सन् 2024 का चार्तुमास विलेपार्ले श्री संघ में करेंगे। संघ में चार्तुमास की घोषणा से हर्ष छा गया।

शक्रस्तव और पुनिया श्रावक सामायिक हुई

जोधपुर-पूज्य साध्वी श्री चन्द्र-रत्नाश्रीजी म.सा. और बाल साध्वी श्री ध्वनिरत्नाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में 9 जुलाई को बाल साध्वीश्री के जन्म दिन पर शक्रस्तव महाभिषेक का आयोजन किया गया। दिनांक 16 जुलाई को पुनिया श्रावक की सामायिक का आयोजन नाट्य रुपातंर के साथ किया गया साथ ही दीपक के एकासणा भी किये गये। पूज्य साध्वी श्रीजी का चार्तुमास श्री नंदन जैन श्री संघ में हो रहा है।

18 पाप स्थानक संवेदना आयोजन

मुंबई- श्री बोरिवर्ली जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ में पूज्यपाद आचार्य देव श्री पूर्णचंद्रसूरीजी महाराजा आदि ठाणा-7 की निश्रा में दिनांक 23 जुलाई को 18 पाप स्थानक संवेदना का आयोजन किया गया। संसार में उत्पन्न होनेवाले अनेक पाप का सर्जन दोनों कैसे मानव करता है और उनका विसर्जन कैसे हो सकता है इस बारे में बतलाया गया है। 18 पाप स्थानक को नाट्य मंचन से अभिनित किया गया।

हमारे तीज-त्यौहार

1- अधिक श्रावण वदी-4	शनिवार	5-8-2023	शुक्र अस्त पश्चिम में
2- अधिक श्रावण वदी-5	रविवार	6-8-2023	डेढ़ महिने का घर
3- अधिक श्रावण वदी-10(प्रथम)	गुरुवार	10-8-2023	रोहिणी
4- अधिक श्रावण वदी-14	मंगलवार	15-8-2023	भारत का स्वतंत्राता दिवस
5- अधिक श्रावण सुदी-1	गुरुवार	17-8-2023	शुक्र उदय-पूर्व में
6- अधिक श्रावण सुदी-3	शनिवार	19-8-2023	श्री सीमंधर स्वामी आदि 20 विहरमान प्रभु का निर्वाण कल्याणक
7- अधिक श्रावण सुदी-5	सोमवार	21-8-2023	श्री नेमीनाथ प्रभु का जन्म कल्याणक- महिने का घर
8- अधिक श्रावण सुदी-6	मंगलवार	22-8-2023	श्री नेमीनाथ प्रभु का निर्वाण कल्याणक
9- अधिक श्रावण सुदी-8	गुरुवार	24-8-2023	श्री पार्श्वनाथ प्रभु का निर्वाण कल्याणक

पंचक :- **आरम्भः-**अधिक श्रावण वदी-2, गुरुवार, दिनांक 3-8-2023, समय-23.27 बजे से
समाप्तः-अधिक श्रावण वदी-7, सोमवार, दिनांक 7-8-2023, समय-01.44 बजे तक
आरम्भः-अधिक श्रावण वदी-14, बुधवार, दिनांक 30-8-2023, समय-10.20 बजे से

पुष्प नक्षत्र :- **आरम्भः-**अधिक श्रावण वदी-13, सोमवार, दिनांक 14-8-2023, समय-11.07 बजे से
समाप्तः- अधिक श्रावण वदी-14, मंगलवार, दिनांक 15-8-2023, समय-13.59 बजे तक

दूध-दही-घी-छाछ

दूध- मैं महान हूं। कहा है-'' अमृतं क्षीर-भोजनम्''। **दही-** जाने दे अब, मधुर पदार्थो में मै प्रथम हूं। ''दधि मधुरम्'' **घी-** आप दोनों चुप रहें। सार तो मैं ही हूं। ''घृतमायुः'' **छास-** आप सब मेरी महिमा भूल गये ? कहां है- ''तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्''**आदमी-** आप सब व्यक्तिगत महिमा गान छोड़ें और सब साथ मिलकर बोलें- ''हम गौरस है।'' .

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

वर्ष 28 | निज श्रावण | अगस्त-2023 | अंक 8 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-
डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

बुक पोस्ट

प्रति,
श्रीमान् ....
....
....

स्टाम्प टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897